लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–18

जियोर्जिया की लोक कथाऐं

1894

दूसरा भाग

अंग्रेजी अनुवाद : मरजोरी वारड्रौप

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-18
Book Title: Georgia Ki Lok Kathayen-2 (Georgian Folk Tales-2)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Georgia
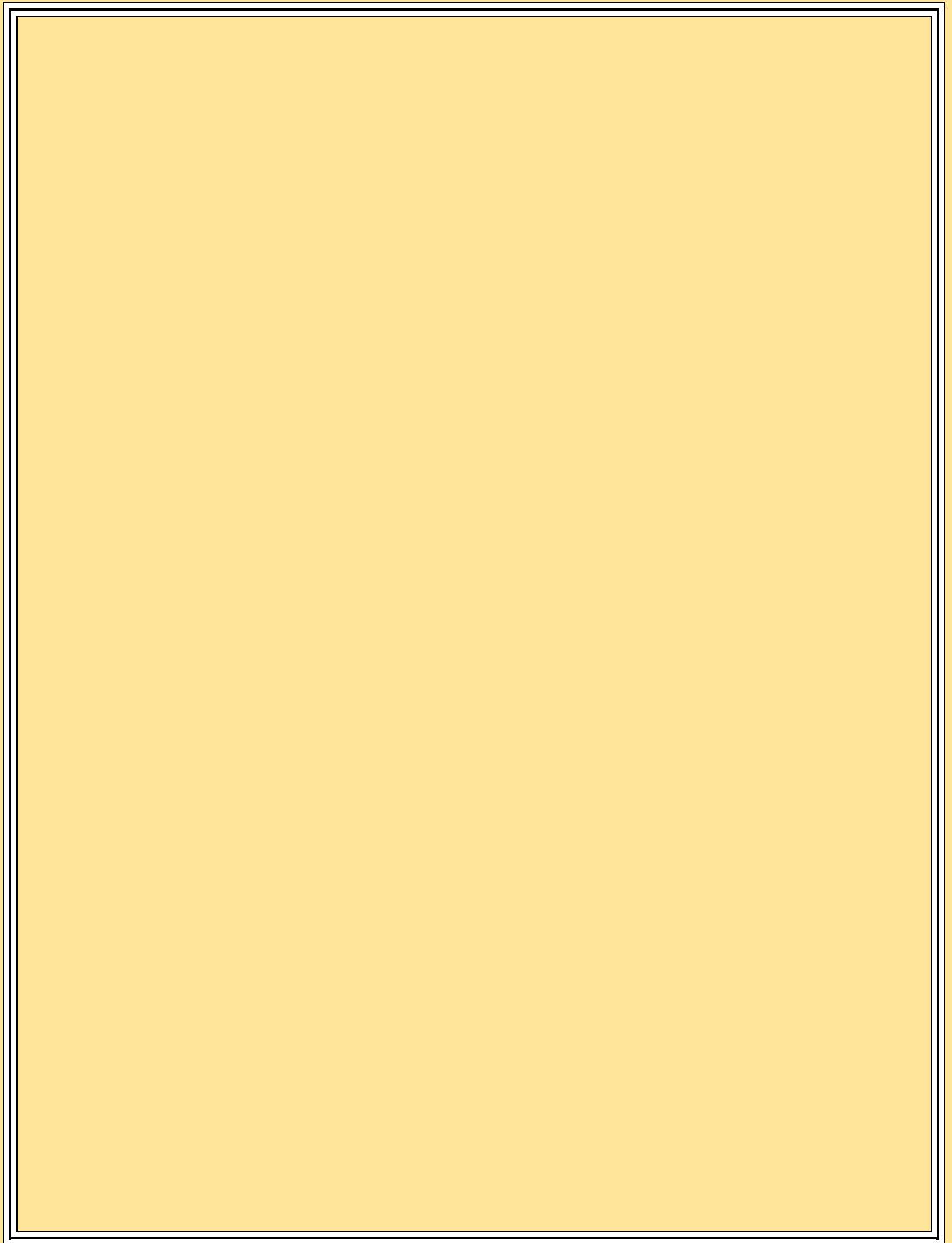
विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

जियोर्जिया की लोक कथाऐं–2

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। एशिया महाद्वीप संसार का सबसे बड़ा महाद्वीप है – क्षेत्रफल में भी और जनसंख्या में भी। क्षेत्रफल में इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाता है रूस देश और जनसंख्या में इसको सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते हैं चीन और भारत। इसमें संसार के **40** प्रतिशत से भी अधिक लोग रहते हैं।

इस महाद्वीप में कुल मिला कर **48** से ज़्यादा देश है पर इसके इतने सारे देशों में भी काफी देशों की लोक कथाऐं मिल जाती हैं जैसे रूस जापान चीन भारत अरब आदि। जियोर्जिया भी इनमें से एक देश ऐसा है जिसकी लोक कथाऐं सबसे पहले लिखी हुई लोक कथाओं में से आती हैं।

1900 से पहले की प्रकाशित लोक कथाओं की पुस्तकों में से एक पुस्तक यहाँ के जियोर्जिया देश से भी आती है जो **1894** में प्रकशित हुई थी।[2] हालाँकि यह पुस्तक **1894** में प्रकाशित हुई जरूर थी पर इस संग्रह में इससे भी पुरानी लिखी हुई कहानियों का संग्रह है। सो अब प्रस्तुत है तुम सबके हाथों में यह पुस्तक "जियोर्जिया की लोक कथाऐं–**1**"।[3] इस पुस्तक में यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं की एक पुरानी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पुस्तक में कुल **38** लोक कथाऐं दी गयी हैं जिन्हें उन्होंने तीन हिस्सों में बाँटा है – **16** लोक कथाऐं जियोर्जिया की, **8** लोक कथाऐं मिन्ग्रेलियन की और **14** लोक कथाऐं गुरियन की।[4]

लोक कथाऐं अधिक होने की वजह से इसे दो भागों में बाँट दिया गया। इसके पहले भाग में केवल जियोर्जियन **16** लोक कथाऐं दी गयी थीं। इस भाग में वहाँ की बची हुई **22** कथाऐं दी जा रही हैं। ये वहाँ की मिन्ग्रेलियन और गुरियन लोगों की कथाऐं हैं।

मरजोरी ने ये लोक कथाऐं तीन स्रोतों से इकट्ठी की हैं।[5] उन्होंने ये लोक कथाऐं इन स्रोतों से इकट्ठा कर के उनका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। ऐसा लगता है कि इन कथाओं का अनुवाद **27** साल बाद किया गया क्योंकि इस पस्तक में सबसे पुरानी प्रकाशित लोक कथाऐं **1867** की हैं। आशा है कि इतनी पुरानी लोक कथाऐं तुम सबको हिन्दी में पढ़ कर अच्छा लगेगा और यूरोप की वे लोक कथाऐं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से तुम लोग नहीं पढ़ सकते वे सब अब तुम हिन्दी में आसानी से पढ़ सकोगे।

---

[2] Taken from the book "Georgian Folk Tales" Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt in the Strand. 1894. 38 folktales. This book in English is available at : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n7/mode/2up **and** http://www.sacred-texts.com/asia/geft/index.htm
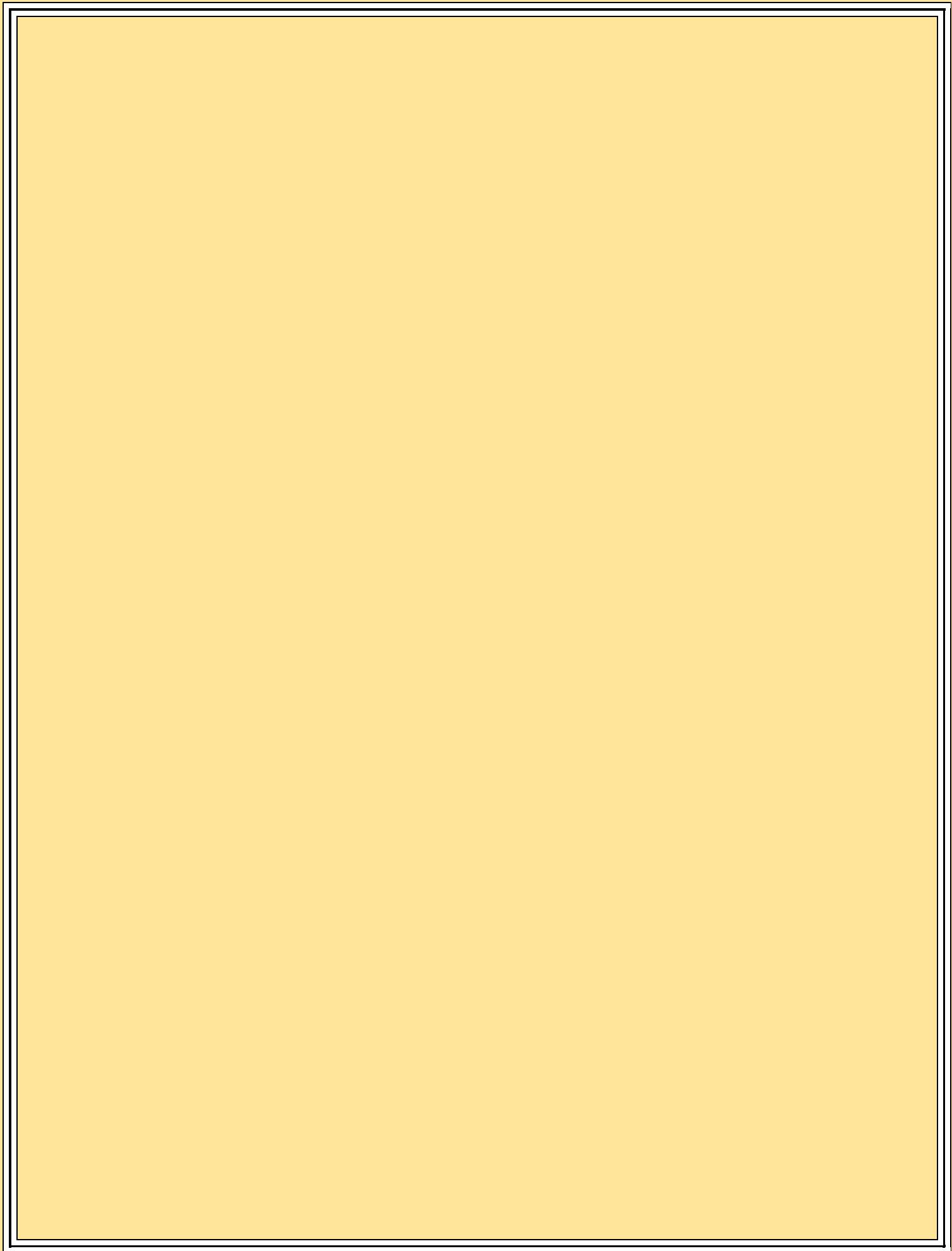
[3] Georgia Ki Lok Kathayen-1 – contains folktales from Georgia country of Europe

[4] Georgian Tales (16 Tales), Mingrelian Tales (8 Tales) and Gurian Tales (14 Tales).

[5] Part I. is a collection edited by Mr. Aghniashvili, and published in Tiflis, in 1891, by the Georgian Folklore Society, under the title, *Khalkhuri Zghaprebi*.
Part II. comprises the Mingrelian stories in Professor A. A. Tsagareli's *Mingrelskie Etyudy, S. Pbg.*, 1880 (in Mingrelian and Russian). They were collected by him during 1867-1869.
Part III. is an anonymous collection, entitled *Gruzinskiya Narodnyya Skazki. Sobr. Bebur B.* S. Pbg.*, 1884.

मिन्ग्रैलियन लोक कथाऐं

1 तीन नियम[6]

एक बार की बात है कि या तो था, और था, और था, या फिर बिल्कुल ही नहीं था।[7] एक देश के एक क्षेत्र के एक गॉव में एक अनाथ रहता था। वह इतना गरीब था इतना गरीब था कि आसमान और धरती के बीच में कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो कहने के लिये उसकी अपनी हो।

इस तरह रहते हुए आज में कल में परसों में, इस हफ्ते में अगले हफ्ते में, इस महीने में अगले महीने में वह बहुत दुखी हो गया और सोचता रहा। सोचते सोचते उसने सोचा कि "अब मुझे अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। यह सब बहुत हो गया।"

सो अगले दिन वह सुबह सवेरे जल्दी उठा भगवान का नाम लिया अपने दॉये हाथ को घूमा और अपने घर से चल दिया।[8]

वह चलता गया, वह चलता गया, वह चलता गया। आसमान के उस पार, जमीन पर, जंगल में हो कर, खेतों में हो कर, मैदानों में हो कर, पहाड़ों के ऊपर हो कर। बस वह चलता ही गया चलता ही गया जितनी दूर वह जा सकता था।

---

[6] Three Precepts (Tale No 1 – Mingrelian Tales)

[7] The Mingrelian Tales usually begin thus ; sometimes the formula used is : ' there was, there was, there was, and nothing there was, but nevertheless there was.'

[8] When a Mingrelian undertakes a journey he turns to his right several times before his door and then sets out. This is held to be a favorable omen.

रास्ते में उसको एक बहुत ही शानदार आदमी उसकी तरफ आता मिला तो उसने उसकी तरफ जल्दी जल्दी कदम बढ़ाये। जब दोनों मिले तो अजनबी ने कहा — "तुम्हारी विजय हो ओ भले नौजवान।[9] तुम किधर जा रहे हो?"

नौजवान बोला — "मालिक भगवान आपको भी विजयी करें। मैं अपनी रोजी रोटी का कोई जरिया ढूँढने जाता हूँ।"

अजनबी बोला — "तुम तीन साल तक मेरी नौकरी कर लो तो मैं तुमको तीन चीज़ें ऐसी सिखाऊँगा जो बाद में तुम्हारे काम आयेंगी।"

नौजवान राजी हो गया और उसके साथ चला गया। एक साल की नौकरी के बाद उस चतुर आदमी ने कहा — "जो कुछ तुम अपने कम्पाउन्ड के बाहर देखते हो उसे कम्पाउन्ड के अन्दर डाल दो।"

जब दूसरा साल गुजर गया तो उसने फिर से उस नौजवान को बुलाया और उससे कहा — "किसी को कुछ भी उधार मत दो जब तक कि तुमको उसको उधार देना ही न पड़ जाये।"

तीसरा साल भी गुजरने को आया। उस साल के गुजर जाने के बाद नौजवान जाने वाला था। अब उसने नौजवान से कहा — "कभी अपना कोई भेद किसी स्त्री से मत कहो।"

---

[9] A usual salutation among Georgians

उसके बाद उसने उस नौजवान को विदा कहा आशीर्वाद दिया और उसे घर वापस भेज दिया।

नौजवान वहाँ से चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा। वह दिन भर चला वह रात भर चला। वह जमीन पर चला वह पानी पर चला। जब वह घर पहुँचा तो उसने वहाँ पर ठीक से रहना शुरू किया।

उसने अपने मकान के चारों तरफ एक बाड़ लगायी जैसा कि उससे करने को कहा गया था। फिर उसने कम्पाउन्ड के बाहर जो कुछ पड़ा था वह सब उसने कम्पाउन्ड के अन्दर फेंक दिया।

एक सुबह जब वह बाहर गया तो वहाँ उसको एक लाल साँप दिखायी दे गया। उसको अपने मालिक की सीख याद आयी तो उसने उस साँप को बाहर से उठा कर अपने घर के कम्पाउन्ड में फेंक दिया।

एक हफ्ते बाद उसने देखा कि उस जगह पर जहाँ उसने साँप फेंका था वहाँ पर बहुत सारे पारस पत्थर[10] पड़े हैं। अब इसमें कोई आश्चर्य की बात तो थी नहीं कि वह नौजवान यह देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने साँप और वे कीमती पत्थर अपने कपड़ों में इकट्ठे कर लिये। कीमती पत्थर वह घर के अन्दर ले गया और साँप को अपने

[10] Used for the word "Touchstone"

घर में एक घोंसले में रख दिया। सॉप रोज एक कीमती पत्थर देता रहा।

और इस तरह से वह नौजवान अमीर होता चला गया। उसने एक बहुत बढ़िया मकान बनवा लिया शादी कर ली और किसी लौर्ड[11] की तरह से रहने लगा। सॉप अभी भी कीमती पत्थर दे रहा था। नौजवान अमीर पर अमीर होता रहा और यह देख कर वह खुश होता रहा।

एक दिन उसकी पत्नी ने पूछा — "तुमको इतना अमीर किसने बनाया क्योंकि इससे पहले तो तुम दुनियॉ के किसी भी गरीब आदमी से भी गरीब थे।"

नौजवान को अपने मालिक की दूसरी सलाह याद आयी तो अपना भेद छिपाते हुए वह बोला — "मुझे अमीर कौन बनाता? केवल भगवान ने बनाया।"

पर उसकी पत्नी ने उसको चैन नहीं लेने दिया। वह दिन रात उससे यही सवाल पूछती रही — "तुम इतने अमीर कैसे बने मुझे भी बताओ न। तुम्हें मुझे यह बताना ही होगा। बताओ न।"

अब नौजवान के पास बचने का कोई तरीका नहीं था। उसने उसको पूछ पूछ कर थका दिया था। सो आखिरकार उसको सॉप के

[11] Lord is an appellation for a person or Deity who has authority, control or power over others acting like a master, a chief, or a ruler. The appellation can also denote certain persons who hold a title of the peerage in the United Kingdom, or are entitled to courtesy titles.

बारे में उसे सब कुछ बताना ही पड़ा। फिर उसने अपनी पत्नी को वह साँप भी दिखा दिया जो कीमती पत्थर दिया करता था।

पर इसके बाद उस साँप ने वह कीमती पत्थर देना बन्द कर दिया। नौजवान की सम्पत्ति खत्म होने लगी क्योंकि अब उसमें कुछ जुड़ ही नहीं रहा था सब खर्च ही हो रहा था।

जब वह ऐसी हालत में था तो एक आदमी उसके पास आया और उसने उससे एक चाकू उधार माँगा। अब यह आदमी तो अपने दुख से पहले से ही बहुत परेशान था सो उसको अपने मालिक के शब्द भी याद नहीं रहे और उसने अपना चाकू उसको उधार दे दिया।

जैसा उसके साथ हुआ भगवान करे उसके दुश्मन के साथ भी वैसा न हो। अब इत्तफाक की बात थी कि यह आदमी एक चोर था। जब उसको चाकू मिल गया तो वह चोरी करने के लिये एक घर में घुस गया।

वहाँ जा कर उसने वह चाकू एक सोते हुए आदमी के पेट में घोंप दिया उसको मार दिया और उस चाकू को उसके पेट में ही घोंपा हुआ छोड़ कर उस घर में डाका डाल कर वहाँ से भाग लिया।

बाद में जाँच हुई तो जाँच करने वालों ने आदमी के पेट में घोंपा हुआ चाकू उस नौजवान आदमी का पाया। नौजवान को पकड़ कर बाँध लिया गया उसका सारा सामान ज़ब्त कर लिया गया और

उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया गया जैसा किसी चोर के साथ किया जाना चाहिये।

इस तरह उस बदकिस्मत नौजवान के साथ ऐसा घटा जिसने उस चतुर आदमी की बात नहीं मानी।

2 कज़ान्डी[12]

एक बार की बात है कि एक राजा था। उसके तीन बेटे थे और तीन बेटियाँ थीं। कुछ समय बाद वह बूढ़ा हो गया और मरने वाला हो गया तो उसने अपने सब बच्चों को बुलाया और अपने बेटों से कहा — "तुम लोग मेरी वसीयत पढ़ना और देखना कि तुम उसका ठीक से पालन कर रहे हो य नहीं।

तुम सब मेरी कब्र की एक एक हफ्ते तक चौकीदारी करना और जो कोई भी इन लड़कियों का हाथ माँगे इनको उन्हें दे देना।"

कह कर उसने उनको विदा कहा और मर गया। उसकी मौत के बाद उसको दफ़ना दिया गया। पहले दिन सबसे बड़ा बेटा कब्र पर गया और उसका पहरा देने लगा। पर कुछ ही देर में किसी चीज़ ने उसको बड़े शोर के साथ चौंका दिया।

और जब वह चीज़ पास आयी तो वह तो इतनी तेज़ी से आयी कि उसने उसको वहाँ से उठा कर बाहर फेंक दिया। दूर से राजकुमार ने देखा कि वह आदमी जो इतने शोर के साथ राजा की कब्र पर आया था उसने राजा की लाश बाहर निकाली और सुबह सवेरे तक उस पर रोता रहा।

---

[12] Kazha-ndii (Tale No 2 – Mingrelian Tales)

जब सुबह हो गयी तो उसने राजा की लाश को फिर से कब्र में रख दिया और चला गया। जब राजकुमार घर पहुँचा तो उसे कब्रिस्तान में जो कुछ हुआ उसे उसको बताने में बड़ी शर्म आयी।

उस समय दोनों बड़े भाई उसका पीछा करने के लिये वहाँ से चले गये। सबसे छोटा भाई घर पर ही रह गया। दोनों भाइयों के जाने के कुछ देर बाद ही उसने एक आवाज सुनी तो अपने चारों तरफ देखा। तो वह तो उसकी बहिन के लिये एक उम्मीदवार था। उसने उसके हाथ में अपनी सबसे बड़ी बहिन का हाथ दे दिया।

उसके बाद जल्दी ही उसने फिर एक आवाज सुनी। राजकुमार ने फिर अपने चारों तरफ देखा तो वहाँ फिर उसकी दूसरी बहिन के लिये एक उम्मीदवार खड़ा था।

अबकी बार राजकुमार थोड़ा घबरा गया। इस समय अपने भाइयों की गैरहाजिरी उसको कुछ खल गयी। वह उनकी गैरहाजिरी में अपनी बहिनों की शादियाँ नहीं करना चाहता था पर अपने पिता की इच्छा के अनुसार उसने अपनी बीच वाली बहिन की शादी उससे कर दी।

कुछ ही देर बाद उसको तीसरी बार एक आवाज सुनायी पड़ी तो उसने उसको अपनी तीसरी बहिन दे दी।

शाम को जब उसके दोनों भाई घर लौट कर आये तो उनको अपनी बहिनें कहीं दिखायी नहीं दीं। उन्होंने अपने सबसे छोटे भाई

से पूछा कि वे कहाँ थीं तो उसने जो कुछ वहाँ हुआ था वह सब ऐसे का ऐसा बता दिया।

यह सब सुन कर दोनों भाइयों को कोई खुशी नहीं हुई। उन्होंने उसको भेड़ों को खाना खिलाने के लिये भेज दिया।

उस रात बीच वाला भाई पिता की कब्र पर पहरा देने गया। उसके साथ भी वही हुआ जो उसके बड़े भाई के साथ हुआ था। पर घर पहुँच कर उसने भी किसी को कुछ नहीं बताया।

अबकी बार सबसे छोटा भाई बोला कि उसको अपने पिता की कब्र पर पहरा देने दिया जाये पर वे दोनों उससे बहुत गुस्सा थे। वे बोले — "तुम बस रहने दो। तुम कब्र का पहरा कैसे दे सकते हो जब हम नहीं दे सकते।"

फिर बाद में उन्होंने आपस में बात की "हमको इसे पिता जी की कब्र पर पहरा देने की इजाज़त दे देनी चाहिये।"

सो तीसरा भाई वहाँ से चल दिया और अपने पिता की कब्र पर आया। वहाँ आ कर उसने कब्र पर एक मोमबत्ती जलायी और जैसे ही वह बैठा तो बहुत ज़ोर से शोर हुआ पर वह उसको सुन कर डरा नहीं। यह शोर एक राक्षस[13] मचा रहा था।

जब वह राक्षस पास आया तो लगा जैसे कोई भूचाल आ गया हो पर वह छोटा भाई फिर भी नहीं डरा। उसने अपनी तलवार अपने सिर के चारों तरफ घुमायी और उसका सिर एक पल में काट

[13] Translated for the word "Monster"

दिया। उससे उस राक्षस का जो खून उछला तो उससे कब्र पर जली मोमबत्ती बुझ गयी।

भाई ने इधर उधर देखा तो देखा कि कुछ दूर पर आग जल रही थी। वह उठा और उधर की तरफ चल दिया। रास्ते में वह मुर्गे से कहता गया — "अपनी बॉग मत देना ताकि तब तक दिन न निकल सके जब तक मैं वापस लौट कर न आऊँ नहीं तो मैं तुझे मार दूँगा।"

जब वह आग के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वहॉ तो समुद्र जैसी बड़ी नदी बह रही है। वह उसमें तैर गया। जब वह उसमें तैर कर दूसरी पार पहुँचा तो उसने देखा कि उस आग के चारों तरफ तो डैमी[14] बैठे हैं।

सो वह वहॉ जा कर रुक गया और गम्भीरतापूर्वक सोचने लगा कि वह वहॉ पर जाये या नहीं। पर फिर उसने एक छलॉग लगायी और उनके बीच में पहुँच गया। वहॉ से उसने उनकी एक जलती हुई लकड़ी उठायी और वहॉ से भाग लिया।

जलते हुए कोयले और राख उन डैमियों के ऊपर जा पड़ीं पर उनको भागता हुआ नौजवान कहीं दिखायी नहीं दिया। राजकुमार तैर कर नदी पार कर गया पर उसकी जलने वाली लकड़ी तो वहॉ तक पहुँचते पहुँचते बुझ गयी।

---

[14] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

उसको इस बात पर गुस्सा तो बहुत आया पर वह कर क्या सकता था। सो वह फिर से वहाँ गया वह फिर से उनकी आग पर कूदा पर इस बार जब वह आग के पास जा कर गिरा तो डैमियों ने उसको पकड़ लिया और उससे पूछा कि वह क्या चाहता था। उसने उनको बताया कि वह उनसे आग चाहता था।

डैमियों ने कहा — "उस पार के एक महल में तीन लड़कियाँ रहती हैं जिनको अब तक सूरज ने भी नहीं देखा है[15]। तुम उनको हमें ला दो नहीं तो हम तुम्हें यहाँ से जाने नहीं देंगे।"

नौजवान ने उनसे पूछा — "महल तक चढ़ने के लिये वहाँ क्या कोई सीढ़ी है?"

उन्होंने जवाब दिया — "हाँ है।"

इस पर वह बोला — "तो फिर चलो चलते हैं।"

कह कर उसने सारे डैमियों को अपने साथ लिया और उनसे कहा — "सबसे पहले मैं चढ़ूँगा उसके बाद तुम सब एक के बाद एक मेरे पीछे आना।"

वे राजी हो गये। सो राजकुमार सबसे पहले चढ़ा और एक डैमी उसके पीछे चढ़ा। जैसे ही वह एक डैमी ऊपर तक पहुँचा

[15] Translated for the phrase "Unseen by the Sun". It is continually applied for the beautiful girls in Georgian poetry. It has three meanings, (1) A girl is strictly kept and not seen out of doors, (2) One who is not sunburnt and fair-compolexioned; (3) A maiden such as the Sun has never seen like of for her beauty. The last meaning is most frequent.

राजकुमार ने अपनी तलवार घुमायी उसको मारा और उसका शरीर नीचे फेंक दिया।

जब दूसरा डैमी ऊपर आया तो उसने उसके साथ भी वैसा ही किया। इस तरह उसने एक एक कर के सारे डैमियों का मार दिया और उनके शरीरों को वहीं छोड़ दिया।

फिर वह अन्दर गया और उन लड़कियों को नमस्ते की। उसने तीनों को एक एक ॲगूठी थी – सबसे छोटी वाली को अपनी तरफ से और दूसरी दो लड़कियों को अपने भाइयों की तरफ से।

फिर वह नौजवान वहॉ से चला गया। उसने अपनी तलवार एक पत्थर में घुसायी उसको वहीं छोड़ा अपने साथ आग ली और वापस चला गया।

जब उसने नदी पार कर ली तब वह मुर्गे से बोला "अब तुम बॉग दे सकते हो।" फिर वह अपने पिता की कब्र पर आया और फिर से पहरा देने लगा। वह सुबह तक वहॉ रहा और फिर अपने घर चला गया।

उधर उन सुन्दर लड़कियों ने राजा को बताया कि उनके साथ क्या हुआ था। यह सुन कर राजा ने अपने सारे लोगों को बुलाया और उनसे कहा "तुममें से कौन ऐसा है जो उस पत्थर से उस तलवार को निकाल सके?" पर कोई उस पत्थर में से उस तलवार को नहीं निकाल सका।

तब राजा ने एक मुनादी पिटवायी कि "जो कोई भी उस तलवार को पत्थर में से निकालेगा मैं उससे अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

दोनों राजकुमारों ने जब यह सुना तो वे भी उधर आये। जब वे घर से चलने लगे तो उनके सबसे छोटे भाई ने भी उनसे उसे वहाँ अपने साथ ले जाने के लिये कहा। काफी जिद के बाद वे राजी हो गये।

जब वे तीनों वहाँ पहुँचे तो वहाँ बहुत शोर मचा। देश के सब हिस्सों से आये राजकुमार उस तलवार को निकालने की कोशिश में लगे हुए थे पर अभी तक कोई उसे पत्थर में से निकाल नहीं सका था।

आखिर सबसे छोटा राजकुमार वहाँ आया और उसने पत्थर से तलवार निकाल दी। उसने उसको म्यान में रखा और राजा से कहा — "आपकी तीनों बेटियाँ अब हमारी हैं क्योंकि मेरे दो भाई और भी हैं।"

फिर उसने अपने दोनों भाइयों को भी बुलाया और तीनों लड़कियों की शादी उन तीनों राजकुमारों से हो गयी। शादी का खूब हंगामा मचा।

राजा ने सबसे छोटे राजकुमार की पत्नी को एक उड़ने वाला कालीन दिया जो जो भी उस पर बैठता था वह उसी को उड़ा कर ले जाता था। राजकुमारी अपने पति के पीछे पीछे उस कालीन पर बैठी

और चल दी। उनके पीछे पीछे दुलहे के दूसरे लोग और नौजवान भी चल दिये।

जब वे आधे रास्ते तक गये तो एक राक्षस ने नीचे की तरफ राजकुमारी पर कूद मारी और उसको उठा कर ले गया। लोग ज़ोर ज़ोर से रोने लगे पर क्या किया जा सकता था।

सबसे छोटे भाई ने अपने दोनों राजकुमार भाइयों से कहा — "भाइयो विदा। मुझे भी उसके साथ ही मर जाने दो।" और यह कह कर वह भी वहाँ से चला गया।

वह चलता गया चलता गया चलता गया जितनी दूर जा सकता था। चलते चलते वह एक मैदान में पहुँच गया जहाँ उसको एक नदी मिली। वह उसके किनारे जा कर लेट गया। तभी वहाँ पर एक लड़का पानी का लोटा ले कर आया।

राजकुमार ने उससे पूछा — "यह गाँव किसका है।"

लड़के ने जवाब दिया — "यहाँ तीन डैमी भाई रहते हैं और तीनों की एक ही राजा की बेटियों से शादी हुई है।"

जब उस नौजवान ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ क्योंकि उसको लगा कि उसकी तीनों बहिनों के पति थे। तब वह उधर गया तो उसकी बहिनें उससे मिलने आयीं। यह सोचना तो आसान है कि वे उसको देख कर कितनी खुश हुई होंगी।

जब अँधेरा हुआ तो तीनों डैमी लौट कर आये तो तीनों बहिनों में से एक बहिन उनसे मिलने गयी और उनसे कहा कि मेरा भाई

आया है। डैमी बोला — "अगर तुम्हारे दोनों बड़े भाई आये हैं तब तो हम उनका मॉस भून कर खायेंगे। और अगर वह तुम्हारा सबसे छोटा वाला भाई है तो हम जानते हैं कि हमें उसके आदर के लिये उसके साथ क्या करना है।"

डैमी अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी का सबसे छोटा भाई आया है। उन्होंने नौजवान को ख़ुशी से चूमा। सब डैमी आग के चारों तरफ बैठ गये और उन्होंने गहरी गहरी सॉसें लेना शुरू कर दिया।

नौजवान ने पूछा — "आप लोग ये गहरी गहरी सॉसें क्यों ले रहे हैं?"

डैमी बोले — "हमको उस लड़की के लिये अफसोस है। कज़ान्डी करकॅू[16] एक सुनहरे बालों वाली लड़की को हवा में उड़ा कर लिये जा रहा था। हमने उसका पीछा भी किया पर हम उसके बालों का केवल एक गुच्छा ही तोड़ने में कामयाब हो सके।"

कह कर उन्होंने वह बालों का गुच्छा उस नौजवान को दिखाया। जैसे ही उसने वह गुच्छा देखा तो वह तो रोते हुए बेहोश हो गया "ओह मैं तो बहुत दुखी हॅू। ओह मैं तो बहुत दुखी हॅू।"

उसको रोते देख कर डैमियों ने पूछा — "क्या बात है?"

तो उसने उनको सब बता दिया।

---

[16] Kazah-ndii-Kerkun

जैसे ही दिन निकला तो नौजवान वहाँ से उठ कर चल दिया। डैमी उसके लिये बहुत दुखी थे परन्तु वे क्या कर सकते थे। उन्होंने उसको एक घोड़ा और एक छोटा सा कुत्ता दे दिया।[17]

नौजवान वहाँ से चल दिया और कज़ान्डी के घर आया। कज़ान्डी घर में नहीं था। वह घोड़े से उतरा और राजकुमारी से मिलने के लिये अन्दर गया।

जब उन्होंने एक दूसरे को देखा तो वे तो बहुत खुश हो गये और इतने खुश हो गये कि जमीन पर नीचे गिर पड़े।

राजकुमारी ने उससे कहा — "तुम यहाँ अपना सर्वनाश कराने क्यों आये हो? तुम कज़ान्डी का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" पर वह नौजवान उसकी सुनने वाला नहीं था उसने उसको उठा कर अपने घोड़े पर बिठा लिया और वहाँ से चल दिया।

जैसे ही वे बाहर के फाटक पर पहुँचे तो वह फाटक इतनी ज़ोर से चिल्लाया जैसे कोई तारा टूटा हो — "कज़ान्डी करकूं तुम कहाँ हो? वे तुम्हारी पत्नी को लिये जा रहे हैं।"

जब कज़ान्डी ने यह सुना तो उनका पीछा किया। जब वह उनको पीछे छोड़ने वाला ही था तो कज़ान्डी का घोड़ा इतनी ज़ोर से हिनहिनाया कि उससे राजकुमार का घोड़ा रुक गया।

राजकुमारी उससे बोली — "मैंने तुमसे कहा नहीं था कि क्या होने वाला है। अब कम से कम तुम अपने को तो बचा लो।"

---

[17] Geria's faithful dog and three-legged horse

कज़ान्डी अपने घोड़े पर सवार हुआ नौजवान के टुकड़े टुकड़े किये और उसकी पत्नी को वापस ले गया। छोटा कुत्ता आया, उसने नौजवान के शरीर के टुकड़े इकट्ठे किये, उन सबको एक थैले में डाला, थैले को घोड़े की जीन से बाँधा और उसके शरीर को डैमियों के पास ले गया।

जब डैमियों ने उसको देखा तो वे बहुत रोये पर उनके सबसे छोटे भाई ने उसके शरीर के टुकड़ों में जान फूँक दी और नौजवान को ज़िन्दा कर दिया। राजकुमार उठा और फिर से जाने को तैयार हो गया।

इस पर सबसे छोटे डैमी भाई ने कहा — "यह मेरा तीन टाँग का घोड़ा है तुम इसको अपने साथ ले जाओ। अगर यह तुम्हारी सहायता नहीं कर सका तो फिर कोई तुम्हारी सहायता नहीं कर सकेगा।"

नौजवान ने उससे वह घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर अपनी पत्नी के पास आया। उसने उसको उठाया और घोड़े पर बिठाया। जब वह फाटक के बाहर निकल रहा था तो वह पहले के मुकाबले में और बहुत ज़ोर से चिल्लाया।

कज़ान्डी ने दरवाजे की चिल्लाहट सुनी तो उसने फिर से नौजवान का पीछा किया। वह नौजवान को पकड़ने ही वाला था कि कज़ान्डी का घोड़ा बहुत ज़ोर से हिनहिनाया और नौजवान के घोड़े की चाल धीमी पड़ गयी।

यह देख कर राजकुमार ने घोड़े से पूछा — “तुम्हारी चाल धीमी क्यों हो गयी?”

घोड़ा बोला — “मैं क्या करूँ। अगर मेरी चौथी टॅाग होती तो मैं जीत जाता।”

जब कज़ान्डी पास आ गया तो तीन टॅागों वाला घोड़ा इतनी ज़ोर से हिनहिनाया कि उसने कज़ान्डी का घोड़ा रोक दिया। तब वह नौजवान कज़ान्डी के घोड़े के पास आया अपनी तलवार हिलायी और उससे कज़ान्डी के दो टुकड़े कर दिये। राजकुमारी को उसके घोड़े पर बिठाया और वे दोनों खुशी खुशी वहॉ से चले गये।

वहॉ से पहले वे डैमियों के पास गये उनको धन्यवाद दिया उसके बाद फिर वे अपने घर चले गये।

3 एक गरीब के बेटे जीरिया की कहानी[18]

एक बार की बात है कि जियोर्जिया में एक बहुत ही गरीब आदमी रहता था। उसकी शादी हो गयी थी और उसके एक ही बेटा था। उसका यह बेटा बहुत ही सुन्दर और बहुत ही ताकतवर था। इसका नाम था जीरिया[19]।

एक दिन जीरिया शिकार करने गया तो जब शिकार कर के वह शाम को घर वापस लौट रहा था तो उसको एक स्त्री मिली जिसके हाथ में एक घड़ा था जिसे ले कर वह पानी भरने के लिये झरने पर जा रही थी। उसने एक तीर चलाया और उस स्त्री का घड़ा तोड़ दिया।

उस स्त्री ने कहा — "अगर तुम ऐसे ही लड़ने वाले हो तो बजाय मेरा बर्तन तोड़ने के 12 डैमियों[20] की अकेली बहिन को ले कर आओ न जो 12 पहाड़ों के उस पार रहती है। मुझ स्त्री का घड़ा तोड़ने से तुमको क्या मिलेगा।"

यह सुन कर उस नौजवान का दिल तो उस लड़की को देखने की इच्छा से ही बहुत ज़ोर से धड़कने लगा। घर पहुँच कर उसने

[18] The Story of Geria, the Poor Man's Son (Tale No 3 – Mingrelian Tales)

[19] Geria means little wolf. In Mingrelia there are are many such names, such as Joghoria means little dog, Lomikia means little lion, Tholiorko means golden-eyed etc etc

[20] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

अपने माता पिता से कहा कि वे उसके लिये कम से कम एक साल के लिये खाना तैयार कर दें क्योंकि वह बाहर सफर पर जाना चाहता था। और अगर वह इस बीच घर न आ पाये तो वे उसको ढूँढने के लिये निकल पड़ें।

उसके माता पिता ने उसको इस बात की इजाज़त नहीं दी कि वह इस तरह से बाहर जाये सो वे बोले — "हमारे तो तेरे सिवाय और कोई बच्चा नहीं है। क्या तू भी हमारे पास से चला जायेगा और मर जायेगा?" और दोनों ने एक साथ रोना शुरू कर दिया।

पर जीरिया ने उनकी एक न सुनी। सो उन्होंने उसके लिये खाने का सामान जुटाया और रोते हुए उसको विदा किया। वे लोग सब इतनी ज़ोर से रोये कि उनका रोना सारे देश में सुना गया। और सारे देश ने ही नहीं बल्कि सूरज और चाँद ने भी सुना जमीन और आसमान ने भी सुना समुद्र और रेत ने भी सुना।

आखिर उन्होंने अपने बेटे को आशीर्वाद दिया और जाने की इजाज़त दी। उसने अपने साथ अपना छोटा कुत्ता लिया जिसका नाम था "मैथीकोची"[21]। जब उन्होंने एक दूसरे से विदा ली तो वे आपस में गले मिले एक दूसरे को चूमा और वह नौजवान अपने रास्ते पर चल दिया।

---

[21] "Mathicochi" means "I am also a human being"

वह चलता गया चलता गया चलता गया जितनी दूर तक वह चल सकता था, हफ्ता हफ्ता हफ्ता पखवाड़ा एक साल और तीन महीना।[22] वह अब तक छह पहाड़ों पर से गुजर चुका था।

जब उसने छह पहाड़ पार कर लिये तो उसके चारों तरफ की चीज़ें गोल गोल घूमने लगीं। पेड़ और पत्थर गिर कर नीचे घाटियों में इकट्ठा होने लगे पर जीरिया को कोई नुकसान नहीं पहुँचा।

तब नीचे से एक आवाज आयी — "यह तुम किस तरह के आदमी हो जो इस तरह से मेरे खिलाफ खड़े हुए हो। गरीब के बेटे जीरिया के अलावा मेरा मुकाबला और कौन कर सकता है।"

यह सुन कर जीरिया बोला — "यह मैं जीरिया ही हूँ।"

जब उसने यह सुना तो रोकापी[23] उससे मिलने के लिये निकल कर बाहर आयी। उसके सामने झुकी और उसको बहुत इज़्ज़त दे कर उससे पूछा — "तुम किधर जाते हो?"

तो नौजवान ने उसको सब कुछ बता दिया। सुन कर रोकापी बहुत दुखी हुई।

जीरिया ने उससे पूछा "तुम दुखी क्यों होती हो?"

"क्योंकि मैंने उधर की तरफ जाते तो बहुत देखे हैं पर मैंने उधर से आते हुए कोई नहीं देखा।"

---

[22] Three years, three months, and the three weeks are the usual measures of the time in Mingrelians tales.

[23] Rokapi in Georgian folktales is an old woman of demoniacal character possessing enchanted castles and domains. Sometimes the word simply means witch and in ordinary conversation it is applied to an ugly ill-natured toothless old hag.

पर जीरिया ने उसके ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते चला गया। वह चलता गया चलता गया चलता गया अपनी ताकत से भी ज़्यादा चलता गया। और जब उसने दूसरे छह पहाड़ पार कर लिये तो पहले से भी बड़ा भूचाल आया।

यह जगह तो रोकापी की सबसे बड़ी बहिन की निकली पर जीरिया को फिर भी कोई डर नहीं लगा। रोकापी की बड़ी बहिन चिल्लायी — "तुम कैसे आदमी हो जिसने मेरी जादूगरी को भी रोक रखा है। क्या तुम गरीब के बेटे जीरिया हो?"

जीरिया चिल्लाया — "हॉ मैं जीरिया ही हूॅ।"

यह रोकापी भी तुरन्त ही उससे मिलने के लिये बाहर निकल कर आयी उसके सामने इज़्ज़त से झुकी और उससे पूछा — "तुम किधर जा रहे हो?"

जीरिया ने उसे अपना प्लान बताया तो वह भी बहुत दुखी हो गयी। जीरिया ने उससे पूछा कि वह दुखी क्यों हो गयी थी तो उसने भी वही जवाब दिया — "क्योंकि मैंने उधर की तरफ जाते तो बहुत देखे हैं पर मैंने उधर से आते हुए कोई नहीं देखा। फिर भी मैं तुम्हारी एक सेवा कर सकती हूॅ। मैं तुम्हें अपना तीन टॉगों वाला घोड़ा दे सकती हूॅ।"

इतना कह कर उसने अपने घोड़े को बुलाया और उससे कहा — "जब तक जीरिया ज़िन्दा रहता है तब तक उसकी सेवा किये जाओ।"

जीरिया ने रोकापी की बड़ी बहिन से उसका घोड़ा लिया उसको विदा कहा घोड़े पर चढ़ा और अपने छोटे कुत्ते मैथीकोची को साथ ले कर वहाँ से चल दिया।

वह घोड़े पर सवार हो कर एक घास के मैदान में आया जहाँ डैमियों का घर था। जब उसने वहाँ पानी की तरफ देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने अपने घर के बारे में सोचा और वहाँ के मैदानों के बारे में। उसके मुँह से भगवान के लिये धन्यवाद निकल गया।

उसने फिर इतनी तेज़ी से अपना घोड़ा आगे बढ़ाया कि उसके पीछे धूल का बादल उड़ने लगा। नौजवान ने सोचा "लो अब तो मैं एक अनजानी जगह में आ गया।" वह डैमियों[24] के फाटक तक गया वहाँ जा कर अपने घोड़े से नीचे उतरा और घोड़े को पास में ही बाँध दिया।

वह थोड़ी दूर ही चला था कि चिल्लाया "मुझे लगता है कि मैंने अपना घोड़ा ठीक से नहीं बाँधा है।"

कह कर वह घोड़े के पास वापस आया एक ओक के पेड़ को जड़ से उखाड़ा उसकी शाखाओं को जमीन में गाड़ा और फिर उनसे अपना घोड़ा कस कर बाँध दिया।

---

[24] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

यह देख कर घोड़ा बोला — "अगर तुमने ऐसा न किया होता तो मैं वापस घर भाग गया होता। पर अब तुम वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे करने के लिये कहता हूँ। फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।

डैमी लोग अभी अन्दर हैं। तुम घास के मैदान में जाओ। वहाँ तुमको एक केटली मिलेगी। उसको तुम तीन बार पलट कर उलटा कर देना और फिर उसे वैसा ही छोड़ देना। फिर तुम उस लड़की के पास जाना और उससे कहना कि वह तुम्हारे साथ वफादारी की कसम खाये।"

जीरिया घास के मैदान में गया तो उसको वह केटली मिल गयी जो घोड़े ने उसे बतायी थी। उसने उसको तीन बार पलटा और पलटा हुआ ही छोड़ दिया। फिर वह लड़की के पास गया। सारे ताले तोड़े और उस कमरे में आया जिसमें वह थी।

जीरिया को देख कर तो वह लड़की आश्चर्य में पड़ गयी पर जीरिया की बहादुरी ने उसको खुश कर दिया। थोड़े में कहें तो उसने उससे शादी का वायदा भी कर लिया।

जीरिया खुशी खुशी वहाँ गया जहाँ उसने अपना घोड़ा बाँधा था। वहाँ जा कर उसने रात बितायी। अगली सुबह घोड़ा बोला — "डैमी लोग अब घास के मैदान से चले गये हैं। जब उन्होंने केटली को उलटा पड़ा देखा तो उन्होंने उसकी बड़ी तारीफ की जिसने उसको उलटा किया था क्योंकि साधारणतया उस केटली को बारह डैमी ही उलटा कर सकते हैं और कोई नहीं।

सो उन्होंने एक दूसरे से कहा जिसने भी इस केटली को उलटा किया है हमें उसका कहना मानना चाहिये। इसलिये अब तुम्हारे वहॉ जाने का समय आ गया है। अब तुम वहॉ बिना किसी डर के जा सकते हो।" सो जीरिया उस घास के मैदान की तरफ चल दिया।

जैसे ही डैमियों ने उसे देखा वे जल्दी से उठ कर खड़े हो गये और उससे मिलने आये। उन्होंने उसके सामने सिर झुकाया और बोले — "तुमको हमसे क्या चाहिये।"

जीरिया बोला — "मुझे तुम्हारी बहिन से शादी करनी है।"

डैमी बोले — "हम तुम्हें अपनी बहिन दे तो दें पर "काला राजा" तुमको उसे लेने नहीं देगा।"

जीरिया बोला — "मैं किसी की चिन्ता नहीं करता।"

सो शादी की दावत का इन्तजाम किया गया। जब दावत चल ही रही थी तो सुबह को जीरिया ने बाहर की तरफ देखा तो देखा कि काले राजा के भेजे हुए बहुत सारे लोग वहॉ जमा हैं। जीरिया तुरन्त ही अपने घोड़े पर चढ़ा और उन लोगों में घुस गया और उन सबको हरा दिया।

उसने केवल तीन को ज़िन्दा छोड़ा। उनको उसने काले राजा के पास दूत की तरह से यह सन्देश ले कर भेज दिया कि वे जा कर उससे कह दें "यह सब मैंने यानी गरीब के बेटे जीरिया ने किया है।"

यह सुन कर तो काला राजा बहुत गुस्सा हुआ। अबकी बार उसने अपनी करीब करीब सारी सेना जीरिया से लड़ने के लिये भेज दी।

जब जीरिया ने इतने सारे लोग देखे तो एक बार तो वह सोच में पड़ गया पर घोड़े ने उससे कहा — "नौजवान यह तो कुछ भी नहीं अभी तो तुम इससे भी बुरे हालात देखोगे।"

जीरिया ने घोड़े को एक कोड़ा मारा और काले राजा की सेना पर हमला बोल दिया। उसने एक आदमी को छोड़ कर उन सबको मार गिराया। उसको उसने यह सन्देश ले कर काले राजा के पास भेज दिया कि उसकी सारी सेना नष्ट हो गयी।

यह सन्देश सुन कर तो राजा का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और उसने खुद जीरिया से लड़ने की सोची। उसने अपने वफादार गुलाम क्वामुरिट्ज़ खामी[25] को बुलाया जिसको वह अपनी कठिनाइयों में बुलाया करता था।

उसने उसको अपनी बची खुची सेना ले कर जीरिया का सामना करने के लिये भेज दिया।

उनको आते देख कर जीरिया उठा और उन पर एक नजर डाली तो वह यह देख कर बहुत खुश हुआ कि क्वामुरिट्ज़ खामी उनमें नहीं था। अब वह वहाँ नहीं था तो वह क्या कर सकता था।

---

[25] Quamuritz Khami – name of the slave of Black King. He had a star in his brow.

घोड़े ने उससे कहा — "वह उधर है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था।"

जीरिया ने भगवान को धन्यवाद दिया अपनी पत्नी से विदा ली और यह सोच कर चल दिया कि वह तो अब मर ही जायेगा।

पहले तो उसने सेना को मारा फिर उसने क्वामुरिट्ज़ खामी से लड़ना शुरू किया। वे दोनों गदा ले कर लड़े पर यह लड़ाई किसी ताकतवर आदमी से नहीं थी क्योंकि क्वामुरिट्ज़ खामी की आत्मा तो किसी दूसरे के हाथों में सुरक्षित थी। तो वह कैसे मर सकता था।

क्वामुरिट्ज़ खामी चिल्लाया — "तुमको ऐसे मारना चाहिये।" और यह कह कर उसको मार दिया।

जब जीरिया मर गया तो क्वामुरिट्ज़ खामी ने सारे डैमियों को मार दिया, जीरिया की पत्नी को लिया उसको उसके पति के घोड़े पर चढ़ाया और अपने मालिक के पास ले चला।

वहाँ जा कर जीरिया की पत्नी ने कहा — "मैं तो एक ऐसे आदमी की विधवा हूँ कि मैं तुम जैसे आदमी की तो हो ही नहीं सकती। या तो तुम मुझसे लड़ो और फिर जीतने वाला हारने वाले के साथ जो चाहे सो करे, नहीं तो मुझे तीन महीने तक शोक के काले कपड़े पहनने की इजाज़त दी जाये।"

काला राजा उससे लड़ने से डरता था क्योंकि वह डैमी जाति की थी इसलिये उसने उसको तीन महीने का शोक मनाने की इजाज़त दे दी।

जब जीरिया मरा था तब उसका सिर एक तरफ को लुढ़क गया था और शरीर दूसरी तरफ लुढ़क गया था। उसका वफादार कुत्ता मैथीकोची वहाँ गया और उसने उसके शरीर के दोनों हिस्से जोड़ दिये और उनकी रखवाली करने लगा।

जब यह सब हो रहा था तो इसको होते होते एक साल बीत गया। जब जीरिया के माता पिता ने देखा कि एक साल बीत गया और जीरिया वापस लौट कर नहीं आया तो वे उसको ढूँढने निकले।

चलते चलते वे एक बहुत ही तंग सड़क पर आये तो क्या देखते हैं कि वहाँ बहुत सारे साँप लड़ रहे थे और अब सब मर गये हैं। केवल दो बड़े साँप बच कर नदी के अन्दर चले गये हैं।

नदी के अन्दर गये हुए साँप फिर नदी से बाहर आ गये हैं और उन्होंने मरे हुए साँपों के ऊपर अलग अलग दिशाओं में घूम कर उनके ऊपर पानी डालना शुरू कर दिया है। उन्होंने देखा कि वे मरे हुए साँप फिर से ज़िन्दा हो गये हैं।

जीरिया के माता पिता को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ। उन्होंने सोचा कि "यह तो मरे हुए को जिलाने वाला पानी लगता है हमको भी यह पानी थोड़ा सा ले लेना चाहिये।" सो उन्होंने भी नदी में से थोड़ा सा पानी ले लिया।

जब वे अपने बेटे की जगह पहुँचे तो जीरिया के कुत्ते ने उनको देखा तो वह दुखी सा उनके पास दौड़ा आया और उनको ले कर

जीरिया के मरे हुए शरीर के पास आया। जब उन्होंने जीरिया का मरा हुआ शरीर देखा ते वे दोनों दुखी हो कर जमीन पर गिर पड़े।

तब उनको याद आया कि उस बदकिस्मत की माँ के पास तो मुर्दे को जिलाने वाला पानी है।

सो माँ ने तुरन्त ही अपने बेटे के ऊपर वह जिला देने वाला पानी छिड़क दिया और लो जीरिया तो फिर ज़िन्दा हो गया। ज़िन्दा होते ही जीरिया बोला — "अरे मैं तो कितनी देर सोता रहा।"

और जब उसने अपने माता पिता को वहाँ देखा तो वह तो बहुत खुश हो गया पर यह याद कर के कि उसके ऊपर क्या बीती थी वह फिर दुखी हो गया। उसने एक बार फिर से अपने माता पिता को विदा कहा और वहाँ से चल दिया।

उसके माता पिता यह सुन कर बहुत रोये पर भगवान में विश्वास रख कर उन्होंने धीरज रखा।

अबकी बार जीरिया काले राजा के राज्य की ओर चल दिया। जब वह उसके पास तक पहुँचा तो वह एक बहुत बड़े जंगल में पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने एक बहुत ज़ोर की आवाज सुनी।

वह वहीं रुक गया और उसने सड़क पर कुछ आता हुआ देखा जो सारे जंगल को नष्ट करता चला आ रहा था। उसके आने से पेड़ पर पेड़ गिरते चले जा रहे थे।

उसने उसकी तरफ ठीक से देखा तो उसने देखा कि वह तो एक सूअर था जो ठीक उसी की तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

वह झट से उसके ऊपर गिर पड़ा उसे उठा लिया और अपने से तीन कन्धे दूर फेंक दिया।[26] मगर फिर भी वे आपस में लड़ते ही रहे लड़ते ही रहे लड़ते ही रहे। वे तीन दिन तक लड़ते रहे।

आखिर जीरिया जीत गया। उसने जंगली सूअर को दो हिस्सों में फाड़ कर फेंक दिया। जैसे ही उसने सूअर को फाड़ कर फेंका उस फटे हुए सूअर में से एक जंगली बकरा निकल पड़ा। जीरिया ने जंगली बकरे को भी मार दिया तो उसमें से एक छोटा सा बक्सा निकल पड़ा।

जब उसने छोटा सा बक्सा तोड़ा तो उसमें से तीन घरेलू चिड़ियें उड़ कर चली गयीं। उनमें से उसने दो चिड़ियों को तो मार दिया और एक चिड़िया को पकड़ लिया।

उसी समय क्वामुरिट्ज़ खामी बीमार पड़ गया। मौत का डर उसके दिमाग पर छा गया। क्योंकि जीरिया के पास जो चिड़िया थी उसकी आत्मा उसी में थी। जीरिया ने वह चिड़िया मार दी। चिड़िया के मरते ही क्वामुरिट्ज़ खामी भी मर गया।[27]

इसके बाद जीरिया काले राजा के महल में घुसा। वहाँ पहुँच कर उसने अपनी पत्नी के सिवा सबको मार दिया। अपनी पत्नी को वह अपने माता पिता के पास ले कर गया जिसको देख कर उनका

---

[26] Orgia means one shoulder away. It is the measure of length equal to the space from finger-tip to finger-tip of the hands when extended horizontally.

[27] This Qvamuritz Khami is the same man who taught the boy in the folktale “Guroo Aur Chela” given in the book “Georgia Ki Lok Kathayen-1”. He dies here.

धीरज और दुख खुशी में बदल गया। फिर वे सब खुशी खुशी एक साथ घर चले गये।

4 राजकुमार जिसने जंगली जानवरों से दोस्ती की[28]

एक बार की बात है कि जियोर्जिया में एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। एक बार वह बीमार पड़ गया और उस बीमारी में वह अन्धा हो गया। उसने अपने बेटों को बहुत सारे डाक्टरों को ढूँढने के लिये भेजा ताकि वे उसकी ऑखों की रोशनी का इलाज कर सकें।

राजा को देखने के लिये बहुत सारे डाक्टर आये। आपस में सलाह करने के बाद सब डाक्टर इस बात पर राजी हुए कि एक खास किस्म की मछली थी जो शायद राजा की ऑखों की रोशनी वापस ला सकती थी। सो उन्होंने उस मछली की एक तस्वीर बनायी और उसको वहीं छोड़ कर चले गये।

राजा ने अपने सबसे बड़े बेटे से कहा कि वह जाये और समुद्र में से उस मछली को पकड़ कर लाये। सौ आदमी अपने अपने जालों के साथ समुद्र में डूब गये पर वे वैसी मछली नहीं पकड़ सके जैसी कि डाक्टर लोग चाहते थे।

बड़ा बेटा घर आ वापस आया और पिता से कहा कि उसको वैसी मछली तो मिली नहीं बल्कि समुद्र में डूब कर सौ मछियारे और मर गये।

---

[28] The Prince Who Befriended the Beasts (Tale No 4 – Mingrelian Tales)

इस बात से राजा बहुत नाखुश हुआ पर वह क्या करता। उसके बाद राजा ने अपने दूसरे बेटे को उस मछली को पकड़ने के लिये भेजा। वह भी अपने साथ सौ मछियारे ले कर समुद्र पर गया। पर उसके ये आदमी भी समुद्र में मारे गये और उसको मछली भी नहीं मिली। सो वह भी खाली हाथ लौट आया।

अबकी बार राजा ने अपने तीसरे और सबसे छोटे बेटे को भेजा। इसने चालाकी का रास्ता अपनाया। यह अपने साथ सौ किलाज़[29] और केवल एक आदमी ले कर समुद्र पर आया। वह रोज समुद्र के किनारे के आस पास तब तक आटा फैलाता रहता जब तक कि सारा आटा खत्म नहीं हो जाता।

मछलियाँ उसका आटा खा खा कर मोटी होती जा रही थीं। सो एक दिन उन्होंने आपस में बात की "क्योंकि इस लड़के ने हमको इतने दिनों तक खाना खिलाया है तो हमें इसे कुछ देना चाहिये।"

सो जैसे ही उस लड़के ने समुद्र में अपना जाल डाला उसके जाल में वह खास मछली फँस गयी जिसको पकड़ने वह वहाँ आया था। उसने तुरन्त ही उसे अपनी पोशाक में लपेटा और अपने घर चला गया।

जब वह अपने घोड़े पर सवार जा रहा था तो वह अपने साथी से कुछ दूरी पर था कि उसने एक आवाज सुनी — "ओ नौजवान मैं मरी जा रही हूँ।"

[29] Kila is the measure of dry things, like flour – about 36 or 40 pounds

यह सुन कर उसने इधर उधर देखा तो उसे तो वहाँ कोई भी दिखायी नहीं दिया सो वह आगे बढ़ गया। कुछ देर बाद उसने फिर वही शब्द सुने। इस बार उसने और ज़्यादा ध्यान से इधर उधर देखा पर इस बार भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

तब उसने अपनी पोशाक में देखा कि जो मछली उसने पकड़ी थी उसका मुँह खुला हुआ था और वह मर रही थी। लड़के ने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये।"

मछली बोली — "वह ज़्यादा अच्छा होगा अगर आप मुझे जाने दें। अगर आप मुझे छोड़ देंगे तो एक न एक दिन मैं जरूर आपकी सहायता करूँगी।"

लड़के ने मछली को अपनी पोशाक में से निकाला और यह कहते हुए पानी में फेंक दिया "उम्मीद है कि तुम मुझे धोखा नहीं दोगी।" वहाँ से वह घर आ गया और आ कर पिता को बोल दिया कि उसको भी वैसी मछली कहीं नहीं मिली।

कुछ समय बीत गया। एक बार राजकुमार की अपने एक साथी से लड़ाई हो गयी तो उसने राजा को जा कर बताया कि राजकुमार ने उसको किस तरह से धोखा दिया था।

जब राजा ने यह सुना तो उसने उसको मारने का हुक्म दे दिया। राजा के आदमी उसको मारने के लिये ले कर गये पर जैसे ही उन्होंने उसको मारने के लिये अपना हाथ उठाया तो राजकुमार ने उनसे प्रार्थना की — "तुम्हें मुझे मार कर क्या मिलेगा। पर अगर

तुम मुझे जाने दोगे तो तुम यह एक भलाई का काम करोगे। मेरा विश्वास करो मैं यहाँ से विदेश चला जाऊँगा और फिर इधर कभी नहीं आऊँगा।"

मारने वालों को उस पर दया आ गयी सो उन्होंने उसे छोड़ दिया। राजकुमार ने उनको धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

वह चलता गया चलता गया चलता गया। चलते चलते वह एक जंगल में आ निकला। जब वह जंगल में से हो कर जा रहा था तो उसने एक हिरन भागता हुआ देखा जो किसी से डर कर भाग रहा था।

राजकुमार रुक गया और रुक कर उसको देखता रहा तो हिरन भागता हुआ आया और उसके सामने ही मुँह के बल गिर पड़ा।

राजकुमार ने पूछा — "तुमको क्या तकलीफ है।"

"एक राजकुमार मेरा पीछा कर रहा है और अब मेरी ज़िन्दगी केवल आपके ही हाथों में है।"

सो अपने राजकुमार ने हिरन को अपने साथ लिया और आगे चल दिया। रास्ते में उसको एक शिकारी मिला तो शिकारी ने उससे पूछा — "तुम इस हिरन को ले कर कहाँ जा रहे हो।"

हमारे राजकुमार ने जवाब दिया — "एक राजा ने इसे भेंट के तौर पर दूसरे राजा को भेजा है। और मैं इसको ले कर जा रहा हूँ।"

यह सुन कर शिकारी हिरन को वहीं छोड़ कर चला गया। इस तरह से हमारे राजकुमार ने उस हिरन की जान बचायी।

हिरन बोला — "एक समय आयेगा जब मैं आपकी जान बचाऊँगा।"

हमारा राजकुमार भी उसको छोड़ कर आगे चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा जहाँ तक एक तीन दिन का घोड़े का बच्चा चल सकता था कि एक डरा हुआ गरुड़ उसके कन्धे पर आ कर बैठ गया और बोला — "ओ नौजवान अब मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे हाथ में है।"

राजकुमार ने उसकी जान भी उसके पीछा करने वाले से बचायी तो गरुड़ बोला — "किसी दिन मैं तुम्हारी सेवा करूँगा।" राजकुमार फिर चलता चला गया चलता चला गया। वह जहाँ तक जा सकता था उससे भी आगे तक चलता चला गया। वह एक हफ्ते तक चलता चला गया दो हफ्ते तक चलता चला गया एक साल तीन महीने तक चलता चला गया।

तब उसने एक डरावनी बिजली की कड़क जैसी तेज़ लुढ़कने की आवाज सुनी। यह आवाज जंगल में से बहुत सारे पेड़ों को तोड़ती हुई आ रही थी।

उसने देखा कि एक बहुत बड़ा गीदड़ दौड़ता हुआ चला आ रहा है। वह राजकुमार के पास तक आया और बोला — "अगर

तुम मुझे बचा सकते हो तो बचा लो एक राजकुमार अपनी सेना के साथ मेरा पीछा करते हुए चला आ रहा है।"

राजकुमार ने जैसे और जानवरों को बचाया था वैसे ही उसने उसे भी बचा लिया। गीदड़ बोला — "एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगा।"

राजकुमार फिर चलता रहा और जंगल में से निकल कर एक शहर में आ गया। इस शहर में उसको क्रिस्टल का एक महल मिला जिसके कम्पाउन्ड में उसने बहुत सारे आदमी देखे। उनमें से कुछ तो मर गये थे और कुछ मरने वाले हो रहे थे।

उसने इसका मतलब पूछा तो उसको बताया गया कि "इस देश के राजा की एक बेटी है – एक कुँआरी रानी, उसने एक मुनादी पिटवायी है कि वह उसी से शादी करेगी जो उसकी ऑखों से छिपा रहेगा।

पर क्योंकि अब तक कोई आदमी उससे छिपा नहीं रह सका था सो उसने उन सबको मार दिया है। क्योंकि जो कोई भी उससे छिपा नहीं रह सकता वह उसको ऊपर से फेंक देती है।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह एकदम से उठा और उस लड़की के पास गया। दोनों ने एक दूसरे को झुक कर नमस्ते की। लड़की ने पूछा — "तुम यहॉ क्यों आये हो?"

राजकुमार बोला — "मैं यहॉ उसी लिये आया हूँ जिसके लिये यहॉ और नौजवान आये हैं।"

उसने तुरन्त ही अपने वज़ीरों को बुलाया और उनसे शादी का कौन्ट्रैक्ट लिखने के लिये कहा। कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत करने बाद राजकुमार महल के बाहर गया और समुद्र के किनारे चला गया।

वहाँ जा कर वह किनारे बैठ गया और सोच में डूब गया। तभी समुद्र के पानी में एक बहुत बड़े छपाक की आवाज हुई। उस छपाक ने राजकुमार को निगल लिया और उसको लाल सागर ले गया। वहाँ वे किनारे के पास ही समुद्र की गहराइयों में छिपे रहे। राजकुमार वहाँ रात भर रहा।

जब राजकुमारी सुबह सवेरे उठी तो उसने अपना शीशा मँगवाया और उसमें देखा पर उसको आसमान में कोई दिखायी नहीं दिया। उसने सूखी जमीन पर देखा पर वहाँ भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

उसने समुद्र में देखा वहाँ उसको एक मछली के पेट में एक नौजवान दिखायी दिया। वह मछली गहरे पानी में छिपी पड़ी थी। कुछ देर बाद ही मछली ने नौजवान को उसी जगह अपने पेट से उगल दिया जहाँ से वह उसको ले गयी थी।

राजकुमार खुशी खुशी राजकुमारी के पास गया तो राजकुमारी ने उससे पूछा — “सो तुमने अपने आपको छिपा लिया?”

“हाँ मैंने अपने आपको छिपा लिया।”

पर राजकुमारी ने उसको बताया कि वह कहाँ छिपा हुआ था और वह वहाँ कैसे गया था। फिर वह आगे बोली — “चलो इस

बार तो मैं तुमको तुम्हारी चालाकी के लिये माफ करती हूँ। दोबारा कोशिश करो।"

नौजवान फिर चला गया और एक खेत में जा कर बैठ गया। वहाँ उसके ऊपर कुछ गिरा तो वह उसको हवा में उड़ा कर ले गया और उसको अपने पंख के नीचे छिपा लिया।

अगले दिन जब राजकुमारी उठी तो उसने फिर से अपने शीशे में देखा उसने पहाड़ों पर देखा उसने जमीन पर देखा पर उसे कुछ दिखायी नहीं दिया। उसने आसमान की तरफ देखा तो उसको एक गरुड़ के पंख के नीचे एक नौजवान दिखायी दे गया।

गरुड़ राजकुमार को नीचे लाया और उसको जमीन पर उतार दिया। राजकुमार बहुत खुश था कि शायद राजकुमारी ने अबकी बार उसको नहीं देखा होगा। पर जब वह राजकुमारी के पास आया तो उसने फिर से उसको सब कुछ बता दिया।

अबकी बार वह बहुत उदास हो गया पर राजकुमारी बहुत आश्चर्य में थी कि वह किस तरह अपनी चालाकी से छिप जाने में होशियार था। सो उसने उसको फिर माफ कर दिया।

राजकुमार फिर बाहर गया तो जब वह खेत में से गुजर रहा था तो एक हिरन उसके पास आया और बोला — "आओ तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।" सो वह उसकी पीठ पर बैठ गया। और वह उसको पहाड़ों पर ले गया। वहाँ ले जा कर उसने उसको एक माँद में छिपा दिया।

जब राजकुमारी सुबह सवेरे उठी तो उसने फिर अपने शीशे में देखा। उसने पता लगा लिया कि वह कहाँ था सो जब वह लौट कर उसके पास आया तो उसने उसको बता दिया कि वह कहाँ था।

उसने उससे कहा — "ऐसा लगता है कि तुम्हारे बहुत दोस्त हैं। पर तुम मुझसे छिप नहीं सकते। फिर भी मैं तुमको इस बार भी माफ करती हूँ।"

इस बार राजकुमार बहुत उदास हो गया। उसकी उम्मीदें जाती रही। वह बाहर जा कर एक खेत में बैठ गया। वहा बैठे बैठे उसने एक भूचाल सा महसूस किया बिजली कड़की बादल गरजे तो उसने देखा कि उसका बहुत बड़े साइज़ का दोस्त गीदड़ वहाँ प्रगट हुआ।

उसने कहा — "डरो नहीं मेरे दोस्त।"

गीदड़ और भी चालाकियाँ जानता था। उसने जमीन खुरचनी शुरू की। वह उसे खोदता गया खोदता गया खोदता गया जहाँ तक कि राजकुमारी का महल था।

वहाँ तक खोद कर उसने राजकुमार से कहा — "तुम यहाँ ठहरो। वह आसमान पर देखेगी वह पहाड़ों पर देखेगी वह समुद्र में देखेगी फिर वह जब तुम्हें कहीं नहीं देखेगी तो गुस्से से शीशा तोड़ देगी। जब तुम शीशे के टूटने की आवाज सुनो तो तुम अपना सिर जमीन में मारना और बाहर निकल आना।" गीदड़ की यह सलाह राजकुमार को बहुत पसन्द आयी।

जब राजकुमारी सुबह सवेरे उठी तो उसने समुद्र की तरफ देखा तो वह उसको वहाँ नहीं मिला उसने पहाड़ों में देखा वह उसको वहाँ नहीं मिला। उसने धरती पर देखा तो वह उसको वहाँ भी नहीं मिला। सो गुस्से में भर कर उसने अपना शीशा तोड़ दिया।

जैसे ही राजकुमार ने शीशे के टूटने की आवाज सुनी वह जमीन में सिर मार कर बाहर निकल आया। उसने राजकुमारी को सिर झुकाया और कहा — "अब तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ।"

राजकुमारी ने वज़ीरों को बुलाया राजा को खबर भेजी और शादी की तैयारियाँ शुरू हो गयीं।

5 चालाक बूढ़ा और डैमी[30]

एक बार की बात है कि जियोर्जिया में एक बूढ़ा रहता था। वह काम तो कर सकता था पर वह बहुत ही आलसी था। उसके बच्चे खेतों में जाते थे पर यह बूढ़ा आग के पास बैठा रहता था। अगर वे उसकी इज़्ज़त नहीं करते थे तो वह उनको घर से बाहर निकाल देता था।

उसकी बहुऐं उससे लड़ती रहती थीं और उसको घर से बाहर निकाल कर छोड़ती थीं। रोज रोज के इस लड़ाई झगड़े से वह तंग आ गया था। सो एक दिन उसने अपनी सबसे बड़ी बहू से कहा कि वह उसको "एक कटोरा आटा एक पनीर का टुकड़ा और एक बड़ा सूआ[31] दे दे तो वह घर से चला जायेगा।"

उसने उसको वह सब दे दिया और वह वहॉ से चला गया।

बूढ़ा दिन रात चलता रहा और एक नदी के किनारे आया। वहॉ से उसने उस नदी के दूसरी ओर देखा तो वहॉ एक डैमी[32] को देखा तो उसने उससे चिल्ला कर कहा "मुझे नदी के उस पार ले चलो।"

---

[30] The Cunning Old Man and the Demi (Tale No 5 – Mingrelian Tales)

[31] Sooaa is a very large needle bigger than the needle which can sew a shoe, maybe to sew a sack…

[32] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

डैमी बाला — "मैं तुमको नहीं ले जाऊँगा बल्कि तुम मुझे ले जाओगे। और अगर तुम मुझे नहीं ले गये तो मैं तुम्हें मिट्टी में मिला दूँगा।"

कहते हुए डैमी ने नीचे से एक पत्थर का टुकड़ा उठाया और नदी के पथरीले किनारे पर मारा तो उसका चूरा चूरा हो गया। बूढ़े ने अपना आटे का बर्तन उठाया और उसको नदी के किनारे पर दे मारा तो उसके बर्तन में से भी बहुत धूल उठी।

डैमी यह देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा "इस आदमी ने इस पत्थर का पाउडर कैसे बना दिया।" उसने एक और पत्थर लिया और उसको अपने हाथ में भींचते हुए बोला "मैं तुमको इस पत्थर की तरह से कुचल दूँगा।"

बूढ़े ने भी अपना पनीर का टुकड़ा उठाया और उसको भींचा तो उसमें से पानी निकलना शुरू हुआ तो उसको देख कर डैमी को फिर से बड़ा आश्चर्य हुआ। वह डर गया तो वह नदी के इस पार आया और बूढ़े को नदी के उस पार ले गया।

जब वे नदी के बीच में पहुँचे तो डैमी बूढ़े से बोला — "अरे तुम कितने हलके हो।"

बूढ़ा बोला — "वह तो मैंने अपने एक हाथ से आसमान पकड़ रखा है इसलिये मैं तुमको इतना हलका लग रहा हूँ। अगर में उसे छोड़ दूँ तब तो तुम मेरा बोझा सँभाल ही नहीं सकते।"

डैमी बोला — "अच्छा तो एक पल के लिये छोड़ कर देखो तो।"

इस पर बूढ़े ने अपना सूआ निकाला और उसे डैमी की गरदन में मार दिया। डैमी चिल्लाया — "अरे अरे उसे फिर से पकड़ लो। मेरी तो गर्दन ही टूट गयी।" बूढ़े ने अपना सूआ फिर से अपनी जेब में रख लिया।

जब वे नदी के उस पार पहुँच गये तो डैमी बूढ़े से बोला — "मैं शिकार यहाँ भेजने जा रहा हूँ। तुम उनको यहाँ पकड़ लेना।"

सो डैमी तो शिकार भेजने चला गया और क्योंकि बूढ़ा जंगली जानवरों से बहुत डरता था वह जंगल में एक तरफ को छिप गया जहाँ उसको लाल छाती वाली एक छोटी सी चिड़िया मिल गयी।

जब डैमी वापस लौट कर आया तो उसने बूढ़े से पूछा "मैंने कुछ शिकार इधर भेजे थे तुमने उन शिकारों का क्या किया।"

बूढ़ा बोला "तुमने शिकार इधर ठीक से भेजे ही नहीं। वरना ऐसा कौन सा जंगली जानवर है जो मुझसे बच कर भाग जाता। देखो मैंने तो यह उड़ती चिड़िया भी उसके पंखों से पकड़ ली।"

यह सुन कर डैमी फिर शिकार करने चला गया। वहाँ जा कर उसने दो हिरन दो जंगली बकरे दो सूअर और दो बड़े खरगोश[33] मारे। कुछ को उसने उबाला और कुछ को उसने भूना।

[33] Translated for the word "Hare". Hare is rabbit-like animal but a bit bigger than that. See its picture above.

दो किलाज़[34] बाजरे का आटा बनाया और दो कोका[35] शराब लाया और बोला — "आओ खाना खाते हैं।"

बूढ़ा बोला — "इस नदी पर पहले पुल बनाओ। मैं पुल पर बैठ कर खाना खाऊँगा।" डैमी ने उसके लिये नदी के ऊपर एक पुल बना दिया और वह उस पर जा कर बैठ गया।

डैमी ने उसको एक हिरन एक जंगली बकरा एक सूअर एक बड़ा खरगोश एक किला बाजरे का आटा और एक कोका शराब दे दी और वह खुद जा कर मैदान में बैठ गया। डैमी तो अपना खाना खाता रहा पर बूढ़ा अपना खाना नदी में फेंकता रहा।

जब डैमी का कुछ पेट भर गया तो उसने अपनी आँखें ऊपर उठायीं। उसने देखा कि बूढ़े का खाना तो खत्म भी हो गया। डैमी को लगा कि बूढ़ा अपना सारा खाना खा गया और यह सोच सोच कर डर गया कि बूढ़ा तो उससे भी ज़्यादा खाना खा सकता है।

उधर जो माँस बूढ़े ने नदी में फेंका वह नदी में बह कर नीचे की तरफ चला गया। उसे नदी में नीचे की तरफ भेड़ियों ने खा लिया। जो माँस डैमी ने उसे दिया था उसे नदी में फेंक कर बूढ़े ने डैमी से एक और हिरन माँगा।

---

[34] Kila is to measure the dry things like flour. 1 Kila = about 36 or 40 pounds

[35] Coca. 1 coca = 25 bottles

डैमी ने उसे एक हिरन और ला कर दे दिया तो बूढ़े ने उसे भी नदी में फेंक दिया। डैमी को यह पता ही नहीं चला कि बूढ़े ने वह हिरन भी नदी में फेंक दिया।

बूढ़ा बोला — "इस शाम तो मैंने केवल नाश्ता ही खाया है।"

अगले दिन डैमी ने बूढ़े को अपने घर बुलाया। सो बूढ़ा उसके घर गया। बूढ़े के आने के बाद डैमी अकेला ही शिकार करने चला गया।

जंगल में उसको एक भेड़िया और एक गीदड़ मिला तो उसने उनसे कहा "आओ मेरे साथ शिकार करो। आज मेरे घर में एक मेहमान आया हुआ है जो दस हिरन और बकरे खा सकता है। कल शाम को उसने दो हिरन खाये जो उसके लिये नाश्ते जैसे थे।"

भेड़िये और गीदड़ ने डैमी से कहा — "तुम्हारे मेहमान ने वे दो हिरन खाये नहीं थे उनको तो उसने नदी में फेंक दिया था। हमने उनको निकाल लिया था और खा लिया था। बूढ़े ने कुछ नहीं खाया।"

यह सुन कर डैमी ने भेड़िये और गीदड़ से कहा तब चलो हम उस आदमी के धोखे का परदा फाश करते हैं।

तो डेमी के साथ नौ भेड़िये और गीदड़ बूढ़े के खिलाफ गवाही देने चले। जब ये सब डैमी के घर के पास पहुँचे तो बूढ़े ने घर के बाहर झाँका तो देखा कि डैमी तो सामने चला आ रहा है और नौ भेड़िये और गीदड़ उसके पीछे पीछे आ रहे हैं।

बूढ़ा चिल्ला कर डैमी से बोला — "अरे डैमी तुम्हारे ऊपर मेरे दस भेड़ियों और गीदड़ों से ज़्यादा उधार नहीं हैं इसलिये मेरे लिये ये नौ भेड़िये और गीदड़ काफी रहेंगे।"

यह सुन कर भेड़ियों और गीदड़ों ने आपस में एक दूसरे की तरफ देखा और बोले — "ऐसा लगता है कि इस डैमी ने हम लोगों को धोखा दिया है। यह अपना उधार चुकाने के लिये हमें यहाँ बात बना कर ले आया है।"

बस वे सब एक साथ डैमी के ऊपर कूद पड़े और उसे खा गये।

मिन्ग्रैलियन लोग इसी कथा को दूसरी तरह से इस तरह भी कहते हैं — "डैमी बूढ़े को अपने घर ले गया और वहाँ उसको उसकी पत्नी बच्चों के साथ छोड़ा। जब वह उसको छोड़ कर जा रहा था तो उसको रास्ते में एक गीदड़ मिला। उसने डैमी से पूछा कि वह कहाँ जा रहा है। डैमी ने कहा कि एक बूढ़े ने तो उसको करीब करीब मार ही दिया था। तो वह अब उससे छिपने के लिये जा रहा है। गीदड़ ने कहा कि वह घर आराम से वापस जाये उसको डरने की कोई जरूरत नहीं है। वह उसको उसका गला घोट कर मार देगा।

डैमी ने गीदड़ को एक मजबूत मोटी रस्सी से अपने आप से बाँध लिया और घर वापस चला। जैसे ही बूढ़े ने डैमी के साथ गीदड़ को आते देखा तो वह बोला — "अरे गीदड़ यह तो तुमने बहुत अच्छा किया। तुमको मुझे नौ डैमीज़ देने थे। आठ डैमीज़ तो तुम मुझे दे ही चुके हो। और अब यह नौवाँ डैमी है।" यह सुन कर डैमी तो भौंचक्का रह गया। वह गीदड़ को अपने साथ खींचता हुआ वहाँ से भाग लिया। इससे **20** पेड़ गिर गये और वह फिर वहाँ कभी नहीं देखा गया। बूढ़ा डैमी के घर में सारी ज़िन्दगी आराम से रहा।[36]

---

[36] See also "Ek Takatvar Aadmi Aur Ek Bauna", Gurian Tales, Tale No 1 .
Sir John Malcolm's "Sketches of Persia", Ch xvi. _ Gul and Amin story
"The Story of Ameen Beg of Ispahan" and "The Goat and the Lion" in the Panchtantra.

6 सनर्शिया[37]

एक बार की बात है कि जियोर्जिया में एक राजा था जो बूढ़ा हो चला था पर उसके कोई बेटा नहीं था। जब वह काफी बूढ़ा हो गया तो उसकी पत्नी के एक बेटा हुआ। उसका नाम उन्होंने रखा सनर्शिया। सनर्शिया का मतलब होता है "जिसकी बहुत दिनों से इच्छा हो"।

धीरे धीरे वह बड़ा हुआ। बड़े होने पर वह बहुत सुन्दर और बहुत होशियार हो गया। वह दुनियॉ के लोगों के बीच क्या होता रहता था वह अब सब समझता था पर वह अपनी मॉ का कहना नहीं मानता था। इसलिये उसकी मॉ उससे बहुत नफरत करती थी।

एक दिन उसने अपने पति राजा से कहा — "क्योंकि यह लड़का किसी बात में भी अपनी मॉ का कहना नहीं मानता तो इसको ले जा कर गहरे समुद्र में छोड़ दो।"

राजा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ पर उसने वैसा ही किया जैसा कि उसकी पत्नी ने कहा। राजकुमार ने भॉप लिया कि उसके माता पिता उसके बारे में क्या बातें कर रहे थे। पर उसने कोई उनके किसी काम में कोई रुकावट नहीं डाली।

इसके बाद उसके पिता ने कहा — "चलो शहर घूम कर आते हैं।"

---

[37] Sanartia (Tale No 6 – Mingrelian Tales)

राजकुमार बोला — "पिता जी मुझे कुछ पैसे दीजिये।"

राजा ने उसको कुछ पैसे दे दिये और वे दोनों शहर देखने चल दिये। जब वे शहर आये तो राजकुमार ने कुल्हाड़ी चाकू सुई धागा आदि कुछ जरूरत का सामान खरीद लिया।

जब वे घर वापस लौट रहे थे तो वे समुद्र के पास से गुजरे। राजकुमार ने ओक का एक पेड़ उखाड़ा और अपने कन्धे पर लाद कर चल दिया।

राजा ने सबसे पहले समुद्र देखा। जब वे किनारे पर आये तो राजा ने अपने बेटे से कहा — "आओ देखो मैं तुम्हें दिखाता हूँ देखो यह कितनी बड़ी मछली है।" जब उसका बेटा मछली देखने आया तो उसने उसको उस लट्ठे के साथ साथ पानी में धकेल दिया जो वह अपने कन्धे पर ले कर चल रहा था।

एक मछली ने राजकुमार को निगल लिया और पिता राजा अपने घर चला गया।

समुद्र में मछली के पेट में राजकुमार ने आग जलायी मछली का एक हिस्सा काट कर उसे भूना और खाया। मछली के पेट में मछली के इस हिस्से पर राजकुमार तीस साल तक ज़िन्दा रहा। उसके बाद उसकी आग जलाने की लकड़ियाँ आदि सब खत्म हो गयीं तो आखीर में उसने एक बहुत बड़ी आग जलायी।

इससे मछली को गर्मी महसूस हुई और वह उछल कर किनारे पर जा पड़ी। राजकुमार बोला — "मैं मछली का पेट फाड़ दूँगा

और फिर देखता हूँ कि वह पानी में है या नहीं। अगर यह पानी में होगी तो मैं इसको फिर से सिल दूँगा।

और अगर यह जमीन पर होगी तो फिर मैं इसको काट कर इसमें से बाहर निकल जाऊँगा सो उसने मछली के पेट में एक छोटा सा छेद काटा जिससे उसको लगा कि मछली सूखी जमीन पर पड़ी हुई थी।

फिर उसने उस छेद को बड़ा कर लिया और मछली के पेट से बाहर निकल आया। उसके बाद उसने एक बड़ी आग जलायी मछली में से उसका माँस काटा उस पर भूना और खाया।

उसी समय उधर से एक राजकुमार एक लड़की से शादी करने जाने के लिये गुजर रहा था तो उसने दूसरा राजकुमार मछली में से निकलता देखा।

तो जो राजकुमार शादी करने जा रहा था उसने अपना एक आदमी दूसरे राजकुमार के पास भेजा कि वह उसका रास्ता छोड़ दे ताकि वह उस सड़क पर से गुजर सके क्योंकि वह सड़क पर बैठा हुआ था और उसके घुड़सवारों के जाने के लिये और दूसरी कोई सड़क नहीं थी। पर सनर्शिया तो वहाँ से हिला भी नहीं।

इस पर राजकुमार खुद सनर्शिया के पास गया और उससे पूछा "तुम कौन हो?"

सनर्शिया ने उसको अपने पिता राजा का नाम बताया तो राजकुमार ने उसको शादी में बुलाते हुए कहा "मैं शादी करने जा

रहा हूँ आओ मेरे साथ।" सनर्शिया राजी हो गया और वे दोनों राजकुमारी के राज्य की ओर चल दिये।

जब वे राजकुमारी के राज्य के पास आये तो उन्होंने देश के मालिक राजा के पास एक आदमी इस सन्देश के साथ भेजा कि वह अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दें। राजा राजी तो हो गया पर इस शर्त के साथ कि अगर राजकुमार ये दो काम कर लें तो मैं उनकी इच्छा पूरी कर दूँगा। ये दोनों काम मुश्किल भी हैं और खतरनाक भी।

राजकुमारी लैड[38] का एक बड़ा टुकड़ा इतनी दूर फेंकेगी जितनी की एक बन्दूक गोली फेंकती है। तो उससे शादी करने वाले की इच्छा रखने वाले को उस लैड के टुकड़े को वापस राजकुमारी के पास फेंकना चाहिये जहाँ वह खड़ी हुई है।

राजकुमारी का हाथ माँगने की इच्छा रखने वाले राजकुमार ने कहा "मैं यह करूँगा।" कह कर वह वहाँ खड़ा हो गया जहाँ राजकुमारी ने उसको खड़े होने का इशारा किया।

इसके बाद राजकुमारी ने लैड का टुकड़ा उधर की तरफ फेंका जहाँ राजकुमार खड़ा था। पर राजकुमार उसको वापस तो फेंक ही नहीं सका बल्कि वह तो उसको उठा भी नहीं सका। तभी सनर्शिया ने लैड का वह टुकड़ा उठाया और अपने राजकुमार के लिये उसे उससे भी ज़्यादा दूर फेंक दिया जितना उसको राजकुमारी ने फेंका

[38] Lead is a kind of metal

था। सो यह एक काम तो हो चुका था अब राजकुमार को दूसरा काम करना था।

राजकुमारी के पिता राजा ने सनर्शिया को गलती से राजकुमारी का उम्मीदवार राजकुमार मान कर उसे एक जंगल में भेज दिया जहाँ एक महल खड़ा था जिसमें ओचोकोची[39] रहता था।

उन्होंने महल का दरवाजा खोला और सनर्शिया को यह कहते हुए उसके अन्दर घुसा दिया "यह ओचोकोची इस नौजवान को मार देगा।"

सनर्शिया रात भर महल में रहा। जब वह सोने की तैयारी कर रहा था तो ओचोकोची उसके पास आया और उसको मारना चाहा पर सनर्शिया बहुत ताकतवर था। उसने ओचोकोची को पकड़ लिया और जमीन पर पटक कर खूब मारा। जब वह उसे खूब मार चुका तो उससे कहा "जा कर अब तुम चौकीदार की जगह खड़े हो जाओ।"

सो वह बेचारा सुबह तक महल के फाटक पर चौकीदारी करता रहा।

सुबह को राजकुमारी के पिता राजा ने अपने वज़ीर को उस किले में यह पता करने के लिये भेजा कि जाओ और यह देख कर आओ कि राजकुमार और ओचोकोची क्या कर रहे हैं।

---

[39] Ocho-Kochi, literally, "the goat-man" occupies an important place in Mingrelian mythology. He is a satyr, a wildman of the woods, represented as an old man with a long beard, his body covered with hair.

जब वज़ीर महल के फाटक पर आया तो ओचोकोची अन्दर से बोला "मालिक सो रहे हैं। उनको जगाना नहीं नहीं तो वह मुझे बहुत पीटेंगे।"

वजीर ने ओचोकोची को तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह राजा के पास वापस चला गया और उसने उसको वही कह दिया जो उसने महल में सुना था।

राजा तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। उसे विश्वास नहीं आया तो वह खुद ही महल की ओर चल पड़ा। वहॉ जा कर उसने ओचोकोची से कहा "दरवाजा खोलो।"

ओचोकोची ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने वजीर को दिया था — "मालिक सो रहे हैं। उनको जगाना नहीं नहीं तो वह मुझे बहुत पीटेंगे।"

उसी समय सनर्शिया जाग गया और उसने ओचोकोची से कहा "उनके लिये दरवाजा खोल दो।"

ओचोकोची ने तुरन्त ही दरवाजा खोल दिया और राजा को अन्दर आने दिया। तब सनर्शिया और राजा दोनों एक साथ घर गये। राजा ने अपनी बेटी की शादी सनर्शिया के साथ करनी चाही पर सनर्शिया छिप कर वहॉ से चला गया।

उसने अपने साथी राजकुमार को अपने कपड़े पहना दिये और अपनी जगह उसको राजा के पास भेज दिया। जैसे ही वह राजा के

पास पहुँचा राजा ने उसकी शादी राजकुमारी से कर दी। बाद में सनर्शिया उससे उसके दोस्त की हैसियत से मिलने गया।

अगर उनको यह पता चल जाता कि वे दोनों काम सनर्शिया ने किये हैं तो वे राजकुमारी की शादी को दूसरे राजकुमार से कभी नहीं करते पर दरबार की एक दासी को किसी तरह यह भेद पता चल गया कि ये दोनों काम सनर्शिया ने किये हैं राजकुमारी के उम्मीदवार पति ने कुछ नहीं किया।

एक शाम दासी ने राजकुमारी से कहा कि किस तरीके से सनर्शिया ने उसको धोखा दिया है और उसकी शादी किसी और से करा दी। यह सुन कर राजकुमारी बहुत गुस्सा हुई।

उसी रात को जब सनर्शिया सो रहा था उसने उसकी एक टॉग घुटनों से नीचे तक काट दी। सनर्शिया इस घाव से तुरन्त ही नहीं मरा। वह किसी दूसरे देश चला गया। वहॉ जा कर वह एक एक हाथ वाले आदमी का दोस्त बन गया और उसी के घर में जा कर रहने लगा।

उसके बाद उन दोनों ने अपने लिये एक मकान बना लिया और दोनों उस मकान में जा कर रहने लगे। वहॉ जा कर सनर्शिया ने एक लड़की को अपनी नर्स[40] की तरह से रख लिया। एक दिन

[40] Translated for the word "Dzidze", which means not only a nurse but any woman, married or single, who has been adopted into relationship by the ceremony of a man taking her breast between his teeth. This creates a degree of kinship inferior only to that between mother and son. This custom still exists in Mingrelia. One may call her "Aayaa" or "Dhaaya" in Hindi.

दोनों दोस्त शिकार के लिये गये और रात को जंगल में ही रह गये। घर पर नर्स अकेली ही थी।

इस बीच एक डैमी[41] वहॉ आया और उसके साथ बुरा व्यवहार कर के चला गया। सनर्शिया और उसका दोस्त जब जंगल से वापस आये तो नर्स ने उनको वह सब बताया जो उनके पीछे उसके साथ हुआ था।

सनर्शिया ने अपने दोस्त और नर्स को घर पर ही छोड़ा और कहा — "अगर अबकी बार डैमी आये तो जब तक हम आयें उसको बिठा कर रखना।"

उनके पीछे डैमी फिर आया पर वह आदमी उसको पकड़ने से डर रहा था सो वह वापस चला गया। जैसे ही सनर्शिया घर वापस आया तो उसने अपने दोस्त और नर्स से पूछा — "तुम लोगों ने क्या किया?"

वे बोले — "डैमी आया था पर हम उसको पकड़ नहीं सके और वह चला गया।" अगले दिन सनर्शिया घर में रुका और अपने दोस्त को शिकार के लिये जंगल भेजा।

डैमी उस रात भी आया पर जैसे ही वह अन्दर आया सनर्शिया ने उसे पकड़ कर जमीन पर दे मारा। फिर उसने लड़की से एक

[41] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

रस्सी मँगवायी जिससे उसने उसको बाँध दिया। फिर उसने अपना खंजर निकाला और उसके टुकड़े टुकड़े करने ही वाला था कि डैमी ने उससे प्रार्थना की — "मुझे मत मारो। मैं तुम्हारी कटी हुई टाँग ठीक कर दूँगा।"

सनर्शिया ने उसकी प्रार्थना सुन ली और कहा — "अगर तुम मेरी कटी हुई टाँग ठीक कर दोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा नहीं तो मैं तुम्हें मार दूँगा।"

डैमी ने अपना वायदा रखा। वह उसको एक बड़ी सी नदी के पास ले गया और कहा कि वह अपना पैर उस पानी में रखे तो उसकी टाँग ठीक हो जायेगी।

पर सनर्शिया को डैमी पर अभी भी विश्वास नहीं था सो उसने उससे एक सूखी डंडी लाने के लिये कहा। जब डैमी सूखी डंडी ले आया तब सनर्शिया ने उससे उसे पानी में डुबोने के लिये कहा कि "अगर यह डंडी इस पानी में डूब कर हरी हो जायेगी तब मैं समझूँगा कि मेरी टाँग भी ठीक हो जायेगी नहीं तो नहीं।"

डैमी ने वह डंडी पानी डाली पर वह हरी नहीं हुई सूखी ही रही। सनर्शिया यह देख कर बहुत गुस्सा हुआ और डैमी को मारना चाहता ही था कि डैमी ने फिर से उससे प्रार्थना की "अभी एक और नदी है जिसमें तुम्हारी टाँग ठीक हो सकती है।"

सो वह उसको एक दूसरी नदी के पास ले गया। वहाँ जा कर सनर्शिया ने जैसे ही अपनी टाँग उस नदी में डाली उसकी कटी हुई टाँग ठीक हो गयी वह उसकी दूसरी टाँग की तरह से ही हो गयी।

इसके बाद उसने डैमी को नहीं मारा। उसने डैमी से अपने दोस्त का हाथ भी ठीक करवा दिया। फिर उसने अपने दोस्त की शादी अपनी नर्स से कर दी। उसने उन दोनों को वहीं छोड़ा और अपने पिता के घर चल दिया।

जब वह घर पहुँचा तो किसी ने उसे पहचाना नहीं। अगले दिन वह छिप कर अपने पिता के घोड़े पर चढ़ा और उस जगह गया जहाँ उसने राजकुमार की शादी राजकुमारी से करायी थी।

रास्ते में उसको एक सूअरों की देखभाल करने वाला मिला। जब वह उसके पास तक पहुँचा तो उसने देखा कि वह तो उसका दोस्त राजकुमार था।

जब उसने राजकुमार से पूछा कि यह वह क्या कर रहा था तो राजकुमार ने जवाब दिया — "जैसे ही तुम गये तो उन लोगों ने मुझे सूअरों की देखभाल करने वाला बना दिया।"

यह सुनते ही सनर्शिया ने अपनी तलवार निकाल ली और उसको देते हुए कहा — "तुम तीन सूअरों को छोड़ कर सारे सूअरों को मार दो। उन तीनों को घायल कर दो ओर फिर उनको घर ले जाओ। मैं उन सबको सजा देने के लिये वहीं आता हूँ जो तुमसे नाराज हैं।"

सूअर की देखभाल करने वाले ने वैसा ही किया जैसा कि सनर्शिया ने उससे करने के लिये कहा था। शाम को वह तीन घायल सूअरों को ले कर महल के कम्पाउंड में घुसा।

सनर्शिया शाम से ही महल में आया हुआ था पर उन्होंने उसे पहचाना नहीं।

जब सूअरों की देखभाल करने वाला महल में आया तो उसकी पत्नी उसको यह कहते हुए मारने ही वाली थी कि "तुमने इतने सारे सूअर कहाँ खो दिये?" कि उसी पल सनर्शिया राजकुमारी के सामने आ गया और उससे कहा कि वह उससे बहुत गुस्सा है।

उसने उससे कहा — "अगर तुम एक अच्छी स्त्री होती तो तुम अपने पति को इस तरह से सूअरों की देखभाल करने वाला नहीं बनातीं।"

अब वे तुरन्त ही जान गये कि वह सनर्शिया है। उसको वहाँ देख कर वे बहुत आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने कहा — "अरे इसकी तो टाँग काट दी गयी थी फिर इसकी टाँग वापस कैसे आयी।"

सनर्शिया ने उनको राजकुमारी के पति को लाने का हुक्म दिया। उसने राजकुमारी से उसको अपने हाथ से नहलाने के लिये कहा कपड़े लाने के लिये कहा और उसको राजकुमारों जैसा तैयार करने के लिये कहा। राजकुमारी ने वैसा ही किया।

जब सनर्शिया घर वापस जाने लगा तो उसने राजकुमारी और उसके माता पिता को बुलाया और उनसे कहा — "अगर आप लोगों

ने राजकुमार को उस तरह से आदर नहीं दिया जैसा कि उसको मिलना चाहिये तो मैं तुरन्त ही यहाँ आ जाऊँगा और फिर आप सबके साथ भी वैसा ही व्यवहार करूँगा जैसा आपने अपने दामाद के साथ किया था।"

इतना कह कर वह अपने घर चला गया।

7 गड़रिया जज[42]

एक बार की बात है कि जियोर्जिया में एक राजा था जिसके पास प्रजा में न्याय करने के लिये चार वज़ीर थे। एक बार इन जजों ने एक बहुत ही ध्यान देने लायक बात कही।

उस समय राजा के पास एक ऐसा गड़रिया आया जिसके बोलने के ढंग ने राजा को बहुत खुश कर दिया सो उसने अपने वजीरों से कहा कि वे उस गड़रिये को अपनी वह बात बोल कर सुनायें जो उन्होंने उससे कही थी।

जब गड़रिये ने वजीरों की बात सुनी तो वह उसको बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। उसने उसको सुना और उसका सारा मज़मून ही बदल दिया। राजा ने जब यह देखा तो उसने गड़रिये से कहा — "क्योंकि तुम न्याय करने में होशियार हो इसलिये तुम जज बन जाओ।"

गड़रिये ने मना करते हुए कहा — "जब तक मेरे पास ऑखें हैं तब तक मैं न्याय नहीं कर सकता। हॉ जब आप मेरी ऑखें निकलवा देंगे तब मैं न्याय कर सकता हूॅ।"

पहले तो राजा और दूसरे लोग इस बात पर राजी नहीं हुए पर आखिर गड़रिये ने उनको अपनी ऑखें निकलवाने पर राजी कर ही लिया। उन्होंने उसके लिये एक बहुत ही बढ़िया घर बनवाया उन्होंने

[42] The Shepherd Judge (Tale No 7 – Mingrelian Tales)

उसको लिखने वाले दिये। उसका दफ्तर जैसा उसको चाहिये था सजा कर दिया और उस गड़रिये को सुप्रीम जज बना दिया। अब उसने न्याय करना शुरू कर दिया।

वह इतना अच्छा न्याय करता था कि उसके पास न्याय के लिये सभी तरह के लोग आते थे – छोटा बड़ा, मालिक नौकर, बूढ़ा जवान, धार्मिक साधारण, दोस्त दुश्मन।

अगर एक शब्द में कहें तो जिसका भी जिस किसी के प्रति भी कोई भी मुकदमा होता था वह वहीं आता था। हर एक उसकी तारीफ करता और उसके न्याय की तारीफ करता।

एक बार एक आदमी और एक स्त्री अपना झगड़ा ले कर वहाँ आये। आदमी ने कहा — "मैं एक खच्चर पर चढ़ इस स्त्री के घर गया। मेरे खच्चर के साथ एक बछड़ा भी था। जब मैंने खच्चर को बाँध दिया तो बछड़े ने उसका दूध पीना शुरू कर दिया।

स्त्री ने जब यह देखा तो वह बाहर भागी आयी उसने बछड़े को पकड़ लिया और मुझे डाँटने लगी कि वह बछड़ा उसका था और यह मेरे खच्चर के साथ कैसे आया। मैंने इसको समझाने की बहुत कोशिश की पर कोई फायदा नहीं हुआ।

उसने बछड़े को खींचने की बहुत कोशिश की पर वह उसको मैंने करने नहीं दिया। मैं उसको अपनी चीज़ क्यों देता। हम लोगों में लड़ाई हो गयी। और अब हम आपके सामने हैं। भगवान के लिये हमारा न्याय कीजिये।"

इस तरह से तो उसने जज के सामने कहा पर पीछे से उसने जज को एक बड़ी रिश्वत भेजी और यह सन्देश भेजा कि "यह पैसा लो और इस स्त्री के सामने मुझे शर्मिन्दा नहीं करना।"

पर जज न्याय के साथ नहीं खेला। उसने आदमी से कहा — "अगर न्याय मुझे यह करने की इजाज़त नहीं देता तो मैं इस स्त्री से बछड़ा जबरदस्ती कैसे ले सकता हूँ।"

जज ने स्त्री से पूछा — "तुम्हारा क्या कहना है।"

स्त्री बोली — "माई लौर्ड यह आदमी मेरे घर तक एक खच्चर पर सवार हो कर आया। मेरे पास एक बछड़े और उसकी माँ गाय के अलावा और कुछ नहीं था जिनको मैं बहुत प्यार करती थी।

मेरा यह बछड़ा इसके खच्चर के पास गया, उसने उसको सहलाया और उसका मुँह पकड़ लिया। आदमी को यह देख कर शायद ऐसा लगा जैसे वह उसका दूध पीने जा रहा हो। सो उसने यह सोचा कि "मैं यकीनन इसका बछड़ा अपने खच्चर के साथ ले जाऊँगा।" और इसको घर ले जाने भी लगा पर मैं यह नहीं होने दे सकती थी।

अब आप ही न्याय कीजिये। मैं भी न्याय के लिये आप ही के पास आयी हूँ। मुझे आपके ऊपर पूरा विश्वास है कि आप मेरे साथ अन्याय नहीं करेंगे।"

जब जज ने दोनों तरफ की बातें सुन लीं तो उसने नीचे लिखा फैसला सुनाया — "पहली बात क्योंकि एक खच्चर कभी बच्चा नहीं

देता और वह कभी बच्चा कभी देगा भी नहीं। दूसरी बात वह बछड़ा तो कभी देगा ही नहीं इसलिये यह मुमकिन ही नहीं है कि भविष्य में भी उसके कभी कोई बछड़ा हो। इसलिये यह बछड़ा आदमी से ले लिया जाये और इस स्त्री को दे दिया जाये क्योंकि उसके पास गाय है जो उस बछड़े की माँ है।"

इस न्याय से सारे लोग बहुत खुश हुए। भगवान भी इस जज के प्रति बहुत दयावान थे। उस स्त्री के रूमाल के द्वारा उस जज की ऑखें वापस आ गयीं और वह देख सका।

इसके बाद से वह अपनी दोनों ऑखों से देख सका पर अपनी मौत के दिन तक वह ठीक से न्याय करता रहा। जब वह मरा तब वह स्वर्ग गया।

8 पादरी का सबसे छोटा बेटा[43]

एक बार एक पादरी था जिसके तीन बेटे थे। जब उसका मरने का समय आया तो उसने अपने बेटों से कहा — "जब मैं मर जाऊँ तो तुम तीनों एक एक रात मेरे ऊपर साल्टर पढ़ना।"[44]

दोनों बड़े बेटों ने तो ऐसा नहीं किया जैसा कि उनके पिता ने उनसे करने के लिये कहा था पर हॉ तीसरे सबसे छोटे बेटे ने वैसा ही किया।

जब सबसे पहले दिन वह साल्टर पढ़ने गया तो उस रात उसका पिता उसके सामने प्रगट हुआ और उसने उसको एक घोड़ा दिया।

अगली रात उसने फिर अपने पिता की कब्र पर साल्टर पढ़ा तो उसका पिता फिर से उसके सामने प्रगट हुआ और उसको एक और घोड़ा दिया।

अगली रात उसने फिर अपने पिता की कब्र पर साल्टर पढ़ा तो उसका पिता फिर से उसके सामने प्रगट हुआ और उसको फिर से एक और घोड़ा दिया।

उसी समय एक राजकुमारी की शादी होने वाली थी। वह एक ऐसे राजकुमार से शादी करना चाहती थी जिसका घोड़ा उसके महल की खिड़की तक कूद लगा सके ताकि उसका सवार उसको वहॉ चूम

---

[43] The Priest's Youngest Son (Tale No 8 – Mingrelian Tales)

[44] The Book of Psalms, or Psalter, is at the heart of the Bible. It containd 150 singable God-inspired songs.

सके। बहुत सारे राजकुमार यह कोशिश करने आये पर कोई भी यह काम नहीं कर सका।

तब पादरी का सबसे छोटा बेटा अपने पिता के दिये हुए घोड़े पर चढ़ा, चढ़ कर शाही महल तक गया, वहाँ पहुँच कर घोड़े को एक चाबुक मारा और उसको कुदा दिया। पर वह उसको केवल एक तिहाई दूर तक ही कुदा सका।

अगले दिन वह दूसरा घोड़ा ले कर आया तो उसको वह केवल दो तिहाई दूरी तक पहुँचा सका। तीसरे दिन वह तीसरा घोड़ा ले कर आया और उस दिन उसने उसको ऊपर तक कुदा दिया और राजकुमारी को चूम लिया।

उसके बाद राजकुमारी की शादी पादरी के सबसे छोटे बेटे से हो गयी और वह घर चला गया।

इत्तफाक की बात कि इसके बाद रानी बीमार पड़ गयी तो उसने अपने दामाद को बुला भेजा और उससे कहा — "सफेद सागर और काले सागर के बीच एक हिरनी चरती है। लोगों का कहना है कि उसका दूध मुझे फायदा करेगा। अगर तुम मुझे उसका दूध ला दो तो शायद मैं ठीक हो जाऊँ नहीं तो मैं तो मर ही जाऊँगी।"

सो वह नौजवान अपने घोड़े पर चढ़ा और उधर की तरफ चल दिया। वह दोनों समुद्रों के बीच में पहुँचा, हिरनी का दूध निकाला और ला कर अपनी सास को पीने के लिये दिया। उस दूध को पी कर वह ठीक हो गयी।

गुरियन लोक कथाऐं

1 एक ताकतवर आदमी और एक बौना[45]

एक बार एक देश में बहुत दूर देश से एक बहुत ही ताकतवर आदमी आया। वह इतना ताकतवर था कि उस देश में उसके बराबर का कोई आदमी उतना ताकतवर नहीं था। उसने राज्य भर में किसी को भी अपने साथ कुश्ती लड़ने के लिये चुनौती दी।

राजा ने अपने राज्य के सारे लोगों को इकट्ठा किया पर आश्चर्य उस ताकतवर आदमी का सामना करने लिये बहुत समय तक कोई नहीं आया। काफी समय बाद अजीब सा दिखायी देने वाला एक बौना राजा के सामने आ कर खड़ा हो गया और उसने कहा कि वह उस ताकतवर आदमी के साथ कुश्ती लड़ेगा।

उस ताकतवर आदमी ने झुक कर उस बौने की तरफ देखा और लापरवाही से यह सोचते हुए अपना सिर घुमा लिया कि उसके मुकाबले में एक बौने को वहाँ खड़ा कर के शायद उसको बेवकूफ बनाया जा रहा है।

पर बौने ने कुश्ती शुरू करने से पहले उससे उसकी ताकत का सबूत दिखाने के लिये कहा। हालाँकि उस ताकतवर आदमी को यह अपना एक बहुत बड़ा अपमान लगा पर फिर भी उसने एक पत्थर उठाया और उसको अपनी मुट्ठी में भींच कर उसकी नमी उसमें से निचोड़ दी।

---

[45] The Strong Man and the Dwarf (Tale No 1 – Gurian Tales)

बौने ने गुस्से में भर कर एक पानी से भरा स्पंज का टुकड़ा लिया जो देखने में वैसा ही लगता था जैसा कि उस ताकतवर आदमी के हाथ में रखा पत्थर का टुकड़ा लगता था और उसको अपनी मुट्ठी में भींच कर उसमें से काफी पानी निचोड़ दिया।

ताकतवर आदमी ने एक और पत्थर लिया और उसे जमीन पर इतनी ज़ोर से दे मारा कि उसका चूरा हो गया।

बौने ने एक पत्थर उठाया उसे जमीन में दबाया और बड़े साइज़ के आदमी के आश्चर्य बनाये रखते हुए उसके ऊपर एक मुट्ठी आटा डाल दिया।

बड़े साइज़ के आदमी ने हाथ बढ़ाते हुए बौने से कहा — "मुझे तो आशा ही नहीं थी कि एक छोटे से आदमी में इतनी ताकत हो सकती है। मैं तुम्हारे साथ कुश्ती नहीं लड़ूँगा मैं तुम्हारी तरफ दोस्ती और भाईचारे का हाथ बढ़ाता हूँ।"

दोनों ने एक दूसरे से हाथ मिलाया। इसके बाद बड़े साइज़ के आदमी ने बौने को अपने घर बुलाया मगर पहले उसने बौने से पूछा "तुमने मेरा हाथ एक भाई की तरह से क्यों नहीं दबाया।"

बौने ने जवाब दिया कि वह अपने हाथ के दबाव को कम कर ही नहीं सकता था और उसके हाथ के भयानक दबाव से तो कई लोग मर गये थे।

इसके बाद दोनों नये भाई साथ साथ ताकतवर आदमी के घर की तरफ चल दिये। जब वे ताकतवर आदमी के घर जा रहे थे तो रास्ते में एक नदी पड़ी जिसको उन दोनों को पार करना था।

बौने ने इस डर से कि वह उस नदी के बहाव में बह जायेगा ताकतवर आदमी से कहा कि उसके पेट में दर्द हो रहा है इसलिये वह ठंडे पानी में नहीं जाना चाहता। उसके ऊपर बड़ी मेहरबानी होगी अगर वह उसको अपने कन्धे पर उठा कर ले चले।

ताकतवर आदमी राजी हो गया और उसको अपने कन्धे पर उठा कर ले चला। जब वह बीच धार में पहुँचा तो अचानक रुक गया और बोला — "मैंने सुना है कि ताकतवर लोग भारी होते हैं पर तुम तो मुझे कुछ भारी नहीं लग रहे। भगवान के लिये ऐसा कैसे हुआ यह तो बताओ।"

बौना बोला — "अब क्योंकि हम दोस्त बन चुके हैं इसलिये अब तो मेरा यह अधिकार बिल्कुल नहीं बनता कि मैं तुम्हारे ऊपर अपना पूरा बोझ डालूँ। वह तो मैंने अपना एक हाथ आसमान से लगा कर अपने बोझ को बॉट लिया है वरना तुम मुझको उठा ही नहीं सकते थे।"

पर ताकतवर आदमी ने बौने की ताकत को जॉचने के लिये उससे उसका एक हाथ एक पल के लिये आसमान से हटा लेने के लिये कहा तो बौने ने अपनी जेब से दो कीलें निकालीं और उनको ताकतवर आदमी के कन्धों में चुभो दीं। मजबूत आदमी उस दर्द को

सह न सका और बौने को उसका बोझ तुरन्त ही अपने शरीर पर से हटाने के लिये कहा यानी कि उसने उससे कहा कि वह अपना एक हाथ आसमान के नीचे लगा ले। बौने ने वैसा ही किया।

जब वे नदी के दूसरे किनारे पर आ गये तो दोनों नये दोस्त ताकतवर आदमी के घर आये। बौने को जल्दी खाना खिलाने की वजह से ताकतवर आदमी ने सोचा कि वे लोग मिल बॉट कर काम कर लें।

सो ताकतवर आदमी ने बौने से कहा कि वह ओवन[46] में रखी डबल रोटी बाहर निकाल ले और वह खुद नीचे जा कर तहखाने में से शराब निकाल लाता है।

बौने ने देखा कि ओवन में रखी डबल रोटी तो बहुत बड़ी है जिसको वह कभी भी नहीं उठा सकता था सो उसने नीचे तहखाने में से शराब लाने का फैसला किया।

पर जब वह तहखाने में नीचे उतरा तो उसने देखा कि वह तो शराब की एक बोतल का ढक्कन भी नहीं उठा सकता था। उसने सोचा कि अब तक तो ताकतवर आदमी ओवन में से डबल रोटी निकाल चुका होगा यह सोच कर वह वहीं से चिल्लाया "क्या मैं शराब के सारी बोतलें ऊपर ले आऊँ?"

---

[46] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special purpose ovens used in pottery and metalworking respectively.

यह सुन कर तो ताकतवर आदमी परेशान हो गया कि कहीं ऐसा न हो कि यह बौना उसकी शराब का सारे साल का भंडार ही खराब कर दे। वह वहाँ से शराब की सारी बोतलें जहाँ वे जमीन में गड़ी रखी थीं उखाड़ कर ऊपर ले आये। सो वह दौड़ा दौड़ा नीचे गया। उधर बौना भागा भागा ऊपर आया।

बौना तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि डबल रोटी तो अभी तक ओवन में ही पड़ी थी। अब उसको तो उसे बाहर निकालना ही था। किसी तरह से उसने उसे खींच कर बाहर निकाला तो वह गर्म गर्म रोटी तो उसके ऊपर आ कर पड़ गयी। वह उसके नीचे से निकल नहीं सका और गर्म रोटी के नीचे भुन गया।

तभी ताकतवर आदमी वहाँ आया और उसने जब उसे इस हाल में देखा तो उससे पूछा "यह क्या हुआ?"

बौना बोला — "तुम्हें याद है न मैंने तुमसे सुबह कहा था कि मेरे पेट में दर्द है। उसी दर्द को ठीक करने के लिये मैंने यह डबल रोटी पुल्टिस की तरह से रख ली।"

ताकतवर आदमी उसके और पास आ कर बोला — "अरे बेचारे तुम। अच्छा अब यह बताओ कि इस पुल्टिस लगाने के बाद अब तुम्हें कैसा लग रहा है।"

बौना बोला — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है अब मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ। अब तुम यह रोटी मेरे ऊपर से हटा सकते हो।"

मजबूत आदमी ने रोटी बौने के ऊपर से हटा ली और फिर दोनों खाना खाने बैठे। दोनों खाना खा ही रहे थे कि मजबूत आदमी को इतने ज़ोर से छींक आयी कि बौना उछल कर छत पर चिपक गया और वह फिर से नीचे न गिर पड़े उसने छत का शहतीर कस कर पकड़ लिया।

ताकतवर आदमी ने आश्चर्य से ऊपर देखा और बोला — "इसका क्या मतलब है?"

बौने ने गुस्से में भर कर जवाब दिया — "अगर तुम यह खराब काम फिर से करोगे तो मैं यह शहतीर यहाँ से खींच कर तुम्हारे सिर पर मार दूँगा।"

ताकतवर आदमी ने उससे बहुत बार माफी माँगी और वायदा किया कि वह अब आगे से खाने के समय कभी नहीं छींकेगा। उसके बाद वह एक सीढ़ी ले कर आया और बौने को ऊपर से नीचे उतारा...

2 टिड्डा और चींटा[47]

एक बार की बात है कि एक टिड्डे और एक चींटे की दोस्ती हो गयी। उस दोस्ती में उन्होंने आपस में वायदा किया कि वे हमेशा एक साथ रहेंगे कभी अलग नहीं होंगे।

एक बार वे लोग एक सफर पर निकले। उस समय वे यह एक पुरानी और मशहूर कहावत भूल गये कि गाड़ीवान यानी गाड़ी चलाने वाला और गाड़ी के पीछे खड़े होने वाला कभी एक दूसरे के साथी नहीं हो सकते।

पर इस सचाई का सबूत तो उनको अपने सफर के पहले दिन ही मिल गया। क्योंकि चलते चलते उनके रास्ते में एक नदी पड़ी जिसको उन दोनों को पार करना था। तो टिड्डा तो उसके उस पार कूद गया और चींटी बेचारी नदी के बहाव में बह गयी।

टिड्डे ने एक पल के लिये सोचा कि वह अपने डूबते हुए साथी को कैसे बचा सकता था। फिर वह चिल्लाया — "तुम तब तक किसी चीज़ को पकड़ कर रखो मैं अभी तुम्हारे लिये सहायता ले कर आता हूँ।"

असल में यह शानदार विचार तो उसको सूअर के कान में लगे एक कॉटे को देख कर आया ताकि वह चींटा उसको पकड़ सके और वह फिर उसको पानी के बाहर खींच सके।

---

[47] The Grasshopper and the Ant (Tale No 2 – Gurian Tales)

सूअर बोला — "टिड्डे भाई तुमको वह कहावत तो पता है न कि हाथ को हाथ ही धोता है। मैंने तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। तो क्या मैं अपना कॉटा किसी को ऐसे ही निकालने दूँगा। तुम मुझे ओक के फल[48] खिलाओ तब तुम मेरे जितने चाहो उतने कॉटे ले सकते हो।"

टिड्डा भागा भागा ओक के पेड़ के पास गया और बोला — "ओक ओक मुझे अपने कुछ फल दो। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक कॉटा देगा और उस कॉटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।

ओक बोला — "ये चोर जे चिड़ियें मुझे ज़रा सा भी आराम नहीं लेने देतीं। मेरे फल तोड़ती ही रहती हैं। पहले यहाँ से इनको भगाओ।"

टिड्डा भागा भागा जे चिड़ियों के पास गया और उनसे बोला — "ओ जे चिड़ियों भागो यहाँ से। फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक कॉटा देगा और उस कॉटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

जे चिड़ियाँ बोलीं — "ये काइट चिड़ियें हमारा पीछा करती हैं। तुम पहले उनको हमारा पीछा करने से रोको।"

[48] Translated for the word "Acorn" – see its picture above

टिड्डा भागा भागा काइट चिड़ियों के पास गया और बोला — "ओ काइट चिड़ियों तुम जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ो। तुम जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ दोगी तो जे चिड़ियें ओक के फल चुराना छोड़ देंगीं।

इससे ओक अपने कुछ फल मुझे दे देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

काइट चिड़ियें बोलीं — "हमें भूख लगी है। हमें खाने के लिये चूज़े ला कर दो।"

टिड्डा बेचारा भागा भागा मुर्गी के पास गया और बोला — "मुर्गी मुर्गी मुझे अपने बच्चे दो। ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

मुर्गी बोली — "पहले मुझे बाजरा खिलाओ।"

टिड्डा भागा भागा अनाजघर के पास गया और उससे कहा — "अनाजघर मुझे थोड़ा सा बाजरा दो। यह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी। ये बच्चे ले जा कर मैं काइट

चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

अनाजघर बोला — "मेरे मालिक तो चूहे हैं। वे मुझे चारों तरफ से खाते रहते हैं। पहले तुम उनको भगाओ।"

टिड्डा भागा भागा चूहों के पास गया और बोला — "चूहों चूहों तुम अनाजघर में से बाजरा खाना छोड़ो। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा।

वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। बाजरा ले कर मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी। ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। तब काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। फिर जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

चूहे बोले — "हम क्या करें। ये बिल्लियाँ हमें चैन से नहीं रहने देतीं। पहले तुम उनको भगाओ।"

सो बेचारा टिड्डा बिल्लियों के पास गया और बोला — "ओ बिल्लियों तुम चूहों का पीछा करना छोड़ो तब चूहे अनाजघर

छोड़ेंगे। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा। वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी।

ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

बिल्लियाँ बोलीं — "तुम हमको पहले दूध पिलाओ।"

सो टिड्डा भागा भागा गाय के पास गया और बोला — "गाय गाय मुझे दूध दे दूध दे। यह दूध ले जा कर में बिल्लियों को दूँगा। तब बिल्लियाँ चूहों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब चूहे अनाजघर से बाजरा चुराना छोड़ेंगे। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा। वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा। मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी।

ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा। काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल सूअर को जा कर दूँगा। सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

गाय बोली — "पहले मुझे घास खिलाओ।"

सो टिड्डा बेचारा जमीन के पास दौड़ा गया — "जमीन जमीन मुझे थोड़ी सी घास दे दो। यह घास ले जा कर मैं गाय को खिलाऊँगा। गाय मुझे दूध देगी।

दूध ले जा कर मैं बिल्लियों को पिलाऊँगा तो वे चूहों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब चूहे अनाजघर से बाजरा चुराना छोड़ेंगे। तब अनाजघर मुझे बाजरा देगा। वह बाजरा ले जा कर मैं मुर्गी को दूँगा तब मुर्गी मुझे अपने बच्चे देगी।

ये बच्चे ले जा कर मैं काइट चिड़ियों को दूँगा तब काइट चिड़ियें जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ेंगीं। तब जे चिड़ियाँ ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ेंगीं।

फिर ओक का पेड़ मुझे अपने कुछ फल देगा। मैं ये ओक के फल ले जा कर सूअर को दूँगा तब सूअर मुझे अपना एक काँटा देगा और उस काँटे से मैं अपने डूबते हुए दोस्त को बचाऊँगा।"

यह सुन कर जमीन बोली — "अरे तो तुम अपने दोस्त को बचाना चाहते हो। लो यह लो घास।" इतना कह कर जमीन ने टिड्डे को घास दी।

घास ले कर टिड्डा गाय के पास गया और उसको उसने घास खिलायी
गाय ने उसको दूध दिया जो उसने बिल्लियों को पिलाया
तब बिल्लियों ने चूहों का पीछा करना छोड़ा

तब चूहों ने अनाजघर से बाजरा चुराना छोड़ा
तब अनाजघर ने बाजरा दिया जो उसने मुर्गी को खिलाया
तब मुर्गी ने उसको अपने बच्चे दिये जो उसने काइट चिड़िया को दिये

तब काइट चिड़ियों ने जे चिड़ियों का पीछा करना छोड़ा
तब जे चिड़ियों ने ओक के पेड़ के फल चुराना छोड़ा
तब ओक के पेड़ ने टिड्डे को अपने फल दिये जो उसने ले जा कर सूअर को दिये

तब सूअर ने उसको अपना एक कॉटा दिया
वह कॉटा ले कर वह अपने डूबते दोस्त चींटे के पास पहुँचा

पर जब तक वह अपने दोस्त चींटे को बचाने के लिये कॉटा ले कर पहुँचा तब तक तो वह मर ही चुका था।

इस कहानी से हमें दो सीखें मिलती हैं कि सहायता तभी तक ठीक रहती है जब तक वह समय से पहुँचायी जा सके। दूसरे यह कि धरती अकेली ही है जो हमसे अपनी किसी भेंट के बदले में कुछ नहीं मॉगती बाकी सब लोग कुछ न कुछ मॉगते हैं।

3 एक किसान और एक सौदागर[49]

एक बार एक किसान ने एक चिड़िया पकड़ी और वह उसको खुशी खुशी घर ले कर आ रहा था कि अब उसकी पत्नी वह चिड़िया उसके और अपने लिये शाम के खाने में पकायेगी।

कि अचानक वह चिड़िया आदमी की आवाज में बोली — "ओ भले आदमी तुम मुझको छोड़ दो मैं तुमको तुम्हारी इस भलाई के बदले में जरूर ही कुछ दूँगी।"

किसान उसको इस तरह से बोलता सुन कर भौंचक्का रह गया फिर बोला — "पर तुम मेरे लिये क्या कर सकती हो?"

चिड़िया बोली — "तुम एक बूढ़े आदमी हो। तुम तो जल्दी ही मर जाओगे। जब तुम मर जाओगे तब मैं आसमान की सारी चिड़ियों को इकट्ठा करूँगी और तुम्हारे पीछे पीछे तुम्हारी कब्र तक जाऊँगी। जब से यह दुनियाँ बनी है तबसे आज तक ऐसी इज़्ज़त किसी राजा को भी नहीं मिली। क्या बोलते हो?"

किसान यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने चिड़िया को छोड़ दिया। जब वह घर पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी से वह बताया जो उसके साथ उस दिन हुआ था। हालाँकि पहले तो उसने अपने पति को चिड़िया को छोड़ देने पर बहुत डाँटा लेकिन बाद में वह

[49] The Countryman and the Merchant (Tale No 3 – Gurian Tales)

बहुत खुश हुई जब हर सुबह वह चिड़िया दूसरी चिड़ियों को उसके पति की तन्दुरुस्ती के बारे में जानने के लिये भेजती थी।

जल्दी ही पत्नी को एक बहुत ही अच्छा विचार आया। उसने अपने पति से कहा — "सुनो जी। हम लोग भूख से करीब करीब मर रहे हैं। हमारे पास खूब सारा खाना पाने का यह एक बहुत ही अच्छा मौका है।

तुम मरने का बहाना करो और मैं रोना शुरू करती हूँ और इस तरह सारी चिड़ियें तुम्हारे दफ़न पर आ जायेंगीं। मैं उन सबको अपने घर में बुला लूँगी और फिर मैं सब दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर लूँगी। फिर हम उन सब चिड़ियों को डंडियों से मार मार कर मार देंगे।

इस तरह से हमारे पास बहुत समय तक के लिये खाना इकट्ठा हो जायेगा।"

सो किसान ने अपने आपको एक चादर से ढका और लेट गया जबकि उसकी पत्नी बाहर चली गयी और रोने लगी।

एक हूपो चिड़िया[50] नीचे उतरी और उसने उससे किसान की तन्दुरुस्ती का हाल पूछा। पत्नी ने कहा कि वह तो मर गया तो वह तुरन्त ही वहाँ से चली गयी।

[50] A kind of bird – this bird has been mentioned in my two books – "Sheba Ki Rani Makeda" and "Raja Solomon" both published by Prabhat Prakashan in 2019. See its picture above.

एक घंटे के अन्दर अन्दर हजारों चिड़ियें फाख्ताऐं और बहुत सारी किस्म की चिड़ियें वहाँ आ गयीं। उनमें से कुछ चिड़ियें घर में आ कर बैठ गयीं कुछ अनाज घर में जा कर बैठ गयीं। कुछ उसके कम्पाउन्ड में बैठ गयीं और कुछ जिनको कहीं जगह नहीं मिली वे आसमान में ही चक्कर काटती रहीं।

उसी समय उसकी पत्नी उठी और उसने घर के सब दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द करने शुरू किये। फिर दोनों ने मिल कर उन चिड़ियों को मारना शुरू किया। केवल वही चिड़ियें बची रहीं जो घर के बाहर थीं और आसमान में उड़ रही थीं।

शाम को उनके घर एक सौदागर आया और उसने किसान से उसके घर में रात को ठहरने की जगह माँगी। जब वह घर में घुसा तो उसने देखा कि वहाँ तो बहुत सारी तरीके की बहुत सारी चिड़ियें मरी पड़ी हैं। तो उसने किसान से पूछा कि उस गरीब किसान के पास इतने तरीके की इतनी सारी चिड़ियाँ कहाँ से आयीं।

किसान बोला — "मेरे पास एक खास जाति की एक बिल्ली है जिसने मुझे कभी धोखा नहीं दिया। जब भी मुझे खाने के लिये माँस की जरूरत पड़ती है मैं उसको बता देता हूँ कि मुझे कौन सी चिड़िया कितनी चाहिये और वह जंगल जा कर ले आती है।

मुझे मालूम नहीं कि उसने क्या सोचा कि कल रात देखो वह अपने आप ही जंगल गयी और इतनी सारी चिड़ियें मार कर हमारे पास ले आयी।"

और किसान ने उसको शिकार का एक बड़ा सा ढेर उसको दिखा दिया।

अब सौदागर तो सौदागर था उसने किसान से तुरन्त ही उस बिल्ली का सौदा करना शुरू कर दिया और अन्त में उसको काफी पैसे दे कर खरीद लिया।

जब सौदागर घर पहुँचा तो वह अपने काम पर चला गया और अपनी पत्नी से कहता गया कि आज वह घर के खर्चे के लिये उसके लिये कोई पैसा छोड़ कर नहीं जा रहा क्योंकि वह तो अब तक केवल उसको हुक्म ही देती रही है। अब उसके पास बिल्ली है जो उसके लिये बहुत अच्छा शिकार ला कर देगी।

पर जब वह घर लौट कर आया तो वह तो यह देख कर भौंचक्का रह गया कि उसकी पत्नी ने कुछ नहीं खाया है क्योंकि बिल्ली तो कोई शिकार ले कर आयी नहीं है। बल्कि उसने तो घर में जो कुछ था वह भी चुरा कर खा लिया है। सो वह किसान के पास उसके बारे में पूछने के लिये गया।

किसान ने सौदागर को आते हुए देखा तो उसने एक बर्तन में बाजरा भरा और उसे आग पर लटका दिया। वह उसके पास बैठ गया बाजरे का एक दाना हथेली पर रखा और उसको धोने लगा।

सौदागर अन्दर आया और उसको देखने लगा कि वह क्या कर रहा था। किसान ने ऐसा दिखाया जैसे उसने सौदागर को देखा ही

नहीं। किसान ने बाजरे के दाने के ऊपर कुछ जादू के शब्द पढ़े और उसे आग पर रखे बर्तन में डाल दिया।

फिर उसने बाजरे के दाने को चम्मच से हिलाया और लो बाजरे का बर्तन तो बाजरे के दानों से भरा हुआ था।[51] अब सौदागर क्या करे वह किसान से बिल्ली के बारे में लड़े या फिर उससे बाजरे का जादुई बर्तन माँगे।

फिर भी उसने किसान से पूछा — "यह तुमने मेरे साथ क्या किया? तुम्हारी बिल्ली तो बेकार है। वह तो कुछ भी ले कर नहीं आती बल्कि घर में जो कुछ रखा होता है वह भी खा जाती है।"

किसान ने पूछा — "क्या आप उसको भुना हुआ मॉस खिलाते हैं? मैं आपको यह बताना तो भूल ही गया था कि आप ऐसा नहीं करियेगा।"

सौदागर बोला — "तो यह मेरी गलती है। ठीक है पर क्या तुम मुझे अपना वह बर्तन बेचना चाहोगे?"

किसान बोला — "मैंने अपनी बिल्ली तो आपको पहले ही दे दी है। अब यह बर्तन मैं आपको नहीं दे सकता क्योंकि अभी मैं इसमें एक दाने से दलिया बनाऊँगा।"

खैर वे फिर से सौदा करने में लग गये और अन्त में किसान ने काफी सारे पैसे ले कर वह बर्तन भी सौदागर को बेच दिया।

---

[51] Now the merchant did not know that the pot was already full with millet grains.

जब सौदागर उस बर्तन को ले कर घर पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी को तसल्ली दी कि अब वह बाजरे के केवल एक ही भुट्टे से जितना चाहे उतना दलिया बना सकती है। और ऐसा कह कर वह फिर अपने काम से चला गया।

जब वह अपने काम से वापस लौटा तो उसकी पत्नी ने उससे कहा कि वह बर्तन तो किसी काम का नहीं था। सो सौदागर फिर से किसान के पास चल दिया। अब किसान तो यह उम्मीद कर ही रहा था कि आज नहीं तो कल सौदागर उसके पास फिर आयेगा।

सो जब उसने सौदागर को आते देखा तो उसने दो बड़े खरगोश[52] उठाये। वे दोनों देखने में बिल्कुल एक से थे। उसने उनकी गर्दनों में दो एक से रिबन बॉध दिये।

उसने एक बड़ा खरगोश तो घर पर छोड़ा और दूसरा अपने साथ बाहर खेत पर ले गया। अपनी पत्नी से वह यह कहता गया कि अगर उसके पीछे सौदागर आये तो वह उसको खेत पर भेज दे। और एक घंटे बाद दो उबले हुए मुर्गो एक भुनी हुई टर्की दस अंडों और शराब का खाना ले कर उसके पास आये।

किसान के जाने के बाद सौदागर आया तो किसान की पत्नी ने उसको खेत में भेज दिया जहॉ उसका पति काम कर रहा था।

---

[52] Translated for the word “Hare”. Hare is like rabbit but a little bit bigger and wild too. See its picture above.

सौदागर के बुरा भला कहने के जवाब में किसान ने उससे फिर कहा — "ऐसा लगता है कि तुमने इस बर्तन के साथ भी कुछ बेवकूफों वाली गलतियाँ की हैं जैसी तुमने बिल्ली के साथ की थीं।

पर कोई बात नहीं आओ पहले खाना खालें फिर बाद में मामला सिलटाते हैं। क्योंकि मैं यह नहीं सह सकता कि तुम भूखे पेट दुख सहो।"

सुन कर सौदागर ने इधर उधर देखा तो पूछा — "इस खेत में यहाँ खाना कहाँ से आयेगा।"

किसान एक झाड़ी के पीछे गया बड़े खरगोश को खोला और उससे बोला — "ओ मेरे छोटे से खरगोश, भाग जाओ मेरी पत्नी के पास भाग जाओ और उसको अपने साथ आने के लिये कहो और साथ में दो उबले हुए मुर्गे एक भुनी हुई टर्की दस अंडे और शराब लाने के लिये भी बोलना।"

बड़ा खरगोश तुरन्त ही वहाँ से भाग गया। सौदागर के चेहरे पर जो आश्चर्य उस समय छलका वह तो बस देखने लायक था जब उसने देखा कि किसान की पत्नी वह सब सामान लिये चली आ रही है।

जब वे खाना खा चुके तो सौदागर बोला — "तुमने मुझे बिल्ली और बर्तन के बारे में धोखा दिया। मैं तुम्हें उन दोनों के लिये माफ करता हूँ। पर तुम मुझे यह बड़ा खरगोश दे दो।"

किसान ने पहले तो मना कर दिया पर फिर अन्त में उसे सौदागर को काफी सारे पैसे में बेच दिया। जब सौदागर बड़े खरगोश के साथ अपने घर जा रहा था तो रास्ते में उसको उसके कुछ दोस्त मिले तो उसने उनको अपने साथ खाना खाने के लिये कहा।

पर उसने देखा कि घर पहुँचने और फिर वहाँ जा कर पत्नी से खाना बनाने के लिये कहने पर तो खाने की तैयारी में देर हो जायेगी सो उसने तुरन्त ही बड़े खरगोश को यह कहते हुए घर भेजा कि वह अपने दोस्तों के साथ घर आ रहा है और वह उनके लिये खाना बना कर रखे।

जब वह और उसके दोस्त घर पहुँचे तो उसने देखा कि घर में तो अँधेरा है। उसकी पत्नी सोने चली गयी है। उसे उसको उठाने में भी बहुत मुश्किल हुई। पत्नी ने पति को बताया कि उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा क्योंकि यहाँ तो कोई बड़ा खरगोश नहीं आया।

अबकी बार सौदागर को बहुत गुस्सा आया। इस बार उसने किसान को इसकी कड़ी सजा देने की सोची। पर किसान समझ गया कि इस बार क्या हुआ होगा। सो उसने अपनी पत्नी के साथ मिल कर एक स्कीम बनायी।

उसने एक छोटे बछड़े की आँत ली उसे खून से भरा और उसे अपनी पत्नी के गले में बाँध दिया और उससे कहा कि वह उसे रूमाल से ढक ले।

सौदागर भुनभुनाता हुआ किसान के घर आया और बिना कुछ कहे सुने किसान के ऊपर दौड़ा। उधर किसान अपनी पत्नी के ऊपर यह इलजाम लगाते हुए दौड़ा कि इन सब बातों में उसी की गलती है। कहते हुए उसने अपने हाथ में लिया हुआ चाकू उसके गले में बॅधी हुई बछड़े की ऑत में घुसा दिया।

ऑत फट गयी उसमें से बहुत सारा खून निकल पड़ा और उसकी पत्नी नीचे गिर पड़ी और ऐसे पड़ गयी जैसे वह मर गयी हो।

यह देख कर तो सौदागर सकते में आ गया। किसान ने अपनी पत्नी को मार दिया था। सौदागर तुरन्त चिल्लाया — "ओ बेवकूफ यह तूने क्या किया। मैं अपना पैसा बहाना ज़्यादा पसन्द करता बजाय इस सीधी सादी स्त्री का खून करने के।"

किसान बोला — "यह मेरा अपना मामला है। हालॉकि अपनी पत्नी को मैंने खुद ने ही मारा है पर इससे क्या हुआ। मैं उसे अभी ज़िन्दा कर सकता हूँ।"

सौदागर बोला — मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इसको अब ज़िन्दा नहीं कर सकते। पर अगर तुम इसको फिर से ज़िन्दा कर दोगे तो मैं तुम्हारी सारी गलतियॉ माफ कर दूँगा।"

किसान अपनी पत्नी के पास पहुॅचा अपने हाथ में चाकू ले कर कुछ शब्द बुड़बुड़ाये और लो उसकी पत्नी ने तो ऑखें खोल दीं।

सौदागर के आश्चर्य का तो ठिकाना ही न रहा जब वह उठ कर खड़ी हो गयी।

बस अब सौदागर को तो वह आश्चर्यजनक चाकू चाहिये था जो मरे हुए लोगों को ज़िन्दा कर सकता। सौदागर ने वह चाकू उस किसान से यह कहते हुए खरीद लिया कि उसकी पत्नी को भी उसे कभी कभी कुछ सिखाने की जरूरत थी।

जब सौदागर चाकू ले कर घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि वह अब तक कहाँ था। उसने उससे चुप रहने के लिये और अपना काम देखने के लिये कहा। और साथ में उसने उससे यह भी कहा कि अगर वह चुप नहीं रही तो वह उसका गला काट देगा।

यह सुन कर पत्नी तो भौंचक्की रह गयी। उसको लगा कि उसके पति का दिमाग खराब हो गया है। यह देख कर पति ने अपनी पत्नी को नीचे गिरा दिया ओर उसका गला काट दिया।

यह देख कर उसके सारे पड़ोसी उसके घर आ गये ओर उसको बुरा भला कहने लगे। कुछ उसके ऊपर चिल्लाने भी लगे। सौदागर बोला — "क्या हुआ मैंने अगर अपनी पत्नी को मार दिया तो। मैं अपनी पत्नी को ज़िन्दा भी कर सकता हूँ।"

कह कर उसने वे जादुई शब्द पढ़े जो वह किसान से सीख कर आया था। जबकि उसके पड़ोसी उसको यह सब करते देखते रहे। पर यह क्या वह तो अपनी पत्नी को ज़िन्दा नहीं कर सका।

वह फिर भागा भागा किसान के पास गया उसके हाथ बाँधे और उसको जंगल की तरफ यह कहते हुए खींचता ले गया "मैं तुम्हें इतनी जल्दी नहीं मारूँगा। पहले मैं तुम्हें भूखा रखूँगा फिर तुम्हें सारे जंगल में घसीटूँगा और जब तुम इस सबसे परेशान हो जाओगे तब मैं तुम्हें समुद्र में फेंक दूँगा।"

सड़क के पास ही एक शहर था जिसका राजा तभी तभी मर गया था। वे लोग उसके दफ़न की तैयारी कर रहे थे।

सौदागर ने किसान को जंगल के एक पेड़ से बाँध दिया और वह खुद शाही दफ़न देखने के लिये शहर चल दिया। तभी एक गड़रिया अपनी भेड़ चराने के लिये उस पेड़ के पास से गुजरा जिससे किसान बँधा हुआ था।

उसको देखते ही किसान ने चिल्लाना शुरू किया "मुझे राजा नहीं बनना है मुझे राजा नहीं बनना है। नहीं नहीं नहीं मुझे राजा नहीं बनना है।"

जंगल में आदमी की आवाज सुन कर वह गड़रिया किसान के पास आया और उससे पूछा "क्या बात है भाई।"

किसान बोला — "भाई तुम्हें मालूम है न कि इस शहर का राजा मर गया है और वे लोग चाहते हैं कि मैं उसकी जगह राजा बन जाऊँ। पर मैं यह नहीं चाहता क्योंकि मैं तो पहले से ही दो बार राजा बन चुका हूँ और जानते हो राजा बनने में क्या होता है?

बहुत सारे लोग उसको देखभाल करने के लिये होते हैं। उसको बहुत सारा काम होता है कि यह सब करते करते उसका सिर घूम जाता है। मैं इस पेड़ से बँधा रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय राजा बनने के।"

गड़रिये ने एक पल सोचा और बोला — "भाई मैं तो राजा की ज़िन्दगी जीने के लिये दुनियाँ की कोई भी चीज़ देने को तैयार हूँ।"

किसान बोला — "अगर ऐसी बात है तो मैं तुम्हें अपनी जगह देने को तैयार हूँ। तुम यहाँ मेरी जगह आ कर खड़े हो जाओ। और हाँ ताकि लोग तुम्हें लोग पहचान न लें इसलिये तुम मेरे कपड़े पहन लो और फिर मैं तुम्हें इस पेड़ से बाँध दूँगा। बस कल तुम राजा बन जाओगे।"

गड़रिये ने खुशी से किसान को अपनी भेड़ें दे दीं उसके कपड़े खुद पहन लिये किसान ने उसको उसी पेड़ से बाँध दिया और उसकी भेड़ें ले कर गाता हुआ चला गया।

शाम को सौदागर जंगल में लौटा और उस पेड़ के पासा आया जिस पेड़ से वह किसान को बाँध कर गया था। उसने पेड़ से बँधे आदमी को खोला और उसको ले कर समुद्र की तरफ चल दिया।

गड़रिये ने जब देखा कि उसको तो समुद्र की तरफ ले जाया जा रहा है तो उसको लगा कि उसको तो समुद्र में फेंकने के लिये ले जाया जा रहा है। वह डर गया और चिल्लाया — "मुझे समुद्र में

मत फेंको। मुझे समुद्र में मत फेंको। मैं राजा बनने के लिये तैयार हूँ।"

सौदागर ने समझा कि उसके बुरे व्यवहार और थकान की वजह से उसके कैदी का दिमाग खराब हो गया है सो बिना कुछ और सोचे विचारे उसने उसे समुद्र में फेंक दिया और सन्तुष्ट हो कर घर वापस आ गया।

दो हफ्ते बाद सौदागर अपने काम से कहीं जा रहा था तो उसने सड़क पर अपने उसी किसान को देखा कि जिसको वह समुद्र में फेंक आया था और उसके बारे में उसने यही सोच लिया था कि वह उसमें डूब गया है।

उसने देखा कि वह तो अब भेड़ों का एक झुंड चरा रहा था।

सौदागर चिल्लाया – "अरे यह मैं क्या देख रहा हूँ। क्या तुम सुन रहे हो? क्या मैंने तुमको समुद्र में डुबो नहीं दिया था?"
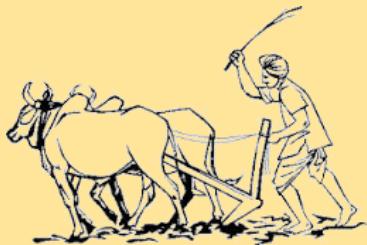
किसान बोला – "ओ मेरा भला चाहने वाले। मेरी इच्छा है कि तुम मुझे फिर से समुद्र में डुबो दो। तुम तो यह सोच ही नहीं सकते कि समुद्र की तली में नीचे कितने सारे जानवर हैं। वह तो उस समय मेरे पास कोई डंडा नहीं था इसलिये मैं जितने जानवर इस समय मेरे पास हैं मैं इनसे ज़्यादा हॉक कर ला नहीं सका वरना तो... ।"

सौदागर ने किसान से कहा – "तुमने तो मुझे पहले ही बर्बाद कर दिया। पहले बिल्ली फिर बर्तन फिर बड़ा खरगोश फिर चाकू इन सब में ही मेरे काफी पैसे लग गये। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद

जो तुम अब मुझे यह बता रहे हो। अब मैं भिखारी हूँ मेरी पत्नी भी मर गयी है।

क्या तुम्हें याद है कि मैंने तुम्हें समुद्र में कहाँ फेंका था। अगर तुम्हें याद हो तो तुम मुझे भी वहीं ले जा कर समुद्र में डुबो दो। पर पहले मैं एक डंडी ले लूँ ताकि मैं अपनी बदकिस्मती को अपनी खुशकिस्मती में बदल सकूँ।"

इस परेशान करने वाले सौदागर से पीछा छुड़ाने के लिये किसान ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ओर उसको एक लम्बे से डंडे के साथ समुद्र में डुबो दिया।

4 एक राजा और साधु[53]

एक बार की बात है कि पूर्व के एक राज्य में एक राजा राज्य करता था जिसका नाम था अली। वह बहुत ही खुशमिजाज और खुशदिल आदमी था। अली को अली की प्रजा बहुत प्यार करती थी और अली भी अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था। शाह अली उनके साथ ऐसे बर्ताव करता था जैसे वे सब उसके बच्चे हों।

वह उनके त्यौहारों को मनवाता। वह उनके लिये मुकाबलों का इन्तजाम करता। सबसे अच्छी कविता लिखने पर उनको इनाम देता। शाह को खुद को अरब के साहित्य की बहुत अच्छी जानकारी थी और वह एक बहुत ही विद्वान आदमी माना जाता था।

इसके अलावा वह बातें बहुत अच्छी करता था और एक हॅसोड़िया भी था। वह अपनी प्रजा से कई हॅसी की पहेलियॉ भी पूछता था। जो उसकी पहेलियॉ बूझ देता था उसको इनाम भी मिलता था।

एक बार शाह के नौकरों ने जनता को बताया कि शाह अली ने उस आदमी को तीन सौ सोने की मुहरें देने का वायदा किया है जो कोई उनसे कोई ऐसा सवाल पूछेगा जिसका जवाब होना चाहिये "यह तो हो ही नहीं सकता।"

[53] The King and the Sage (Tale No 4 – Gurian Tales)

शाह की इस मुनादी ने तो देश की जनता में, बूढ़े जवान बच्चे स्त्री पुरुष सबमें खलबली मचा दी। सारे ही लोग कोई ऐसा सवाल सोचने में लग गये जिसका जवाब हो "यह तो हो ही नहीं सकता।"

आखिर वह दिन भी आ पहुँचा जिस दिन यह मुकाबला होना था। शहर का चौराहा भरा हुआ था। सारे लोग उत्सुकता से मुकाबला शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे।

ठीक समय पर शाह अली वहाँ आये। उनके चारों तरफ बहुत चमकीले शानदार रक्षक उनकी सुरक्षा के लिये थे। उनके आते ही संगीत बजना शुरू हो गया। शाह अली ने आ कर उन सबका हाथ हिला कर स्वागत किया।

स्वागत के बाद शाह अली अपनी राजगद्दी पर बैठ गये जो उस मंच के सामने पड़ी हुई थी जिस पर लोगों को आ कर खड़े हो कर शाह अली से अपने सवाल पूछने थे।

शाह अली के दूतों ने वहाँ बैठे लोगों को शाह अली की चुनौती सुनायी तो एक बातूनी आदमी मंच पर चढ़ा और उसने शाह को बताया — "शाह जी एक आदमी अभी अभी शहर में आया है और वह एक बहुत ही आश्चर्यजनक खबर ले कर आया है।

आज सुबह सवेरे आपके शहर से दूर करीब 20 वर्स्ट[54] दूर चाँद आसमान से नीचे जमीन पर गिर गया है और उसने 22 गाँव जला कर राख कर दिये हैं।"

---

[54] Verst – is an old Russian unit of measurement of length, 1 Verst = .66 miles

यह सुन कर शाह अली ने कुछ पल सोचा और फिर बोले — "यह तो हो सकता है।" यह सुन कर शहर के सारे लोग हॅस पड़े और सबकी हॅसी के बीच वह आदमी बैठ गया।

इसके बाद एक दरबारी आया। यह दरबारी शाह का डाक्टर भी था। वह बोला — "जहॉपनाह। आपके हरम में आज एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात हुई। आपकी पहली और सबसे प्यारी पत्नी जुलेखा ने एक ऐसे सूअर को जन्म दिया है जिसके शरीर पर बहुत सारे कॉटे हैं।"

शाह अली ने फिर कुछ पल सोचा और बोले — "हॉ यह तो हो सकता है।" डाक्टर शर्म के मारे मंच से नीचे उतर गया और वहॉ बैठे लोग पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से हॅस पड़े।

उस डाक्टर के बाद एक ज्योतिषी आया। वह बोला — "ओ भले शाह। मैं जब सितारों की चाल देख रहा था तो मैंने आपके बारे में एक बहुत दुख की खबर नोट की।

वह यह कि बहुत जल्दी ही आपके बकरे के से सींग उग आयेंगे, तेंदुए[55] के पंजे जैसे पंजे निकल आयेंगे और आप बोल नहीं पायेंगे। आप हम लोगों के पास से जंगल भाग जायेंगे। वहॉ आप ठीक सात साल और तीन महीने तक रहेंगे।"

[55] Translated for the word "Panther".

शाह ने पहले लोगों की तरह से उसको भी यही जवाब दिया — "यह तो हो सकता है।" और वह भी हॅसती हुई जनता की हॅसी के बीच गायब हो गया।

दुनियॉ को खुश करने के लिये यह मुकाबला सारा दिन चलता रहा, फिर अगले दिन भी और फिर अगले दिन भी। अभी तक कोई ऐसा आदमी ऐसा कुछ नहीं बोला जिसका जवाब शाह अली यह दे सकें कि "यह तो नहीं हो सकता।"

फिर तीसरे दिन, आखिरी दिन, शाह के सामने अगला आदमी आया – नसरुद्दीन[56], बातचीत में एक बहुत ही चतुर आदमी। वह फटे कपड़े पहने था। वह अपने साथ दो मिट्टी के बर्तन घसीटे लिये शाह अली की तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

आ कर उसने शाह अली से कहा — "कमान्डर की जय हो आपका नाम सारे संसार में फैले। आप सौ साल राज करें। आपकी प्रजा का आपके ऊपर भरोसा और प्यार हर साल बढ़े।"

शाह अली बोले — "यह तो हो सकता है।"

"आपकी प्रजा का भरोसा आपके ऊपर बहुत ज़्यादा है यह एक सच से साबित होता है जो मैं अभी बताने जा रहा हूॅ। आप उसको बेशक सुनने की कोशिश करेंगे।"

"यह तो हो सकता है।"

[56] The Mulla Nasr-Eddin is the hero of hundreds of Eastern (Turkish) witty tales. Some of his tales were translated in French from Turkish language by Decourdemanche in 1878.

“आपके मरे हुए पिता मेरे मरे हुए पिता के बहुत अच्छे दोस्त थे। धर्मदूत उनको स्वर्ग में जगह दे।”

“यह तो मुमकिन है।”

“आगे तो सुनिये जहाँपनाह। जब आपके पिता लड़ाई पर गये थे उस समय वह इतने गरीब थे कि वह एक सेना भी इकट्ठी नहीं कर सके थे।”

“यह भी मुमकिन हो सकता है।”

“यह केवल मुमकिन ही नहीं है बल्कि सच है। और पैसे की कमी की वजह से उन्होंने ये दो मिट्टी के बर्तन भर कर मेरे पिता से सोने के सिक्के उधार लिये थे। उन्होंने शाही वचन दिया था कि उनका बेटा यानी कि आप उनका यह कर्ज चुका देंगे।”

शाह अली यह सुन कर ठहाका मार कर हँसा और बोला — “यह नहीं हो सकता। तुम्हारे पिता तो तुम्हारी तरह से गरीब साधु ही थे उन्होंने तो कभी सपने में भी ये दो बर्तन भर कर सोने के सिक्के नहीं देखे होंगे।

पर लो ये लो तुम अपने **300** सोने के सिक्के और शैतान तुमको उठा कर ले जाये। ओ गधे तुमने तो मुझे हरा ही दिया।”

5 राजा का बेटा[57]

एक बार की बात है कि एक राज्य में एक राजा राज करता था। उसके एक बेटा था जिसने उसको एक लोहार के घर पलने के लिये भेज दिया था।

लोहार की चालाक पत्नी ने उसको एक साधारण पालने में लिटा दिया और अपने बेटे को शाही पालने में रख दिया। कुछ साल बाद राजा अपने बच्चे को शाही महल ले गया। क्योंकि वह अपने बेटे को पहचान नहीं सका इसलिये वह लोहार के बच्चे को भी साथ में ले आया।

एक दिन राजा अपने प्रिय जंगल में शिकार खेलने के लिये गया और अपने नकली वाले बेटे को अपने साथ ले गया। जब वे जंगल आये तो राजा ने उससे पूछा — "मेरे बेटे यह जगह तुमको कैसी लगती है? क्या यह एक बहुत ही शानदार जंगल नहीं है?"

लड़का बोला — "पिता जी अगर हम इन सबको किसी तरह से जला दें तो हमें कितना शानदार कोयला मिलेगा।"

इसके बाद एक दिन राजा दूसरे लड़के को साथ ले गया। उसने उससे भी वही सवाल पूछा जो उसने अपने नकली वाले बेटे से पूछा था। वह बोला — "इससे अच्छा जंगल तो कोई हो ही नहीं सकता, योर मैजेस्टी।"

---

[57] The King's Son (Tale No – Gurian Tales)

"पर अगर यह तुम्हारा जंगल होता तो तुम क्या करते?"

"कुछ नहीं योर मैजेस्टी। मैं इसके पहरेदारों की गिनती दुगुनी कर दूँगा ताकि इसको कोई नुकसान न पहुँचे।"

राजा को उन दोनों के इन जवाबों से पता चला गया कि लोहार की पत्नी ने उसको धोखा दिया है। अपने बेटे को राजकुमार बना कर भेज दिया है और उसका बेटा अपने पास रख लिया है।

इस धोखाधड़ी के लिये राजा ने लोहार की पत्नी को सजा दी और उसको जेल में डलवा दिया।

6 दॉत हैं या नहीं[58]

एक बार की बात है कि शाह अली[59] अपने राज्य में एक सबसे ज़्यादा भूखे आदमी को देखना चाहते थे। वह खास तौर पर यह देखना चाहते थे कि अगर कोई ऐसे भूखे आदमी को बहुत अच्छा स्वादिष्ट खाना दे तो वह कितना खा सकता है।

सो उन्होंने अपने लोगों में यह मुनादी पिटवा दी कि वह एक खास दिन अपने महल के सामने अपने दरबारियों के साथ खुली जगह में बैठ कर खाना खायेंगे। नियत दिन और नियत समय पर मेजें लगायी गयीं। बहुत बड़ी भीड़ के सामने उन पर खाना लगाया गया।

पहला खाना खाने के बाद शाह अली एक मंच पर चढ़े और बोले — "ओ मेरी प्रजा आप लोग देख रहे हैं कि मैंने कितना अच्छा खाना खाया। मैं इसको आप लोगों में से उन लोगों से भी बॉटना चाहूॅगा जो सचमुच में बहुत भूखे हैं और जिन्होंने बहुत दिनों से कुछ खाया नहीं है। तो सचमुच में आप लोगों में से जो कोई भी ऐसा है जो बहुत भूखा है मैं उसको बुलाता हूॅ।"

भीड़ में से दो आदमी बाहर निकल कर आये। उनमें से एक आदमी **50** साल का था और दूसरा **27** साल का था। **50** साल

---

[58] Teeth or No Teeth (Tale No 6 – Gurian Tales)

[59] It seems that this is the same King Ali whose one story we have given before in this book "Raja Aur Sadhu". He was the King of Turkey.

वाले आदमी के बाल सफेद थे और वह बहुत ही कमजोर था जबकि **27** साल वाला आदमी नौजवान था और अच्छा तन्दुरुस्त आदमी लग रहा था।

शाह अली ने बूढ़े आदमी से पूछा — "तुम भूखे कैसे हो?"

बूढ़ा आदमी बोला — "मैं बूढ़ा हूँ सरकार। मेरे बच्चे मर गये हैं। गरीबी ने मुझे चीर कर रख दिया है। मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है।"

शाह अली ने तब नौजवान से पूछा — "और तुम?"

नौजवान बोला — "मुझे कोई काम ही नहीं मिला। और जैसा कि आप देख रहे हैं कि मैं एक तन्दुरुस्त आदमी हूँ इसलिये मुझसे भीख भी नहीं माँगी गयी। मुझे भीख माँगने में बहुत शर्म आयी। मैंने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है।"

यह सुन कर शाह अली ने उनको खाना खिलाने का हुक्म दिया। उसने कहा कि उनको खाना केवल एक ही प्लेट में दिया जाये और थोड़ा ही दिया जाये।
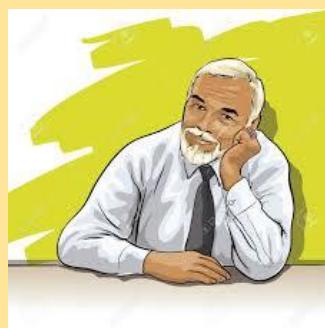
दोनों भूखे लोगों ने लालची ढंग से खाना खाना शुरू किया। खाना खाते समय वे एक दूसरे को बराबर देखते भी जा रहे थे। अचानक बूढ़ा आदमी और नौजवान दोनों खाना खाते खाते रुक गये और रोने लगे।

शाह अली को उन दोनों को इस तरह रोता देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ तो उसने पूछा — “क्या बात है तुम लोगों ने खाना खाना क्यों रोक दिया? और तुम लोग रो क्यों रहे हो?”

बूढ़े ने जवाब दिया — “मेरे दाँत नहीं हैं। और जबकि मैं अपना खाना चिंगल चिंगल कर खा रहा हूँ इस नौजवान ने सारा खाना खत्म कर लिया है।”

शाह अली ने नौजवान से पूछा — “और तुम किस लिये रो रहे हो?”

नौजवान बोला — “यह झूठ बोल रहा है योर मैजेस्टी। मैं जब माँस चबा चबा कर खा रहा होता हूँ तो इतनी देर में तो यह बहुत सारा माँस निगल कर ही खा जाता है।”

7 रानी की जिद[60]

एक बार की बात है कि एक रानी थी। वह यह चाहती थी कि उसके पास एक महल ऐसा हो जो हर तरह की चिड़ियों की हड्डियों से बना हो।

सो राजा ने हुक्म दिया कि दुनियाँ भर की चिड़ियों को पकड़ कर उसके पास लाया जाये ताकि उनकी हड्डियों से उसकी रानी के लिये महल बनाया जा सके। ऐसा ही हुआ और उनकी हड्डियों से महल बनना शुरू हो गया। हर तरीके की हड्डियाँ इकट्ठी होने लगीं। साफ की जाने लगीं। दीवारें ऊपर उठने लगीं।

पर चिड़ियें इकट्ठा करने वाले कहीं भी हैजस्पैरो[61] नहीं पा सके। और क्योंकि रानी अपने महल में हर तरह की चिड़िया की हड्डियाँ लगवाना चाहती थी सो इस चिड़िया की खोज करवायी गयी।

आखिरकार वह चिड़िया मिल गयी और राजा के सामने लायी गयी। राजा ने पूछा कि वह कहाँ थी। चिड़िया बोली — "ओ ताकतवर राजा मैं आपके राज्य में चारों तरफ आदमियों और स्त्रियों को गिनती हुई उड़ रही थी तो मैंने देखा कि आपके राज्य में स्त्रियाँ आदमियों से दोगुनी हैं।

[60] The Queen's Whim (Tale No 7 – Gurian Tales)

[61] Hedge-sparrow – a kind of bird

राजा ने चिड़िया को इस झूठ को इतनी बेशर्मी से बोलने के लिये सजा देने के लिये कहा। इस पर हैजस्पैरो बोली — "ओ राजाओं के राजा, शायद मैंने उनको उस तरह से नहीं गिना जिस तरह से आप गिनते।"

"तो तुम बताओ तुमने उनको कैसे गिना?"

"मैंने उन सब आदमियों को बुढ़ियों में गिना जो अपनी पत्नियों की जूतियों के नीचे रहते हैं।"

यह कह कर हैजस्पैरो ने राजा को इशारा किया कि वह भी उन्हीं बुढ़ियों में से एक है क्योंकि उसके पास भी तो अपना दिमाग नहीं है जो वह अपनी पत्नी की बेकार की और बेवकूफी भरी जिद का सामना कर सके।

राजा यह सुन कर बहुत शर्मिन्दा हुआ और उसने उसी पल वह महल बनवाना रोक दिया।

8 बेवकूफ की खुशकिस्मती[62]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे। जब वह आदमी बूढ़ा हो गया तो मर गया। उसके उन तीन बेटों में उसका एक बेटा तो बिल्कुल ही बेवकूफ सा था। उसका दूसरा बेटा कुछ अक्लमन्द था और तीसरा बेटे के लिये तो कहना चाहिये कि वह काफी होशियार था।

अब क्योंकि वे इतने अलग अलग थे इसलिये वे एक साथ तो रह ही नहीं सकते थे। सो पिता के सामान का बॅटवारा हुआ। अब यह भी स्वाभाविक था कि इस बॅटवारे में बेवकूफ को ठगा ही जाना था। जानवरों के मामले में तो उसको बिल्कुल ही ठग लिया गया।

जानवरों के बाड़े के तीन रास्ते थे दो रास्ते बहुत खुले खुले थे और एक रास्ता बहुत तंग। दोनों होशियार भाइयों ने सलाह दी कि वे जानवरों को तीनों रास्तों से एक साथ ही बाहर निकालेंगे। जो जानवर तंग रास्ते से बाहर जायेंगे वे उस बेवकूफ के होंगे।

इस तरह से इतने सारे जानवरों में से उस बेवकूफ के पल्ले केवल एक ही बैल पड़ा। यह बेवकूफ दिमाग का इतना कमजोर था कि उसको यह बॅटवारा ठीक लगा सो वह सन्तुष्ट हो कर अपना बैल हॉक कर वहॉ से जंगल की तरफ चल दिया।

[62] The Fool’s Good Fortune (Tale No 8 – Gurian Tales)

वहाँ ले जा कर उसने उसको एक छोटे से पेड़ से बड़ी मजबूत रस्सी से कस कर बाँध दिया और वह खुद बिना किसी मतलब के इधर उधर घूमता रहा।

तीन दिन बाद वह बेवकूफ अपने बैल को देखने गया। उस बैल बेचारे ने तीन दिन से न कुछ खाया था और न कुछ पिया था। बल्कि उसने उस पेड़ को जिससे वह बँधा हुआ था जड़ से उखाड़ दिया था। लो उस जड़ से बने गडढे में तो सोने के सिक्कों से भरा एक बर्तन खुला पड़ा था।

बेवकूफ तो उस बर्तन को देख कर बहुत खुश हो गया। कुछ देर तक तो वह उस पैसे से खेलता रहा। फिर उसने सोचा कि वह उस बर्तन को राजा के पास ले जायेगा।

ऐसा सोच कर वह उस बर्तन को ले कर राजा के पास चल दिया। जब वह राजा के पास जा रहा था रास्ते में हर आने जाने वाला उसके बर्तन में झाँकता जा रहा था और एक मुट्ठी सोने के सिक्के निकालता जा रहा था।

और ताकि वह यह न महसूस न कर सके कि उसका बर्तन खाली होता जा रहा है उन्होंने उसको कंकड़ पत्थर और लकड़ी के टुकड़ों से भर दिया।

महल पहुँच कर बेवकूफ ने राजा से मिलना चाहा। सो उसको राजा के पास ले जाया गया। राजा के सामने पहुँच कर उसने अपना बर्तन राजा के पैरों के पास पलट दिया। वह सब देख कर राजा

बहुत गुस्सा हुआ। दरबारियों ने जब राजा को गुस्से में देखा तो वे बेवकूफ को वहाँ से ले गये और उसको बहुत पीटा।

बेवकूफ को जब होश आया तो उसने पूछा कि उसको क्यों पीटा गया। पास में खड़े लोगों में से एक आदमी ने उससे मजाक में कहा — "तुमको इसलिये पीटा गया क्योंकि तुमने बेकार ही मेहनत की।"

बेवकूफ वहाँ से बुड़बुड़ाता चला गया "तुमने बेकार ही मेहनत की। तुमने बेकार ही मेहनत की।"

रास्ते में उसको एक किसान मिला जो अपनी फसल काट रहा था पर वह अपना वह वाक्य दोहराता ही चला जा रहा था। किसान उसको यह वाक्य दोहराते सुन कर बहुत गुस्सा हो गया सो उसने उसको बहुत पीटा।

बेवकूफ ने उससे भी पूछा कि उसने उसको क्यों पीटा तो किसान बोला "तुमको यह नहीं कहना चाहिये।"

"तो फिर क्या कहना चाहिये?"

किसान बोला — "तुमको कहना चाहिये कि "भगवान तुमको और अच्छी उपज दे।"

सो वह यह कहता हुआ चल दिया "भगवान तुमको और अच्छी उपज दे। भगवान तुमको और अच्छी उपज दे।"

आगे जा कर उसको एक जनाजा मिला। वहाँ भी उन लोगों ने उसको बहुत पीटा। उसने उनसे पूछा कि उन्होंने उसको क्यों पीटा।

उन्होंने कहा कि उसको ऐसा नहीं कहना चाहिये। उसने पूछा तो फिर उसे क्या कहना चाहिये। वे बोले कि उसको कहना चाहिये "भगवान आपकी आत्मा को शान्ति दे।"

अब वह बेचारा यही कहता चल दिया "भगवान आपकी आत्मा को शान्ति दे। भगवान आपकी आत्मा को शान्ति दे।"

कुछ दूर जाने के बाद उसको एक शादी मिली जहाँ उसने नये शादीशुदा जोड़े को नमस्ते की और बोला — "भगवान आपकी आत्मा को शान्ति दे।"

यह सुन कर वहाँ के लोगों ने उसे बहुत पीटा। पूछने पर कि उसको क्यों पीटा गया लोगों ने कहा कि उसको यह नहीं कहना चाहिये।

"तो फिर क्या कहना चाहिये।"

"तुमको कहना चाहिये "भगवान की कृपा से फलो फूलो और बढ़ो।"

सो वह बेवकूफ बेचारा यही कहता चल दिया। चलते चलते वह एक मौनेस्टरी[63] के पास आ निकला। वहाँ पहुँच कर उसने उनको अपने इस नये वाक्य से नमस्ते की। यह सुन कर उन साधुओं ने उसको खूब पीटा।

---

[63] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

उनके पीटने से तंग हो कर बेवकूफ ने तय किया कि वह उनके मन्दिर से उनका एक घंटा चुरा लेगा।

सो वह वहीं पास में छिप गया। जब सब साधु सोने चले गये तो उसने वहॉ से एक बीच के साइज़ का घंटा चुरा लिया और उसे ले कर जंगल दौड़ गया। जंगल में वह एक पेड़ पर चढ़ गया और वह घंटा इस पेड़ की एक शाख से बॉध दिया।

अब वह कुछ कुछ देर बाद उसे बजाता रहता कुछ तो अपने शौक के लिये और कुछ जंगली जानवरों को दूर रखने के लिये।

एक दिन उस जंगल में डाकुओं का एक झुंड अपनी कमाई बॉटने के लिये रुका। वे सब खुशी खुशी खाना खा कर ही चुके थे कि उन्होंने जंगल में घंटे की आवाज सुनी जिसे सुन कर वे सब डर गये।

उन्होंने आपस में सलाह की कि ऐसी हालत में क्या किया जाये। उनमें से कई लोग तो लड़ाई के लिये भी तैयार थे। पर उस झुंड के सबसे बड़ी उम्र के आदमी ने सलाह दी कि वहॉ किसी को भेजा जाये जो यह पता लगा कर लाये कि मामला क्या है।

सो उस झुंड में जो सबसे ज़्यादा बहादुर आदमी था उसको यह पता लगाने के लिये भेजा गया कि वह यह देख कर आये कि यह सब क्या है। बाकी बचे लोग शान्ति से बैठे रहें जब तक वह उसका राज़ पता लगा कर आता है।

वह डाकू अपने पैर के पंजों पर चलता हुआ झाड़ियों में से हो कर उस पेड़ तक आया जिस पर वह बेवकूफ बैठा हुआ था।

उसने उसको देख कर इज़्ज़त से पूछा — “आप कौन हैं। अगर आप हमारी बुराइयों की सजा देने के लिये भगवान के द्वारा भेजे गये कोई देवदूत[64] हैं तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हम लोग अब आगे से ऐसा नहीं करेंगे। और अगर आप नरक से आये हुए कोई शैतान हैं तो आइये आप हमारे साथ बॉटें।”

अब यह बेवकूफ इतना भी बेवकूफ नहीं था कि इसको यह पता नहीं चलता कि वह डाकुओं से बात कर रहा है सो उसने अपना चाकू निकाला और घंटा बजाया फिर गम्भीरता से कहा —

“अगर तुम जानना चाहते हो कि मैं कौन हूँ तो ऊपर आओ और मुझे अपनी जबान दिखाओ ताकि मैं उस पर लिख सकूँ कि मैं कौन हूँ और मैं तुमसे क्या चाहता हूँ।”

डाकू उसका कहना मान कर पेड़ पर चढ़ गया और उसने अपनी जीभ जितनी ज़्यादा हो सकती थी बाहर निकाल दी। बेवकूफ ने तुरन्त उसकी जीभ काट ली और उसको पेड़ से धक्का दे कर नीचे फेंक दिया।

दर्द से पागल और अचानक गिरने से डरा हुआ डाकू वहाँ से चिल्लाता हुआ भागा। उसके साथी उससे मिलने आये तो उसकी जो

---

[64] Translated for the word “Angel”

हालत देखी तो वे सब वहाँ से भाग गये। यहाँ तक कि वे अपनी लूट भी वहीं छोड़ गये।

अगली सुबह बेवकूफ को उनकी लायी लूट मिल गयी। वह बिना किसी से कुछ भी पूछे उस धन को ले कर अपने घर ले गया और अपने भाइयों से भी बहुत ज़्यादा अमीर हो गया।

उस पैसे से उसने तीन महल बनवाये – एक अपने लिये, एक मेरे लिये और एक तुम्हारे लिये। अब क्या था बेवकूफ के महल में तो बहुत आनन्द मनाया जा रहा था। आओ तुम लोग भी आओ आनन्द मनाने के लिये।

9 दो नुकसान[65]

एक बार की बात है कि एक विद्वान एक जहाज़ में समुद्र में यात्रा कर रहा था। कुछ ही देर में समुद्र में तूफान आने के लक्षण दिखायी देने लगे।

समुद्र में तूफान आने के समय उस विद्वान ने सुना कि जहाज़ का कैप्टेन अपनी टीम को कुछ हुक्म दे रहा था पर वह उसको समझ में नहीं आया कि वह कह क्या रहा था।

जब खतरा टल गया तब उसने कैप्टेन से पूछा कि वह किस भाषा में बोल रहा था। नाविक ने जवाब दिया — "अपनी मातृभाषा में।"

विद्वान ने इस बारे में अपना अफसोस प्रगट किया कि देखो एक आदमी ने अपनी आधी ज़िन्दगी बिता दी और वह ठीक से अपनी भाषा भी नहीं बोल पाया।

कुछ घंटों बाद तूफान फिर आया। इस बार जहाज़ में एक दरार पड़ गयी और जहाज़ में पानी भरने लगा। सो कैप्टेन विद्वान के पास गया ओर उससे पूछा कि क्या उसको तैरना आता था।

विद्वान आदमी बोला कि यह तो उसने कभी नहीं सीखा। उसको तो इसकी कभी जरूरत ही नहीं पड़ी।

---

[65] Two Losses (Tale No 9 – Gurian Tales)

कैप्टेन बोला — "मुझे बहुत अफसोस है जनाब कि तब तो आपकी सारी ज़िन्दगी ही बेकार गयी। क्योंकि कुछ ही देर में यह जहाज़ समुद्र की तली में डूब जायेगा। मैं और मेरे साथी तो तैर कर किनारे चले जायेंगे। पर आप क्या करेंगे।

आपने बहुत अच्छा किया होता अगर आपने अपनी ज़िन्दगी का कम से कम कुछ हिस्सा तैरना सीखने में लगाया होता।"

10 एक दरवेश की कहानी[66]

एक बार की बात है कि एक शिकारी ने एक पहाड़ पर एक बारहसिंगा मारा और उसकी खाल निकालनी शुरू की। खाल निकाल कर उसने एक झाड़ी पर डाल दी और खुद वह अपने खून से भरे हाथ साफ करने के लिये नीचे एक नदी की तरफ चला गया।

जब वह अपने हाथ धो कर वापस आया तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह बारहसिंगा जो उसने मारा था वह तो ज़िन्दा हो गया है और इधर उधर घास चरता घूम रहा है।

जब वह अपने आश्चर्य से कुछ सॅभला तो उसने उसका पीछा किया पर वह उसके पास तक भी नहीं पहुँच सका और वह उसकी ऑखों से ओझल हो गया।

तभी उसको एक राहगीर मिल गया। शिकारी ने उसको थोड़े में अपनी कहानी बतायी और उससे पूछा कि क्या उसने कभी कोई बिना खाल का बारहसिंगा देखा है।

राहगीर बोला — "मैंने कभी कोई बिना खाल का बारहसिंगा तो नहीं देखा पर मैं तुम्हारी कहानी पर विश्वास कर सकता हूँ। यहॉ एक इलाज करने वाली नदी[67] है जहॉ कोई भी जानवर, चाहे वह

[66] The Story of Dervish (Tale No 10 – Gurian Tales)

[67] Translated for the words "Healing Spring"

कितना ही घायल क्यों न हो या फिर मरने वाला हो वह भी उस नदी में नहाने से ठीक हो जाता है। ऐसा लगता है कि तुम्हारे बारहसिंगे ने उसी नदी में नहा लिया है और इसी लिये वह तन्दुरुस्त और ठीक हो गया है।

पर अगर तुम हमारे इस आश्चर्यजनक देश के बारे में और भी बहुत कुछ जानना चाहते हो तो दरवेश[68] को ढूँढो तो वह तुम्हें ऐसी ऐसी बातें बतायेगा कि तुम अपने बारहसिंगे को भूल जाओगे।"

शिकारी ने पूछा — "और यह दरवेश मुझे कहाँ मिलेगा?"

राहगीर बोला — "गाँव गाँव घूमो चौराहे चौराहे जाओ और जब कोई आदमी तुमको पाइप पीता मिल जाये जिसके आगे आगे एक गधा और एक गधी बँधे हुए जा रहे हों उससे पूछ लेना।"

शिकारी वहाँ से चल दिया। काफी ढूँढने के बाद उसको एक दरवेश मिला जिसने उसको यह कहानी सुनायी —

"मेरी शादी हो गयी थी और मैं अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। पर उसने मुझे धोखा दिया। वह मेरे पड़ोसी को प्यार करती थी। जब मुझे यह बात पता चली तो मैंने अपनी पत्नी से इस बारे में पूछताछ की।

पर आश्चर्य इस बात का कोई जवाब देने की बजाय उसने तो मुझे कोड़े से मारा और मुझे घर से बाहर निकाल दिया। और मैं तब

---

[68] A dervish or darvesh is someone guiding a Sufi Muslim ascetic down a path or "tariqah", known for their extreme poverty and austerity. A tiny percentage of dervishes were Jews.

तो बहुत ही डर गया जब मैं एक कुत्ते में बदल गया। शर्म के मारे मैं तो वहाँ से भाग गया।

सड़क पर आने के बाद मैं भूख और प्यास से मरता रहा। ज़िन्दगी में पहली बार मुझे यह महसूस हुआ कि बिना ताकत के किसी आदमी की क्या हालत होती है। और साथ ही मुझे यह भी मालूम पड़ा कि एक आदमी और एक जानवर में क्या फर्क होता है।

जब भी मैं बोलने के लिये मुँह खोलता तो बस मेरे मुँह से भौंकने की आवाज ही निकलती। मैं अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो कर आदमियों की तरह चलने की कोशिश करता पर इस तरह से चलने में मैं या तो आगे की तरफ गिर पड़ता और या फिर पीछे की तरफ।

फिर मैं इधर उधर कूदता और यह कूदना इतनी आसानी और जल्दी से कर लेता कि मुझे अब अपने अन्दर से कुछ नयी ताकत महसूस होने लगी। मैं यह भी सोचने लगा कि इस कुत्ते की ज़िन्दगी में भी तो अपने कुछ आनन्द हैं।

एक बार मैं बहुत खुशी खुशी कूद रहा था कि मैंने अचानक एक आदमी देखा। उसने मेरी तरफ देखा और मैंने उसकी तरफ देखा। वह आदमी मेरी तरफ देख कर मुस्कुराया और मैं उसकी तरफ भागा पर वह मुझे देख कर डर गया। उसने मुझे मारने के लिये एक डंडी उठा ली। सो हम एक दूसरे से दूर हट गये।

मैं बोलना चाहता था पर मेरे मुॅह से केवल भौंकने की ही आवाज निकल रही थी। इस पर उस आदमी ने अपनी डंडी फिर से उठा ली। डंडी देख कर मैंने कूदना शुरू कर दिया। तब वह आदमी फिर मुस्कुराया और उसने मुझे अपने पास आने दिया।

मुझे समझ में आ गया था कि आदमी और कुत्ता हमेशा से ही कितने अच्छे दोस्त हैं। मन ही मन मैंने अपनी नीच पत्नी को मुझे कुत्ता बनाने पर धन्यवाद दिया कि अच्छा हुआ उसने मुझे कोई दूसरा जानवर नहीं बनाया जैसे सूअर।

वह आदमी जिसने मुझे अपने पास बुलाया था वह एक गॉव का भला सा पादरी था फिर हम दोनों एक दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त बन गये। उसने मुझे सहलाया कुछ खाने को दिया और मैं उसके साथ चला गया।

उस दयालु पादरी को बहुत गर्मी लग रही थी सो आराम करने के लिये वह एक पेड़ के नीचे लेट गया। मैंने भी वैसा ही करना चाहा तो पादरी ने कहा — "नहीं तुम सोओ नहीं तुम मेरा पहरा दो।"

सो मैं यह सोचते हुए नहीं सोया कि अगर पादरी ने मुझे सोते देख लिया तो फिर वह मुझे रोटी नहीं देगा। और यह भी हो सकता है कि वह मुझे अपने पास से भगा भी दे। आह मेरी कुत्ते की ज़िन्दगी तो कितनी दर्दनाक थी।

शाम को रात को सोने के लिये पादरी कुछ गड़रियों के पास रुका जो अपनी भेड़ें चरा रहे थे। गड़रियों ने पादरी के रात के खाने लिये एक मेमना मारा शराब ली और खूब आनन्द किया। हालाँकि मैंने उनकी दावत में सीधे सीधे कोई हिस्सा नहीं लिया पर मैं अपने मालिक के पीछे पीछे ही रहा।

खाना खाने के बाद एक गड़रिये ने मेरी तरफ देखा और बोला — "इस कुत्ते को शराब जरूर अच्छी लगनी चाहिये क्योंकि इसने शराब के गिलास से अपनी नजर ही नहीं हटायी बल्कि अक्सर अपने होठ ही चाटता रहा।"

यह सुन कर मैंने अपना सिर हॉ में कई बार हिलाया। फिर उसने मेरी प्लेट में थोड़ी सी शराब पलटी और मैंने उसे खुशी से चाट चाट कर पी लिया।

जब वे सब सो गये तो भेड़िये आये और उन्होंने भेड़ों के ऊपर हमला बोल दिया। गड़रियों के कुत्ते भौंके तो पर उनकी भेड़ियों के ऊपर हमला करने की हिम्मत नहीं हुई। तब मैं उठा और मैंने उन पर हमला किया और उनमें से तीन भड़ियों को वहीं का वहीं मार डाला।

जब गड़रियों ने यह देखा तो उन्होंने मेरे लिये पादरी को बहुत सारे पैसे दिये और उससे मुझे खरीद लिया। बहुत जल्दी ही मैंने बहुत सारे भेड़िये मार डाले। और फिर जल्दी ही मेरी शोहरत वहॉ के राजा तक पहुँच गयी।

सो मुझे महल ले जाया गया, राजा की बीमार बेटी के पास। राजा की बेटी को रात को ब्राउनीज़[69] तंग किया करती थीं।

हर सुबह जब भी राजकुमारी उठती वह हमेशा थकी हुई और कमजोर ही उठती। मेरे पहरे की पहली रात ही मैंने उसके सोने के कमरे के बन्द दरवाजे से हंस उड़ते आते देखे। अन्दर आ कर वे राजकुमारी के ऊपर अपने पंख फड़फड़ाते रहे और चक्कर काटते रहे।

मैं क्योंकि बॅधा हुआ था सो उस बेचारी लड़की की कोई सहायता नहीं कर सका। सुबह को मुझे कुछ न करने पर डॉट पड़ी।

पर एक दरबारी ने मेरे बचाव में कहा — "यह बहुत अच्छा कुत्ता है पर इससे हमको अगर कोई काम लेना है तो हमको इसे खोल कर रखना चाहिये। उसके बाद हम देखते हैं कि यह हमारे लिये क्या कर सकता है।"

अगली रात को मैं खोल दिया गया। उस रात वे हंस फिर से वहॉ आये तो मैंने उनमें से दस हंसों को मार दिया। ग्यारहवीं हंसिनी ने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उसे छोड़ दूॅ। उसने कहा कि वह मेरी मेरी पत्नी और मेरे पड़ोसी के बारे में सहायता करेगी। मैंने हंसिनी का विश्वास कर लिया और उसे छोड़ दिया।

---

[69] Brownies

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब मैंने सुबह को देखा कि राजकुमारी बिल्कुल तन्दुरुस्त और खुश उठ रही है। राजा तो यह देख कर मुझसे बहुत ही खुश हुआ कि मैंने उसकी बेटी को ठीक कर दिया था।

इसके बदले में उसने मुझे सोने की एक भारी सी जंजीर दी और मुझे शाही तरीके से खाना खिलाने के लिये कहा।

मैं महल में शाही तरीके से रह रहा था पर मेरी अपना घर और अपनी पत्नी को देखने की इच्छा फिर से हो आयी सो जल्दी ही मैं वहाँ से भाग लिया।

जब मैं अपने घर में घुसा तो मेरी पत्नी ने मेरी सोने की जंजीर तो निकाल ली और अपने कोड़े से मार कर अबकी बार मुझे एक बतख बना दिया। मैं पास के एक खेत में उड़ गया जहाँ बाजरा बोया गया था।

अब क्येंकि मुझे चिड़िया बनने का कोई अनुभव नहीं था तो मैं वहाँ किसान के बिछाये हुए जाल में फँस गया। किसान ने मुझे पकड़ लिया और अपनी बगल में दबा कर ले चला। घर जा कर उसने मुझे शाम के खाने में पकाने के लिये अपनी पत्नी को दे दिया।

जैसे ही किसान बाहर गया उसकी पत्नी ने मेरी तरफ घूर कर देखा। फिर उसने दीवार पर से एक कोड़ा उतारा और मुझे उससे मार कर आदमी बना दिया और पूछा — "अब बोलो मैंने तुम्हारी

सहायता की या नहीं। हम 12 बहिनें थीं। तुमने हममें से दस को मार दिया। मैं 11वीं हूँ और तुम्हारी पत्नी 12वीं है।

अब तुम अपने घर चले जाओ। तुम्हारी पत्नी के बिस्तर के ऊपर एक कोड़ा टॅगा हुआ है। तुम उससे उसको मारना और अपने पड़ोसी को मारना। इस तरह से तुम उनको किसी भी जानवर में जिसमें तुम्हारी इच्छा हो बदल सकते हो।"

मैं उसको धन्यवाद दे कर वहॉ से चला आया। रात को मैं अपने घर के अन्दर देर से घुसा जब मेरी पत्नी और पड़ोसी सोये हुए थे। मैंने दोनों को कोड़े से मारा। मैंने अपनी पत्नी को गधे में बदल दिया और आदमी को गधी में। और वे दोनों ये हैं।"

शिकारी तो दरवेश की यह कहानी सुन कर बहुत डर गया वह उस जादुई पहाड़ से तुरन्त ही भाग लिया और तय किया कि अब वह वहॉ गलती से भी नहीं आयेगा।

11 एक पिता की भविष्यवाणी[70]

एक बार एक आदमी ने अपने बेटे को मारते हुए उससे कहा कि वह कभी कोई अच्छा इन्सान नहीं बन सकेगा। लड़का इन सब गालियों से तंग आ चुका था सो वह घर छोड़ कर भाग गया।

दस साल बाद वह पाशा बन गया। और उसकी नियुक्ति उसी शहर में हो गयी जिसमें उसका पिता रहता था।

जब वह अपनी नयी जगह पर अपना काम शुरू करने जा रहा था तब वह वहाँ से बीस मील पहले रुका और अपने रक्षकों से कहा — "तुम लोग फलाँ फलाँ गाँव जाओ और फलाँ फलाँ आदमी को यहाँ ले कर आओ।"

उसके रक्षक रात को गाँव में आये उन्होंने उस बीमार आदमी को उसके बिस्तर से घसीटा और उसको पाशा के पास ले गये। पाशा ने एक बड़ी सी अँगड़ाई ली और उस बूढ़े आदमी को अपने सामने लाने के लिये कहा।

सामने आने पर उसने उस बूढ़े से पूछा — "क्या आपने हमको पहचाना?"
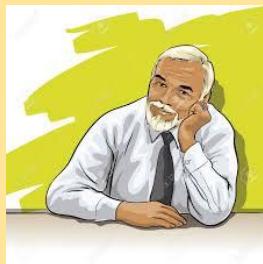
बूढ़े ने पाशा की तरफ ध्यान से देखा और चिल्लाया — "अरे पाशा तुम तो यकीनन मेरे बेटे हो।"

---

[70] The Father's Prophecy (Tale No 11 – Gurian Tales)

"क्या आपने मेरे बचपन में मुझसे यह नहीं कहा था कि मैं कभी कोई अच्छा आदमी नहीं बन सकता? अब ज़रा मेरी तरफ देखिये।" कह कर उसने अपने रक्षकों की तरफ इशारा किया।

बूढ़ा बोला — "क्या मैं गलत था? तुम आदमी नहीं हो केवल एक पाशा हो। कौन सा तुम्हारे जैसे नाम वाला आदमी इस तरीके से अपने पिता को उठवाता जिस तरीके से तुमने उठवाया है।

मैं फिर कहता हूँ कि तुम पाशा जरूर बन गये हो पर तुम एक अच्छे इन्सान नहीं बन सके।"

12 एक दार्शनिक साधु[71]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही विद्वान आदमी था। वह अकेले रहना ही पसन्द करता था इसलिये वह दूसरे लोगों से बहुत अलग रहता था। वह दुनियाँ की बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ों के बारे में सोचता रहता था।

वह अपना सारा समय खुले में ही बिताता था और वह यह काम बड़ी आसानी से कर सकता था क्योंकि वह दक्षिण की तरफ रहता था जहाँ ठंड नहीं पड़ती थी सिवाय थोड़ी सी बारिश के।

एक बार वह अपने बागीचे में घूम रहा था कि वह अखरोट के एक पुराने पेड़ के पास रुका जिस पर बहुत सारे पके हुए अखरोट लगे हुए थे।

उसको देख कर उसके मुँह से निकला — "प्रकृति में एकसेपन[72] की इतनी कमी क्यों है। उदाहरण के लिये अब यहीं देख लो। यह अखरोट का पेड़ सौ साल पुराना है। इसकी चोटी तो बादलों में छिपी हुई है पर इसका फल कितना छोटा सा है। यह खुद तो हर साल इतना बड़ा होता जाता है पर इसका फल बस इतना छोटा सा ही रहता है।

---

[71] The Hermit Philosopher (Tale No 12 – Gurian Tales)

[72] Translated for the word "Symmetry"

जबकि इसके नीचे जमीन पर ये कितने बड़े बड़े काशीफल और तरबूज कितनी पतली पतली बेलों पर उगते है। यह ज़्यादा अच्छा होता अगर ये बड़े बड़े फल अखरोट के पेड़ पर उगते और ये छोटे छोटे अखरोट नीचे बेलों पर उगते। इस प्रकृति में इतने एकसेपन की कमी क्यों है।"

साधु बहुत देर तक इस बारे में सोचता रहा और बागीचे में बहुत देर तक घूमता रहा। सोचते सोचते घूमते घूमते उसको नींद आने लगी तो वह वहीं अखरोट का एक छायादार पेड़ देख कर उसके नीचे सो गया।

कुछ देर में उसको लगा कि उसके मुँह पर कुछ गिरा। फिर कुछ दूसरा फिर तीसरा। जैसे ही उसने अपनी ऑखें खोलीं तो एक पका हुआ अखरोट उसकी नाक पर गिरा।

यह देखते ही साधु कूद कर उठ कर खड़ा हो गया। "अब मुझे प्रकृति का भेद पता चला। अगर यह काशीफल या तरबूज जैसे फल इस पेड़ पर लगते और ये मेरे ऊपर गिरते तब तो मेरा सिर ही टूट जाता।"

इसलिये किसी को भी भगवान की बनायी दुनियॉ में कोई कमी नहीं निकालनी चाहिये।

13 राजा का सलाहकार[73]

एक बार की बात है कि अरब के एक राजा के एक सलाहकार ने अपने मन में सोचा कि हालाँकि वह कई साल राजा के पास रह चुका है और बहुत कुछ जानता भी है पर फिर भी उसने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि राजा उसकी सेवाओं की क्या कीमत लगाता है। और साथ में उसकी अपनी पत्नी और दोस्त भी उसको कितना प्यार करते हैं।

सो एक दिन उसने इन सबको एक साथ जाँचने की सोची।

वह महल गया और वहाँ से वह बकरा चुरा लाया जो राजा को बहुत पसन्द था और जिसकी देखभाल उसी के जिम्मे थी। फिर वह घर गया और यह भेद उसने जा कर अपनी पत्नी से कहा। उसी के सामने उसने रसोइये को उस बकरे को पकाने का हुक्म भी दिया।

पर बाद में उसने चुपके से अपने रसोइये को उस बकरे को पकाने के लिये मना कर दिया। उसने उससे कहा कि वह शाही बकरे को कहीं छिपा दे और वह किसी और मेमने को पका दे।

रात को जब वे सब खाना खाने बैठे तो पत्नी ने पके हुए बकरे की बहुत तारीफ की।

---

[73] The King's Counselor (Tale No 13 – Gurian Tales) – a folktale from Georgia, Europe. Francesco Straparola's story of "Salardo and the Falcon" is practically the same as this. Read this story in my book "Straparola Ki Raatein-1" (Nights of Straparola)

उधर जब राजा को पता चला कि उसका प्यारा बकरा खो गया है तो वह तो बहुत गुस्सा हो गया और गुस्से में भर कर चिल्लाया — "अगर कोई आदमी मेरा खोया हुआ बकरा ढूँढ कर लायेगा मैं उसको सोने से लाद दूँगा। और अगर कोई स्त्री ढूँढ कर लायेगी तो मैं उसके साथ शादी कर लूँगा।"

सो राजा के सलाहकार की पत्नी ने सोचा कि यह तो राजा की पत्नी बनने का बड़ा अच्छा मौका है सो उसने अपने पति को धोखा दिया और जा कर राजा को सब बता दिया। यह सुन कर राजा ने अपने सलाहकार को सजा देने का और उस स्त्री से शादी करने का हुकुम दिया।

जब राजा के हुक्म का पालन होने ही वाला था तो सलाहकार के पुराने दोस्तों ने रिश्वत दे कर उसकी जान बचा ली। उसकी जगह कोई दूसरा अपराधी फाँसी पर चढ़ा दिया गया। सलाहकार को उन्होंने एक दूसरे पड़ोसी राज्य में छिपा दिया।

कुछ साल बाद राज्य में कुछ सवाल उठे जिनको कि काउन्सिल के दूसरे लोग हल नहीं कर सके। राजा को अपने पुराने सलाहकार की बहुत याद आती थी।

वह अक्सर कहा करता था कि एक बेवकूफ बकरे की वजह से मैंने अपने अपने इतने अक्लमन्द सलाहकार को खो दिया। अगर आज वह ज़िन्दा होता तो वह मेरी सारी मुश्किलें एक ही दिन में दूर कर देता।

सलाहकार के पुराने दोस्तों ने जब यह सुना तो उन्होंने राजा के सामने अपनी चालाकी को स्वीकार करने का निश्चय किया।

सो एक दिन जब राजा अपने अच्छे मूड में था वे राजा के पास गये और उन्होंने उससे कहा — "राजा साहब हमें माफ कर दीजिये। आपका पुराना सलाहकार ज़िन्दा है। हमने उसे पड़ोस के राज्य में छिपा रखा है।"

यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ और उसने अपने सलाहकार को पड़ोस के राज्य से बुलवा लिया। राजा ने उसका बहुत अच्छे से स्वागत किया और सलाहकार ने राजा को उसका बकरा वापस कर दिया।

राजा बोला — "मेरे दोस्त, इस तरह हम देखते है कि इस सबमें सबसे बड़ी सहायता तो इस झूठी गवाही ने की थी और यह झूठी गवाही पत्नी ने दी थी इसलिये हमको सबसे ज़्यादा तो अपनी पत्नियों से बचना चाहिये। वे किस लालच में कब धोखा दे जायें जानना बहुत मुश्किल है।"

14 चतुर जवाब[74]

एक बार की बात है कि एक राजा अपने एक लौर्ड[75] से बहुत नाराज हुआ तो उसने उसको जेल में डाल दिया।

यह सोचते हुए कि वह उसको वहीं रखेगा उसने उससे कहा कि वह उसको एक शर्त पर आजाद कर सकता है अगर वह दरबार में एक ऐसा घोड़ा ला सकता हो जो न तो भूरा हो न काला हो न कत्थई हो न सफेद हो न गहरा कत्थई हो न सुनहरा हो।

थोड़े में राजा ने वह सब रंग उसको गिना दिये जिनमें कोई घोड़ा मिल सकता था। जेल में पड़े लौर्ड ने भी वायदा किया कि वह एक ऐसा घोड़ा राजा को जरूर ला कर देगा अगर राजा उसको तुरन्त ही छोड़ दे तो।

राजा ने उसको छोड़ दिया। जैसे ही राजा ने उसको छोड़ा उसने राजा से कहा कि वह एक घोड़े की देखभाल करने वाला उसके पास भेज दे पर वह देखभाल करने वाला उसके पास न तो सोमवार को न मंगलवार न बुधवार न बृहस्पतिवार न शुक्रवार न शनिवार और न ही रविवार को आये।

---

[74] A Witty Answer (Tale No 14 – Gurian Tales)

[75] Lord is an appellation for a person or deity who has authority, control, or power over others acting like a master, a chief, or a ruler. The appellation can also denote certain persons who hold a title of the peerage in the United Kingdom, or are entitled to courtesy titles.

इसके अलावा वह किसी और दिन जब भी राजा को ठीक लगे आ सकता है। राजा यह सुन कर चुप रह गया। उसको उसकी माँग का ठीक जवाब मिल गया था। इस तरह उस लौर्ड ने राजा की जेल से छुटकारा पाया।

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio. 100 tales

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales. Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल विहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. 1634. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. 1894. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. 1887. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. 18 tales.
अफीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. 2001. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं —
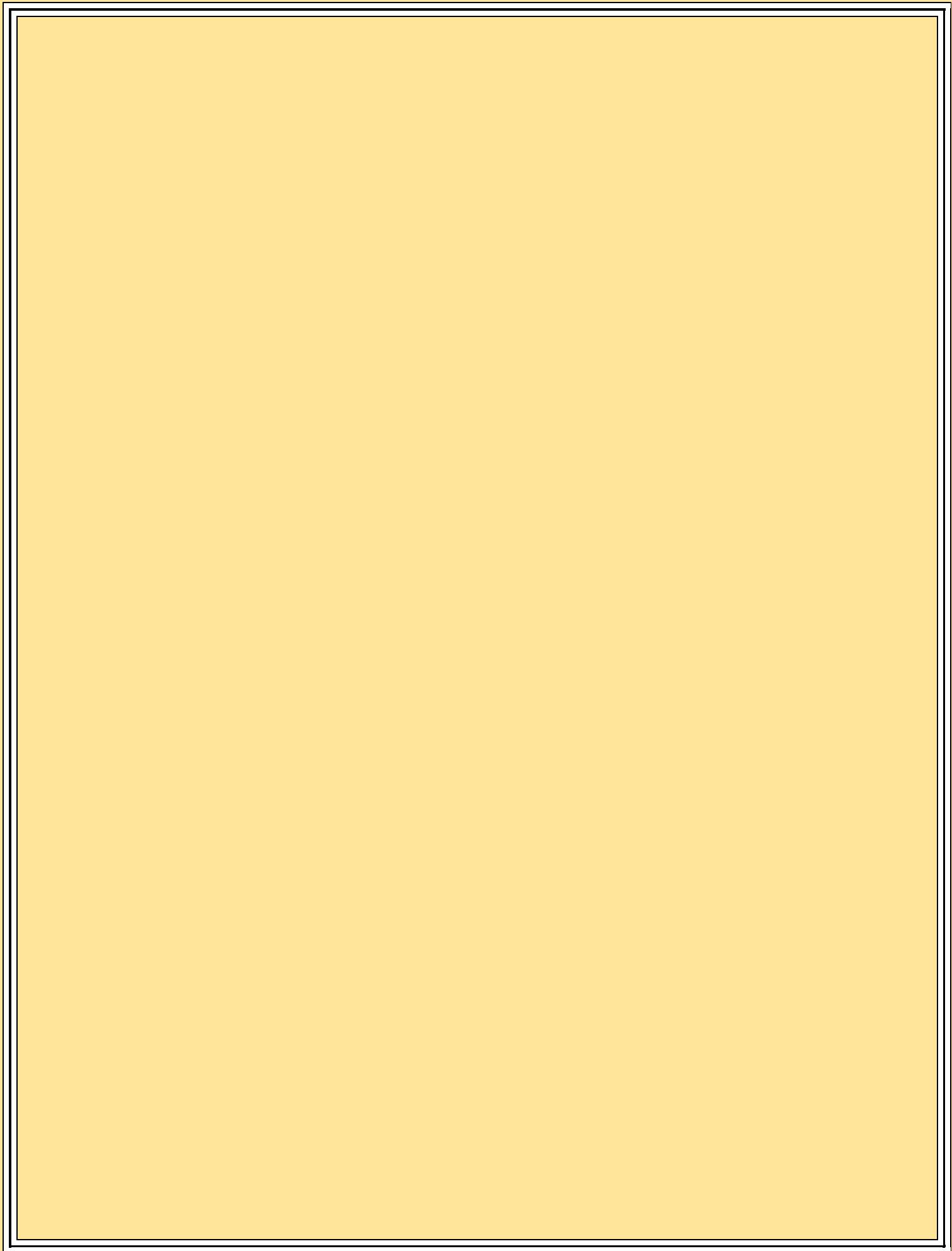
Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks
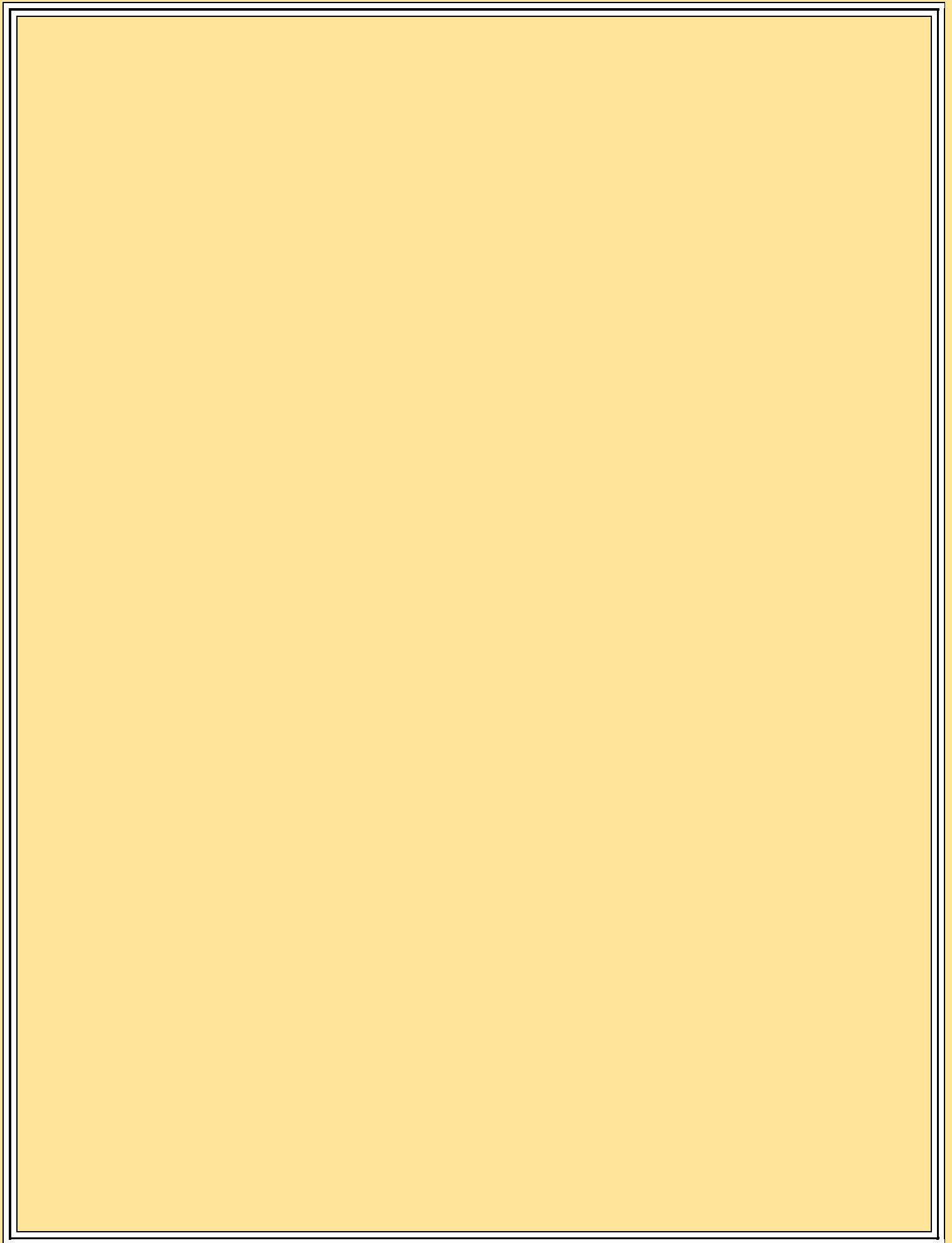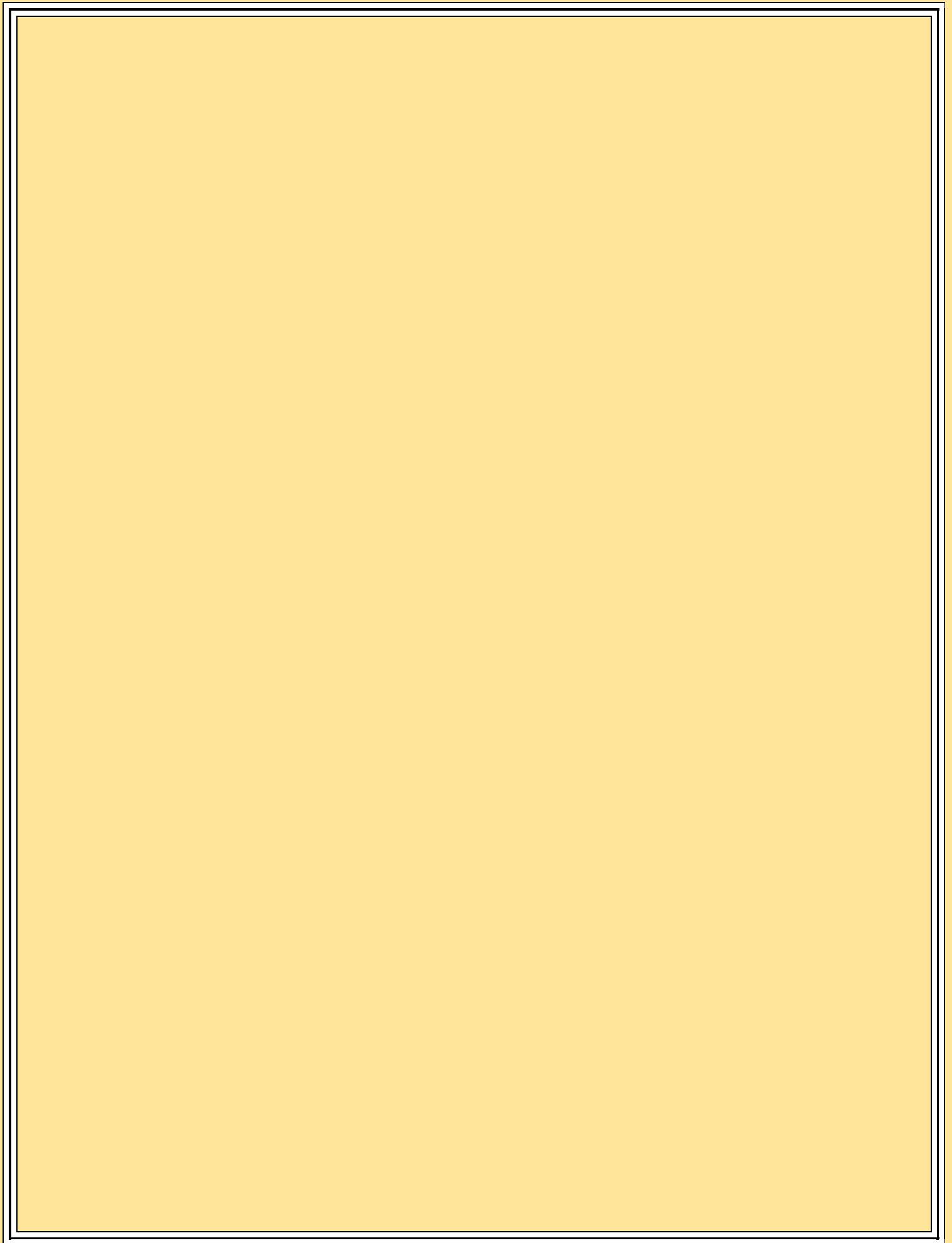
Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन गुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022